

१. अध्याय - अंत ही शुरुआत है

केंद्रपाड़ा शहर, जो कि समुद्र से लगभग 50 किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है, एक विशिष्ट पहचान रखता है। केंद्रपाड़ा जिले का परिदृश्य अपनी विपुल जैव विविधता, विस्तृत हरे-भरे मैदानों और नदियों तथा नहरों के जटिल जाल से परिपूर्ण है। यह जिला ओडिशा के मध्य तटीय मैदानों के हृदयस्थल में स्थित है, जो बंगाल की खाड़ी से अविच्छिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। इस नगरी का अवलोकन करने पर यह सहज ही प्रतीत होता है कि यह ईश्वरीय अनुकंपा का साकार रूप है। यह भूभाग ब्राह्मणी, बैतरणी और महानदी जैसी प्रमुख नदियों और उनकी सहायक धाराओं से आच्छादित है। इन नदियों के संगम से निर्मित डेल्टा क्षेत्र एक अत्यंत समृद्ध और उर्वर परिदृश्य का सृजन करता है। सर्वत्र व्याप्त हरियाली और विविध जीव-जंतु इस शहर को एक जीवंत ऊर्जा प्रदान करते हैं।

जयेश, शहर के उन गिने-चुने प्रतिष्ठित उद्योगपतियों में से एक हैं, जिनका सम्मान सर्वत्र व्याप्त है। जयेश और तमन्ना के युगल स्वरूप को देखकर जनमानस अनायास ही यह टिप्पणी करता है कि विधाता ने सचमुच एक अनुपम जोड़ी का निर्माण किया है। दो वर्षों के वैवाहिक जीवन में तमन्ना निष्ठा और समर्पण की प्रतिमूर्ति के रूप में स्थापित हुई हैं, वहीं जयेश उत्तरदायित्व और अटूट विश्वास के प्रतीक बने रहे। उनका अंतरधार्मिक प्रेम विवाह, यद्यपि इसने शहर में एक उल्लेखनीय चर्चा को जन्म दिया, वास्तव में हमारे देश की गंगा-जमुनी संस्कृति की चिरस्थायी सफलता का एक ज्वलंत उदाहरण सिद्ध हुआ। इस अटूट बंधन की आधारशिला तो उनके महाविद्यालयीन जीवन में ही रख दी गई थी, जहाँ दोनों ने साथ-साथ शिक्षा ग्रहण की थी। इस वैवाहिक रिश्ते की दृढ़ नींव का श्रेय तमन्ना की श्रीकृष्ण भगवान में अविचल श्रद्धा को जाता है। तमन्ना मीरा बाई और राधा माँ के उस निर्मल और निःस्वार्थ प्रेम से गहराई से प्रभावित थीं। श्रीकृष्ण की भक्ति में उनकी तल्लीनता इतनी गहन थी कि धर्म का कोई भी बंधन उन्हें विचलित न कर सका। उनकी भक्ति के प्रबल प्रवाह ने सभी पारंपरिक सीमाओं को ध्वस्त कर दिया। इतिहास ऐसे व्यक्तियों का साक्षी रहा है जिन्होंने इन कृत्रिम बंधनों को तोड़कर एक अनुकरणीय दृष्टांत प्रस्तुत किया। मध्यकाल में, जब भक्ति रस अपने उत्कर्ष पर था, तब इस रस की दिव्य फुहारों ने सभी के अंतःकरण को शीतलता प्रदान की थी। इसी कालखंड में एक ऐसे ही अनन्य भक्त हुए सैयद इब्राहिम, जिन्हें हम रसखान के नाम से जानते हैं। अपने प्रारंभिक जीवन में ही वे श्रीकृष्ण के अनन्य अनुयायी बन गए थे, उन्होंने विठ्ठलनाथ से भक्ति के गूढ़ मार्ग का ज्ञान प्राप्त किया और अपना शेष जीवन वृंदावन की पवित्र भूमि पर समर्पित कर दिया। रसखान ने श्रीमद् भागवत जैसे पावन ग्रंथ का फारसी भाषा में अनुवाद करके अपनी गहरी श्रद्धा का परिचय दिया था।

उनकी कालजयी पंक्तियाँ आज भी गूँजती हैं:

मानुस हौं तो वही रसखान, बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वारन। जो पसु हौं तो कहा बस मेरो,
चरौं नित नंद की धेनु मँझारन॥ पाहन हौं तो वही गिरि को, जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदीकूल कदम्ब की डारन॥

रसखान की इन भावपूर्ण पंक्तियों को श्रवण कर ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो श्रीकृष्ण की भक्ति प्राप्त करने के लिए आतुर न हो उठेगा और जिसके हृदय में ब्रज की पवित्र मिट्टी को अपने मस्तक पर धारण करने की तीव्र इच्छा जागृत न होगी? ग्यारहवीं शताब्दी के पश्चात्, इस्लाम ने भारतीय उपमहाद्वीप में तीव्र गति से अपनी जड़े जमाईं। परन्तु, भारत में इस्लाम भी श्रीकृष्ण के अलौकिक प्रभाव से अछूता न रह सका। इसी कालखंड में अमीर खुसरो का नाम प्रमुखता से उभरा। एक बार, महान सूफी संत निजामुद्दीन औलिया के स्वप्न में स्वयं श्रीकृष्ण प्रकट हुए। औलिया ने अमीर खुसरो को श्रीकृष्ण की स्तुति में कुछ पंक्तियाँ रचने का आदेश दिया, जिसके परिणामस्वरूप खुसरो ने प्रसिद्ध रंग ‘छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाइ के’ की रचना की, जिसे उन्होंने पूर्णतः श्रीकृष्ण को समर्पित कर दिया।

ऐसी ही अनगिनत दिव्य नामों की इस अविच्छिन्न श्रृंखला में आप एक और अनुपम नाम जोड़ सकते हैं – तमन्ना। जिनकी प्रत्येक श्वास श्रीकृष्ण की भक्ति के लिए ही प्रवाहित होती है। तमन्ना ने अपने सांसारिक जीवन और अपनी गहन भक्ति के मध्य एक अद्भुत सामंजस्य स्थापित किया है, और इस असाधारण सफलता का श्रेय उनके जीवनसाथी, जयेश को भी समान रूप से जाता है। यद्यपि कभी-कभी जयेश ने तमन्ना की इस अनन्य लगन पर प्रश्नचिह्न अवश्य उठाए, परन्तु तमन्ना के अटूट समर्पण के समक्ष वे स्वयं भी उनका साथ देने के लिए विवश हो गया। वर्तमान परिदृश्य में, जहाँ प्रत्येक वस्तु का मूल्यांकन धन के तराजू पर किया जाता है, निष्ठा, समर्पण और भक्ति जैसे उदात्त मूल्यों का अवमूल्यन होता जा रहा है। प्रतिदिन प्रातः तीन बजे से छह बजे तक तीन घंटे की गहन आराधना के पश्चात् दिन भर घर की सभी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन करना कोई सामान्य कार्य नहीं है। श्वेत संगमरमर से निर्मित भव्य मंदिर के केंद्र में स्थापित श्रीकृष्ण की श्याम वर्ण की मनोहारी प्रतिमा एक अद्भुत दिव्य छटा का प्रदर्शन कर रही है। धूप, दीप और कपूर की पवित्र सुगंध किसी घोर पापी के अंतःकरण को भी क्षण भर में शांत कर सकती है। प्रभु के चरणों के समीप रखे पंचामृत और माखन मिश्री के दिव्य भोग को देखकर, इस प्रसाद को प्राप्त कर अपने समस्त कष्टों के निवारण की तीव्र उत्कंठा जागृत हो उठती है। उत्कृष्ट वस्त्र, बहुमूल्य आभूषण और अनुपम श्रृंगार से सुसज्जित श्रीकृष्ण की अलौकिक मूर्ति ऐसी प्रतीत होती है कि इसकी अमिट छाप आपके हृदय और मस्तिष्क पर सदैव के लिए अंकित हो जाएगी। भगवा वस्त्र धारण किए तमन्ना के मुखमंडल पर व्याप्त प्रसन्नता और अटूट विश्वास की दीप्ति देखकर आप भावविभोर हुए बिना नहीं रह पाएंगे, परन्तु इस गहन प्रसन्नता के मध्य कभी-कभी अपने आराध्य प्रभु को न पाने के विरह का दुःख अश्रु बनकर उसकी आँखों से छलक पड़ता है। जब अंतर्मन भक्ति रस से ओतप्रोत हो, तो प्रभु का सानिध्य प्राप्त करने और उनके दिव्य दर्शन की तीव्र लालसा से मन का व्याकुल होना स्वाभाविक ही है। "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः" मंत्र का निरंतर जप आपके कानों में ऐसी दिव्य मधुरता घोल देगा कि आप अपनी सुध-बुध खोकर इसी मंत्र के आनंद में लीन हो जाएंगे। भक्ति और प्रेम के ऐसे अद्वितीय और विहंगम दृश्य का अवलोकन करने के लिए ही तो देवगण भी पृथ्वी पर अवतरित होने के लिए लालायित होते होंगे। तमन्ना अपनी कोमल हथेली पर पान का पत्ता रखकर उस पर कपूर प्रज्वलित कर होम करती हैं। उस अग्नि की भौतिक उष्णता की एक सीमा है, परन्तु वह भी

तमन्ना की असीम भक्ति भावना के समक्ष अत्यंत क्षीण प्रतीत होती है। कितने ही भाग्यशाली जन इस गहन भक्ति रस में पूर्णतः डूब पाते हैं; अधिकांश तो मात्र किनारे पर ही औपचारिक स्नान करके लौट जाते हैं।

तमन्ना ने गहरी नींद में डूबे जयेश को जोरदार झटके से जगाया। अब तो जयेश भी इस नित्यकर्म का अभ्यस्त हो चुका था, इसलिए वह बिना किसी विरोध के उठ बैठा। तमन्ना ने अपनी हथेली पर जलते कपूर की राख को जयेश के माथे पर लगाया, मानो अपने आराध्य के आशीर्वाद में उसे सम्मिलित कर रही हो, और फिर चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। "तुम कभी नहीं सुधरोगी! अपनी हथेली पर आरती का कपूर जलाने की क्या आवश्यकता है?" जयेश ने तलखी से कहा। "और मैंने कितनी बार कहा है कि जब मुझे पीड़ा नहीं होती, तो आप क्यों व्यथित होते हैं?" तमन्ना ने मंद-मंद मुस्कुराते हुए उत्तर दिया। "हमारे भाग्य में जो निश्चित है, वह हमें मिलेगा ही, फिर इतनी पूजा-पाठ की क्या ज़रूरत है?" जयेश ने हल्की हँसी के साथ कहा। "भाग्य हमारे पूर्व कर्मों का परिणाम होता है, भाग्य से हमें धन-संपदा मिल सकती है, परन्तु भक्ति से जो मन को असीम सुख और संतोष प्राप्त होता है, वह भाग्य से असंभव है। और सनातन धर्म में तो सबसे बड़ा लक्ष्य मोक्ष है, मेरी तो यही अभिलाषा है कि मैं अपने ईश्वर की भक्ति में लीन हो जाऊँ।" तमन्ना ने दृढ़ता से समझाया। "आज के युग में मोक्ष की बात कौन करता है? बस यही जीवन है, जितना जी सको जी लो।" जयेश ने गंभीर स्वर में कहा। "और यही कारण है कि संसार में उपभोक्तावाद निरंतर बढ़ रहा है। यह पृथ्वी कब तक अपने अंधाधुंध दोहन और शोषण को सहन करेगी? यदि प्रकृति को बचाना है, तो सनातन की ओर लौटना ही होगा, जहाँ प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाकर जिया जा सकता है।" तमन्ना ने भी प्रबलता से उत्तर दिया। "बहस में मैं तुमसे कभी नहीं जीत सकता।" जयेश ने मुस्कुराकर हार मान ली। "दुनियादारी में मैं आपसे परास्त हूँ। एक बात और, भक्ति में इतनी शक्ति होती है कि वह असंभव को भी संभव कर दे। उसके समक्ष इस दुनिया की चीजें तो अत्यंत तुच्छ हैं।" तमन्ना ने विश्वास से समझाया। "कभी-कभी तो मुझे लगता है, मैं तुम्हारा पहला प्यार नहीं हूँ।" जयेश ने तमन्ना को छेड़ने का प्रयास किया। "मज़ाक छोड़िये और तुरंत तैयार हो जाइये। मैं आपके लिए नाश्ता बनाती हूँ।" तमन्ना शर्म से लाल होकर कमरे से बाहर निकल गई। सफेद रंग के रेशमी कुर्ते पायजामे में जयेश का क्षीण और दुर्बल शरीर स्पष्ट दिखाई दे रहा था। उसकी लम्बाई लगभग पाँच फीट सात इंच होगी, जो कि तमन्ना के बराबर ही थी। कमजोर कद-काठी के बावजूद भी जयेश आत्मविश्वास से चलता था। उसका रंग अत्यंत श्वेत था। चेहरे पर जबड़े की रेखाएँ स्पष्ट रूप से उभरी हुई थीं; बड़ी-बड़ी आँखें ही जयेश के रूखे चेहरे का सबसे आकर्षक पहलू थीं। पाँच सौ वर्ग फीट का यह शयनकक्ष सभी आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण था। जयेश बिस्तर से उठते ही रिमोट द्वारा खिड़की के पर्दे हटाता है, जिससे सूर्य की किरणें सीधे कमरे के अंदर प्रवेश कर कमरे के हरे रंग को उज्ज्वल बना देती हैं। बिस्तर के चारों ओर मुलायम फर्श था। दीवारों पर विभिन्न प्रकार की पेंटिंग्स लगी थीं। छत और दरवाजों को बारीक नक्काशी से सजाया गया था। 120 इंच का टीवी और साथ ही शक्तिशाली म्यूजिक सिस्टम किसी का भी ध्यान आकर्षित करने की क्षमता रखते थे। जयेश उठकर सीधा वाशरूम गया। घर में कई नौकर-चाकर हैं जो खाना

बनाने और घर के अन्य कार्यों में संलग्न हैं। परन्तु जयेश को तमन्ना अपने हाथों से भोजन परोसती है। इन्हीं छोटी-छोटी बातों से तो एक मकान वास्तव में घर बनता है। तमन्ना की माँ सबा साथ रहकर अपने नाती रोहन की देखभाल करने में सहायता करती हैं।

सबा रोहन को लेकर आई, और जयेश ने पल भर भी न गंवाते हुए उसे अपनी गोद में खींच लिया। "अरे, पहले आराम से खाना तो खा लीजिए, फिर इसे खिलाते रहिएगा," तमन्ना ने हल्की झल्लाहट से कहा। "मुझे कोई एतराज़ नहीं," जयेश ने रोहन की ओर प्यार से पूड़ी और सब्ज़ी का एक टुकड़ा बढ़ाते हुए कहा, "आज की सब्ज़ी वैसे भी कमाल की बनी है। बाबू, खाएगा क्या?" "कल से ही रोहन को सर्दी-जुकाम है, और माँ इसे दवाई देने ही नहीं दे रहीं," तमन्ना ने सबा की शिकायत करते हुए कहा। सबा ने तुरंत पलटवार किया, "मैं सरसों के तेल में जायफल डालकर इसके शरीर की मालिश कर रही हूँ, कल थोड़ा सा घिसकर पिलाया भी था। दो-चार दिन में ठीक हो जाएगा। बच्चों को अंग्रेज़ी दवाइयाँ देना ठीक नहीं। मैंने भी छह बच्चे पाले हैं, पर तुमसे ज़्यादा परेशान किसी को नहीं देखा।" उनके लहजे में भी शिकायत थी। "नानी माँ के ये नुस्खे किसी दिन उल्टा पड़ गए, तब समझ आएगा!" तमन्ना ने चिढ़कर कहा। "उल्टा कैसे पड़ेंगे? यह हज़ारों साल का अनुभव है!" सबा ने भी ज़ोरदार ढंग से प्रतिवाद किया। "मैं इस झगड़े में नहीं पड़ना चाहता," जयेश यह कहते हुए हाथ धोने के लिए उठा। तभी सबा लपककर रोहन को वापस अपनी गोद में ले लेती हैं। "अरे! अरे! आप कहाँ उठ रहे हैं? दो पूड़ियाँ और खा लीजिए। कितने दुबले होते जा रहे हैं! पता नहीं किसकी बुरी नज़र लग गई है कि पिछले पाँच-छह महीनों में आपका वज़न 12 किलो कम हो गया है।" तमन्ना का गुस्सा अब सातवें आसमान पर था। "डॉक्टर की जाँच में तो कुछ नहीं निकला, इसलिए तुम चिंता मत करो। आजकल दुबले होने के लिए लोग लाखों खर्च कर रहे हैं," जयेश ने मुस्कुराते हुए तर्क दिया और हाथ-मुँह धोने बढ गया। "इस घर में कोई मेरी बात सुनता ही नहीं!" तमन्ना का क्रोध और भड़क उठा। "तुम भी तो किसी की नहीं सुनती," जयेश फुसफुसाया, इतनी दबी आवाज़ में कि शायद ही कोई सुन पाता। "क्या कहा आपने?" "कुछ भी तो नहीं," जयेश ने मासूमियत से झूठ बोला। तमन्ना कमर पर हाथ रखे वहीं अड़ी खड़ी थी; उसके होंठ गुस्से से सिकुड़ गए थे, भौंहें तनी हुई थीं, और आँखें जयेश पर गड़ी थीं। जयेश और सबा चुपचाप वहाँ से खिसक गए।

जयेश के घर में बने दफ़्तर से गूँजती तेज़ आवाज़ें बताती थीं कि मुंशी जी ने फिर कोई गड़बड़ की है। लगभग पचास वर्षीय मुंशी जी, चुपचाप खड़े थे। तभी, पूजा की थाल लिए तमन्ना ने प्रवेश किया। उसकी मुस्कान ने माहौल को कुछ हल्का किया। "आज मुंशी जी ने क्या 'कारनामा' कर दिखाया?" तमन्ना ने छेड़ते हुए पूछा। मुंशी जी ने सम्मानपूर्वक तमन्ना का अभिवादन किया, और तमन्ना ने भी उसी आत्मीयता से उनका अभिवादन स्वीकार किया। "मुंशी जी की याददाश्त अब कमज़ोर पड़ती जा रही है," जयेश ने झुंझलाहट में अपनी परेशानी व्यक्त की। तमन्ना ने विषय बदलते हुए कहा, "आप लोगों की तो यह रोज़ की समस्या है। वो सब छोड़िए, यह बताइए कि अस्पताल में उन बच्चों का ऑपरेशन हो गया?" मुंशी जी के चेहरे पर संतोष की लहर दौड़ गई। "बहू जी, आपकी करुणा ने उन बच्चों

को सचमुच एक नई ज़िंदगी दी है।" और उन लोगों की झोपड़ियाँ, जो तूफ़ान में उजड़ गई थीं, क्या वे भी बन गईं?" तमन्ना ने अपनी सामाजिक चिंता ज़ाहिर की। मुंशी जी ने आत्मविश्वास से मुस्कुराते हुए उत्तर दिया, "बस, दो-चार दिन में सब तैयार हो जाएगा।" तमन्ना ने विनोदपूर्ण चेतावनी दी, "पक्का न! कोई चूक तो नहीं होगी?" "बहू रानी, आपके साथ काम करके मैं धन्य हो गया हूँ। जीवन के अंतिम पड़ाव पर कुछ पुण्य कमा लूँ," मुंशी जी की इस सहज स्वीकारोक्ति पर सभी हँस पड़े। "आप चलिए, मैं वकील से मिलकर आता हूँ," जयेश भी मुस्कुराते हुए बोला। मुंशी जी के जाने के बाद, जयेश हाथ जोड़कर खड़ा हो गया, जैसे किसी अदृश्य शक्ति का आह्वान कर रहा हो। तमन्ना ने उसके माथे पर श्रद्धापूर्वक पीला चंदन लगाया। जयेश थाली से प्रसाद लेकर बाहर निकलने ही वाला था कि एक तूफानी अंदाज़ में एक महिला भीतर दाखिल हुई। यह कविता थी, और उसकी आँखें आँसुओं से भरी थीं। तमन्ना और जयेश ने एक-दूसरे की ओर देखा। जयेश के चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान तैर गई, पर तमन्ना की आँखों में स्पष्ट क्रोध था। "भाभी, मैं इस इंसान को अब और नहीं झेल सकती!" कविता ने हिचकियों के बीच कहा। "कविता का ध्यान रखो, मैं निकलता हूँ," जयेश ने जल्दबाज़ी में कहा और वहाँ से निकल गया। तमन्ना का चेहरा लाचारी से भर गया। "अंदर चलो, आराम से बैठकर बात करते हैं," तमन्ना ने कोमलता से कविता के कंधे पर हाथ रखा। कविता, जिसकी ऊँचाई मुश्किल से पाँच फीट थी और शरीर से वह काफ़ी गोल-मटोल थी, जब चलती थी तो उसके कदम ठुमकते हुए लगते थे। उसके चेहरे की हर विशेषता — आँखें, नाक, गाल, होंठ — सभी गोल और भरे हुए थे, फिर भी उसके मुख पर एक भोली-भाली, बचकानी मासूमियत झलकती थी।

जयेश अपनी मर्सेडीज़ के भीतर बैठा, बाहर की दुनिया से बेखबर, जैसे ही उसकी गाड़ी ने ऑफिस का रुख किया। उसके साथ थे, दो ऐसे साये जो उसकी सुरक्षा के अटूट कवच थे— राका, उसका अंगरक्षक, और रंजीत, उसका सारथी। दोनों ही छह फीट से अधिक ऊँचे, किसी देवदार के पेड़ से कम नहीं लगते थे। राका, एक चलता-फिरता इस्पात का पुतला! उसके कंधे इतने चौड़े और मांसल थे कि मानो किसी मूर्तिकार ने उन्हें तराशा हो; हर नस, हर उभार, उसकी अदम्य शक्ति का प्रमाण था। उसका डील-डौल किसी पेशेवर बॉडीबिल्डर-सा था, जो यह चीख-चीखकर बताता था कि उससे भिड़ना मौत को दावत देना है। गोरा रंग होने के बावजूद, उसकी धँसी हुई आँखों में गहरे धब्बे ऐसे थे जैसे वे अनगिनत रातें जागकर बिताई हों, और पिचकते गाल उसके चेहरे पर एक स्थायी निर्दयता का भाव अंकित करते थे। वह अक्सर काले पठान सूट में होता था, जो उसके भयानक व्यक्तित्व को और भी निखारता था। रणजीत एक अलग ही किस्म का प्राणी था—दुबला-पतला, पर बिजली-सा फुर्तीला। उसका चेहरा भरा-पूरा था, और साँवला रंग उसे एक देहाती, ज़मीनी रूप देता था। मगर, उसके दांतों पर गुटखे के निशान इस बात के गवाह थे कि उसकी दुनिया, राका से कहीं अलग थी। वह हमेशा पूरी आस्तीन की कमीज़ और फुलपैट पहने रहता था, जैसे अपने आपको दुनिया की नज़रों से छुपाए रखना चाहता हो। इस तरह, जयेश के आसपास शक्ति और सतर्कता का एक अजीब सामंजस्य था—एक ओर राका की प्रचंड शारीरिक उपस्थिति, तो दूसरी ओर रणजीत की सूक्ष्म, चपल सतर्कता।

कविता और तमन्ना भीतर के कक्ष में बैठी थीं, जहाँ हवा में कविता के आँसुओं की कसक घुली हुई थी। "आप दोनों की जोड़ी देखकर मेरे मन में बस यही आता है कि पिछले जन्म में मैंने अवश्य ही कोई अक्षम्य पाप किया होगा, तभी मुझे ऐसा पतित और नीच पति मिला है। पति तो वो होता है जो अपनी पत्नी और परिवार की ढाल बने, लेकिन यह व्यक्ति तो इसी परिवार को अग्नि में धकेलने पर तुला है।" उसकी आवाज़ में वेदना का तीव्र ज्वार था। तमन्ना ने शांतचित्त होकर उसे समझाने का प्रयास किया, "तुम्हें संजीव से बात करनी होगी, परिवार इस तरह से बिखरा नहीं करते।" "मैं तो सोचती हूँ कि अब उसे तलाक़ दे दूँ!" कविता का क्रोध अपनी पराकाष्ठा पर था। "कतई नहीं! यह एक विनाशकारी निर्णय होगा। मैं मानती हूँ कि संजीव में गंभीरता का अभाव है, पर वो इतना भी बुरा नहीं।" कविता की आँखों से आँसुओं की धारा फूट पड़ी, "शराब पीने के बाद वो कैसा तांडव मचाता है! पिछले महीने ऑनलाइन गेम में दो लाख रुपये पानी में बहा दिए! मुझे बिना बताए विदेशों में भटकता रहता है, वो तो शुक्र है कि कोविड टेस्ट के लिए पुलिस आ गई, वरना मुझे कभी पता भी नहीं चलता। अब उसमें कौन सी अच्छाई शेष बची है? पिछले कुछ समय से उसका काम-धंधा भी चौपट हो गया है।" "गलती तुम्हारी भी है," तमन्ना ने सपाट लहजे में कहा, "शादी के दो साल हो गए, अभी तक संतान सुख नहीं मिला। बच्चे होते हैं तो पुरुष को उत्तरदायित्व का भान होता है।" कविता ने अपने भीतर का सारा दर्द उगल दिया, "दीदी, आप कितनी अनुपम सुंदर हो – विशाल आँखें, उन पर सजी बड़ी सी गोल बिंदी, जैसे किसी ने चाँद पर ही टीका लगा दिया हो; दूधिया रंगत, सुडौल काया, पैनी नाक, नाज़ुक होंठ, भरे-भरे गाल; आपके हाथों की उँगलियाँ कितनी कोमल और आकर्षक हैं। आपको देखकर ही मन को शांति मिलती है। और एक तरफ मैं, स्थूलकाय, बदसूरत... शायद इसीलिए संजीव मुझसे प्रेम नहीं करता।" "क्या बकवास कर रही हो!" तमन्ना ने कठोरता से उसे रोका, "संजीव शायद नासमझ है, पर वो तुमसे अथाह प्रेम करता है। देखना, वो अभी दौड़ा चला आएगा।" ठीक उसी क्षण, द्वार पर घंटी बजी और एक सेवक ने दरवाज़ा खोला। संजीव तेज़ी से भीतर आया। "कविता! कविता!" वह कमरे तक पहुँच गया। संजीव को देखते ही कविता के भीतर प्रतिशोध की ज्वाला भड़क उठी। "दीदी, इससे कहिए ये यहाँ से चला जाए! मुझे इसकी सूरत भी नहीं देखनी है!" उसने चीखते हुए कहा। "कविता, मेरी बात तो सुनो!" संजीव ने दीन स्वर में याचना की। तमन्ना संजीव को कमरे से बाहर निकालकर भोजन कक्ष में ले गई। "ये रोज़-रोज़ का नाटक क्या लगा रखा है?" तमन्ना ने भी अब अपना धैर्य खो दिया था। "भाभी, आप ही मेरा परिवार बचा सकती हैं," संजीव ने गिड़गिड़ाते हुए कहा। "अभी कविता का क्रोध आसमान छू रहा है, मैं उसे समझाकर भेज दूँगी, पर आगे से तुम सुधर जाओ। घर की मर्यादा घर तक ही रहे।" "मैं भरसक प्रयास करूँगा। मेरी वजह से आप लोगों को भी असुविधा हुई, मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। आगे से मैं भी आप लोगों की भाँति हँसी-खुशी से जीवन व्यतीत करूँगा।" संजीव ने प्रतिज्ञा ली। "ठीक है, अभी जाओ।" संजीव मायूस होकर वहाँ से चला गया।

खारिनसी नदी के किनारे स्थित बतिघर गाँव में, क्षितिज पर ढलते सूरज की सुनहरी आभा भी, नदी तट पर बैठे उस जोड़े के चेहरों पर मंडरा रहे दुःख के घनघोर बादलों को भेद नहीं

पा रही थी। "तुम्हें यह सब करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो भी होगा, हम सब मिलकर उसका सामना करेंगे," सुधा ने अपनी नम आँखों से आँसुओं की बूंदें पोंछते हुए, करुणा से भीगी आवाज़ में याचना की। सूरज की दृष्टि शून्य में विलीन थी, मानो उसका चेतन मन देह से कहीं दूर भटक गया हो। सुधा ने उसके कंधे पर अपना हाथ रखा, अपने स्पर्श से सूरज के धड़कते हृदय की समस्त अग्नि को शांत करने का प्रयत्न किया। "अपनी जान देने में मुझे कोई संकोच नहीं होगा। कब तक भागते रहेंगे और कहाँ तक? भागने से कहीं बेहतर है, लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त होना," सूरज का स्वर क्रोध और निराशा से भरा था। "इस देश में बलिदान देने वालों को चार दिनों में ही भुला दिया जाता है। जोश से कुछ हासिल नहीं होगा; विवेक से काम लो," सुधा ने उसे समझाने का भरसक प्रयास किया। "जिसे तुम विवेक कह रही हो, वह तो कायरता का दूसरा नाम है। हमारा समाज अब कायर हो चुका है, जिसे लगता है कोई अवतार आकर उसकी रक्षा करेगा। अपनी भूमि के लिए लड़ना हम भूल चुके हैं, पर मैं नहीं भूला। यदि अकेला भी जूझना पड़े तो भी मैं पीछे नहीं हटूँगा!" सूरज की आवाज़ में एक भीषण खीझ और अदम्य कुढ़न थी — कुछ न कर पाने की कसक। "तुम्हें न मेरी कोई परवाह है, न अपने माता-पिता की। मैं अपना भाई खो चुकी हूँ, पर अब तुम्हें नहीं खोना चाहती," सुधा का कंठ रूँध गया। सूरज ने उसे अपनी बांहों में कस लिया। "उन्होंने गाँव के निर्दोषों को मौत के घाट उतारा, मेरे मित्रों का रक्त बहाया, मेरे आराध्य देव का अपमान किया। तुम चाहती हो कि यह सब भूलकर मैं कायरों की तरह भाग जाऊँ? यह कभी संभव नहीं!" सूरज ने धीमे स्वर में कहा, जैसे स्वयं से ही संवाद कर रहा हो। "तुम नहीं समझोगे। मैं घर जा रही हूँ। जाने से पहले, घर आकर भोजन कर लेना," सुधा ने यह कहते हुए खड़ी हुई और मौन होकर चली गई। सूरज नदी की अविराम धारा को देखता रहा, जिस पर सूर्य की अंतिम किरणें सोने की चादर बिछा रही थीं। पिछली बार जब इस गाँव में कोई खुशी की खबर आई थी, तब से इस नदी में कितना जल बह चुका था। सूरज का जीवन तो मानो थम सा गया था; अतीत के नाम पर केवल कुछ लंबी आहें शेष थीं और भविष्य पूर्णतः अंधकारमय लग रहा था। पर यह नदी, बिना रुके, बिना थके, बस बहती जा रही थी — न अतीत का कोई शोक, न भविष्य की कोई चिंता।

शाम ढलते ही, जयेश घर में प्रविष्ट हुआ और सीधे पूजा कक्ष की ओर बढ़ा, जहाँ तमन्ना राधा-श्रीकृष्ण के नाम का जाप कर रही थी। उसने श्रद्धापूर्वक आशीर्वाद ग्रहण किया और अपने कक्ष में लौट आया। रात्रि भोजनोपरांत, जयेश और तमन्ना शयन की तैयारी कर रहे थे। जयेश बिस्तर पर ही आसीन होकर कुछ महत्वपूर्ण फाइलें देख रहा था। तमन्ना धीरे से उसके निकट आकर बैठ गई। "एक बात पूछूँ?" तमन्ना ने मृदु स्वर में पूछा। "मैं लोगों की सहायता पर इतने धन का व्यय करती हूँ, आपको इसमें कोई आपत्ति तो नहीं होती?" जयेश के चेहरे पर संतोष की मुस्कान थी। "आपत्ति क्यों होगी? तुम जितना व्यय करती हो, ईश्वर उससे दस गुना मुझे लौटा देते हैं। और इतने धन का क्या करेंगे, क्या इसे साथ लेकर ऊपर जाएँगे? अपने रोहन के लिए तो मैंने पर्याप्त धन-संपदा संचित कर रखी है।" "मैं भाग्यशाली हूँ कि मुझे आप जैसा जीवनसाथी मिला, जो प्रत्येक पग पर मेरा संबल बनता है। अन्यथा, कविता की दशा ही देख लीजिए," तमन्ना ने कहा। "ओह! मैं तो कविता का हाल पूछना भूल ही गया

था," जयेश मुस्कुराया। "पूरे दिन समझाने के बाद, संध्या काल में वह अपने घर लौटी। मुझे तो आशंका थी कि कहीं मेरी पूजा ही न छूट जाए," तमन्ना के इस कथन पर जयेश मंद-मंद मुस्कुराने लगा। "यह तुम्हारी आस्था ही है, जिसकी बदौलत फैक्ट्री के बंद होने के बाद भी मेरा बाकी व्यवसाय प्रतिदिन नई ऊंचाइयाँ छू रहा है," जयेश ने कृतज्ञता व्यक्त की। अपनी फाइलें मेज पर रखते हुए उसने पूछा, "अच्छा एक बात बताओ, तुम जीवन से क्या अपेक्षा रखती हो?" जयेश के अधरों पर एक रहस्यमय मुस्कान तैर गई। "मैं अपने किशन कन्हैया के साक्षात दर्शन करना चाहती हूँ," तमन्ना ने कहा। "और!" जयेश की उत्सुकता बढ़ गई, क्योंकि तमन्ना के मुख पर भी वैसी ही रहस्यमयी मुस्कान झलक रही थी। "और क्या?" जयेश ने पूछा। "और मैं जब तक इस संसार में रहूँ, आपका सान्निध्य बना रहे," तमन्ना ने लज्जा से सिर झुकाते हुए कहा। जयेश ने तकिये के नीचे से एक आभूषण का डिब्बा निकाला और तमन्ना की हथेली पर रख दिया। तमन्ना की आँखें आश्चर्य से विस्फारित हो गईं और मुख खुला का खुला रह गया। "यह! अकस्मात्! किसलिए?" तमन्ना ने मुस्कुराते हुए पूछा। "बस यूँ ही, आज मन किया," जयेश ने सहजता से उत्तर दिया। तमन्ना ने डिब्बा खोलकर आभूषण को निहारा। "यह बहुत ही सुंदर है, परंतु यह तो अत्यंत बहुमूल्य होगा।" "तुम्हारी प्रसन्नता मेरे लिए सबसे अनमोल वस्तु है," जयेश ने स्नेह से कहा। तमन्ना ने आभूषण को अपने कंठ पर रखकर देखा, फिर उठकर विशाल दर्पण के समक्ष जाकर उसे धारण किया। जयेश भी तमन्ना के पीछे खड़ा हो गया। "अति सुंदर! अद्भुत!" जयेश ने दर्पण में तमन्ना की प्रतिबिंबित छवि को देखकर विस्मय से बुदबुदाया। "फैक्ट्री बंद होने के बाद, आपको अभी यह फ़िज़ूलखर्ची नहीं करनी चाहिए थी," तमन्ना आभूषण पर हाथ फेरते हुए बोली, जैसे उसकी चमक को अपनी हथेलियों में समेट लेना चाहती हो। "व्यवसाय में यह सब उतार-चढ़ाव तो लगे ही रहते हैं, तुम इन सब की चिंता क्यों कर रही हो?" जयेश ने तमन्ना को अपनी ओर मोड़ा और उसे आलिंगन में भर लिया। तमन्ना ने भी अपना सिर जयेश के कंधे पर रखकर गहरी आत्मसंतुष्टि से मुस्कुरा दिया।

सूरज अपने चार दोस्तों के बीच बैठा था। हवा में बारूद की गंध घुली थी, और चुप्पी ऐसी थी जैसे तूफान से पहले का सन्नाटा। सूरज ने गहरी साँस ली, उसकी आँखों में एक अंगारे-सी चमक थी। "धृतराष्ट्र आँखों से अंधे थे, मन और मस्तिष्क से नहीं। पर आज की कानून व्यवस्था तो आत्मा से भी अंधी हो चुकी है।" उसकी आवाज़ में एक दहाड़ थी, जो उसके भीतर सुलग रहे आक्रोश की ज्वाला को दर्शा रही थी। "धर्म वहाँ था जहाँ श्रीकृष्ण थे, और आज भी धर्म हमारे साथ है, क्योंकि कन्हैया हमारे रग-रग में समाए हैं!" उसने अपनी आँखें एक-एक करके अपने दोस्तों पर फेरीं। उनकी खामोशी उसे असहनीय लग रही थी, पर उसने अपनी बात जारी रखी। "हमें शत्रु और समस्या, दोनों की नब्ज पहचाननी होगी। सच्चा योद्धा वो है जो रणभूमि में उतरने से पहले ही जीत का खाका खींच ले। अगर आप सही हैं, तब भी युद्ध अनिवार्य है। इसलिए मैंने अपने शत्रुओं के बारे में एक-एक पत्ता खोल लिया है। अब समय है वार करने का! क्या तुम सब मेरे साथ हो?" सूरज ने उनके चेहरों पर पसरी असमंजस को भाँप लिया। एक पल के लिए उसके कंधे झुके, पर फिर उसकी आँखों में वही अदम्य ज्वाला लौट आई। "अगर तुम सब मेरा साथ नहीं देना चाहते, तो ठीक है। मैं ये काम अकेला ही

करूंगा, पर करूंगा ज़रूर, भले ही मुझे अकेले ही काल से भिड़ना पड़े!" उसकी आवाज़ में अब कोई संदेह नहीं था, केवल लोहे-सा दृढ़ निश्चय था। उसने आगे कहा, "इस सब के बाद ये मामला इतना बड़ा हो जाएगा कि इस पर पूरे देश की साँसें थम जाएँगी। वो लोग हमारी ज़मीन नहीं छीन पाएंगे। फिर ऐसी ज़ुरत करने से पहले वो सौ बार नहीं, हज़ारों बार सोचेंगे।" उसकी आवाज़ में एक भयंकर गर्जना आ गई थी, जैसे वह अपने शब्दों से ही अपनी नियति गढ़ रहा हो। "अन्याय के खिलाफ चुप रहना हमारे धर्म में नहीं सिखाया गया है, श्रीकृष्ण ने कहा है कि अन्याय के विरुद्ध अस्त्र उठाना हमारा परम कर्तव्य है। कानून की नज़र में हम भले ही गलत हों, पर हम अपने धर्म की नज़रों में नितांत सही हैं। जब कानून हमारा साथ नहीं दे रहा है, तो अब धर्म ही हमारी ढाल बनेगा! धर्म ने ही इस देश की सभ्यता संस्कृति की रक्षा की है और आज भी धर्म ही हमारे गाँव की रक्षा करेगा "उसने अपनी बात खत्म की और अपने दोस्तों की ओर देखा। इस बार, उनकी आँखों में अब कोई झिझक नहीं थी, केवल अटूट विश्वास और संकल्प था। मुन्ना, जो अब तक खामोश बैठा था, आखिरकार गर्जते हुए बोला, "तुम्हारी सारी बातें सही हैं, इसलिए मैं तुम्हारा साथ दूँगा!" एक-एक करके, सभी ने अपने सिर हिलाकर दृढ़ सहमति जताई और आगे बढ़कर सूरज का हाथ मज़बूती से थाम लिया। उनकी आँखों में अब एक नया युद्ध था, एक ऐसा युद्ध जो किसी भी चुनौती का सामना करने के लिए लौह-सा तैयार था।

10 जुलाई 2022 की सुबह तमन्ना ने जयेश के माथे पर पीला चंदन लगाया। उसकी रगों में एक माँ की चिंता दौड़ रही थी, जब उसने जयेश को विदा करते हुए बताया, "आज दोपहर रोहन को डॉक्टर के पास ले जा रही हूँ।" जयेश की भौंहें तन गईं, जैसे उसने अनकही जंग की बू सूँघ ली हो। "माँ जी से पूछा?" उसके सवाल में सीधा आरोप था—ज़रूर इस फ़ैसले पर घर में ज़बरदस्त तकरार हुई होगी। "मैं और इंतज़ार नहीं कर सकती!" तमन्ना की आवाज़ में खीझ थी, "चार दिन से सर्दी-जुकाम ने उसे बेहाल कर रखा है।" उसने शिकायत भरे अंदाज़ में मुँह टेढ़ा किया। जयेश ने बात काटी, "ठीक है, चली जाना। मैं निकलता हूँ।" वह जानता था कि यह माँ-बेटी का पुराना संग्राम है, और इसमें उलझना आग में हाथ डालने जैसा होगा। किसी एक का भी पक्ष लिया, तो मामला बेकाबू हो जाएगा।

सुधा ने भक्तिभाव से पूजा की थाल सजाई और अपने गाँव के प्राचीन श्रीकृष्ण मंदिर की ओर कदम बढ़ाए। मंदिर के द्वार पर ही पुजारी जी ने उसे देख लिया और बोले, "आओ बेटी, ज़रा मेरी भी मदद करो।" सुधा ने बिना देर किए, प्रभु के श्रृंगार हेतु फूलों को गूँथना आरंभ कर दिया। पुजारी जी ने कहा, "बेटी, मैं बस पाँच मिनट में लौटता हूँ। तुम यह माला तैयार कर प्रभु को अर्पित कर देना।" इतना कहकर वे मंदिर से बाहर चले गए। सुधा ने तत्परता से माला तैयार की और उसे स्वयं अपने हाथों से प्रभु के श्रीविग्रह पर चढ़ाया। उसके हृदय के अंतर्तम से एक मार्मिक, अश्रुपूरित पुकार निकली, "मेरे सूरज की रक्षा करना। उसने जो मार्ग चुना है, वह इस गाँव के समस्त कल्याण के लिए है, समस्त उन्नति के लिए है। आपने तो सदैव धर्म का ही पक्ष लिया है, मेरी भी रक्षा करना, मेरे इस पवित्र संकल्प की रक्षा करना प्रभु।" उसकी आँखें आँसुओं से डबडबा गईं, और प्रेम तथा भक्ति के चरम आवेग में वह प्रभु के

समक्ष साष्टांग दंडवत् प्रणाम करने लगी। ठीक उसी क्षण, पुजारी जी ने मंदिर में पुनः प्रवेश किया। उनकी दृष्टि सीधे प्रभु के कंठ पर सुशोभित उस अलौकिक माला पर पड़ी। वह माला मात्र पुष्पों का समूह नहीं थी, बल्कि सुधा की अटूट श्रद्धा और प्रभु-प्रेम की साक्षात् प्रतिमूर्ति थी, जिससे एक दिव्य और स्वर्गीय प्रकाश मंदिर के हर कोने को प्रकाशित कर रहा था, एक ऐसी आभा बिखेर रहा था जो किसी भी लौकिक वस्तु से परे थी।

शाम ढल रही थी। मंद-मंद दीपों की लौ में, तमन्ना अपने आराध्य की आरती में लीन थी। उसके मुख पर शांति और भक्ति का दिव्य तेज था। मुंशी जी हाँफते हुए, बेतहाशा लड़खड़ाते हुए घर में घुसे। उनकी आँखें पथराई हुई थीं और पूरा शरीर काँप रहा था। उन्हें इस भयावह हाल में देख, सब्बा का कलेजा धक से रह गया। उसके भीतर एक सर्द लहर दौड़ गई। "क्या हुआ? आप ऐसे डरे हुए क्यों हैं?" सब्बा की आवाज़ कंठ में ही अटक गई, बमुश्किल फुसफुसाहट बनकर निकली। मुंशी जी ने कोई जवाब नहीं दिया। वे बस अपनी छाती पीटते हुए, दर्द से कराहते हुए सोफे पर गिर पड़े और फूट-फूटकर रोने लगे। उनकी सिसकियों से पूरा वातावरण बोझिल हो गया। मुंशी जी को इस तरह बिलखता देख, सब्बा के मन में अनहोनी की गहरी काली छाया मंडराने लगी। "कुछ बोलेंगे भी? इससे पहले कि मेरी साँसें ही रुक जाएँ!" सब्बा की आवाज़ अब चीत्कार में बदल चुकी थी। मुंशी जी ने बड़ी मुश्किल से अपने आँसुओं को रोका, और जैसे-तैसे शब्दों को जोड़ा, "माँ जी... वो... वो साहब!" "क्या हुआ जयेश को? साफ-साफ बताइए!" सब्बा ने चीखते हुए पूछा। उसका संयम टूट चुका था, उसका मातृत्व हूक बनकर बाहर आ रहा था। "साहब... नहीं रहे... किसी ने उनकी हत्या कर दी," मुंशी जी ने टूटी हुई, घिसी हुई आवाज़ में कहा। उनके शब्द सीधे सब्बा के हृदय पर वज्रपात बनकर गिरे। "क्या बकवास कर रहे हो! उनका बाँडीगार्ड कहाँ था? ड्राइवर कहाँ था?" सब्बा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। उसके भीतर एक तूफान उठ खड़ा हुआ। "बाँडीगार्ड... और ड्राइवर... सभी मारे गए। कोई नहीं बचा... कुछ भी नहीं बचा," मुंशी जी ने कहते ही फिर से ज़ोर-ज़ोर से रोना शुरू कर दिया। उनके रुदन में विनाश की गूँज थी। "मैं किस मुँह से अपनी मासूम बेटी को ये भयानक खबर सुनाऊँगी! ये क्या हो गया... मेरी बसी-बसाई दुनिया... पल भर में उजड़ गई," सब्बा ने जड़वत् होकर बुदबुदाया और लड़खड़ाकर वहीं फर्श पर गिर पड़ी। उसने तुरंत अपने मुँह पर दुपट्टा कस लिया, ताकि उसकी चीखें, उसकी सिसकियाँ तमन्ना तक न पहुँचें। मुंशी जी भी निःशब्द होकर वहीं पास बैठ गए, दोनों ही एक भयावह सन्नाटे में, बस तमन्ना की आरती समाप्त होने का इंतज़ार कर रहे थे।

तमन्ना, अपने आराध्य की स्तुति से उपजी शांति को हृदय में समेटे, जैसे ही पूजा से लौटी, सामने का दृश्य देखकर सन्न रह गई। सब्बा और मुंशी जी — दोनों बदहवास, बिलखते हुए — उनके आँसुओं ने जैसे हवा में ही त्रासदी घोल दी थी। यह हृदयविदारक मंज़र देख, तमन्ना के पैरों तले की ज़मीन ही नहीं, बल्कि मानो उसकी साँसें भी खिसक गईं। आरती की जगमगाती थाली उसके हाथों से छूटते-छूटते बची, जिसका शुभ नाद अब विलाप में बदलने वाला था। उसने काँपते, लड़खड़ाते हाथों से थाली किसी तरह मेज पर रखी और बिजली की तेज़ी से

सबा की ओर भागी। उसकी बाँहें कसकर पकड़ लीं और एक तीखी चीख उसके कंठ से फूटी, "अम्मी! क्या हुआ? कुछ बोलेंगी भी या मेरी जान ही निकाल देंगी?"

सबा, जो अब तक अपने भीतर एक भयानक तूफ़ान को रोके हुए थी, तमन्ना की आवाज़ सुनते ही टूट गई। उसने अपनी बेटी को अपनी बाँहों में ऐसे भींच लिया, मानो वह उसे इस दुनिया के हर दर्द से बचाना चाहती हो। उसकी सिसकियाँ इतनी तीव्र थीं कि वे कमरे की हर खामोशी को चीर रही थीं। माँ को इस तरह बेसुध रोता देख, तमन्ना की आँखें भी तत्काल डबडबा गईं, और एक भयावह, अनहोनी का काला साया अब सीधे उसके मासूम हृदय पर मंडराने लगा था। उसकी आत्मा भीतर ही भीतर काँप उठी, यह जानते हुए कि कुछ ऐसा घटित हुआ है, जो उनके जीवन को हमेशा के लिए बदल देगा।

गाड़ी सुनसान रास्ते पर सरक रही थी। अंदर, तमन्ना और सबा बेसुध-सी, केवल विलाप कर रही थीं, उनकी सिसकियाँ हवा में घुल रही थीं। मुंशी जी मौन थे, पर उनका चेहरा भी दर्द से पथराया हुआ था। रास्ता धीरे-धीरे घना होता गया, सड़क के दोनों ओर अब सिर्फ़ घने, काले जंगल पसरे थे। जैसे ही गाड़ी ने मोड़ लिया, सामने का दृश्य देखकर सबकी रूह काँप उठी। सड़क के बीचो-बीच जयेश की गाड़ी पलटी हुई थी, उसका ढाँचा बुरी तरह से क्षत-विक्षत था। यह साफ़ था कि हमला कितना भीषण और बर्बर था। चारों ओर सड़क पर मांस के लोथड़े और खून के छींटे बिखरे पड़े थे, जो उस भयानक वारदात की गवाही दे रहे थे। तमन्ना की नज़र अचानक ज़मीन पर पड़े एक काले पठान कोट के टुकड़े पर पड़ी। उसका दिल डूब गया – यह राका का कोट था। कुछ ही दूरी पर रंजीत की लाल शर्ट के चिथड़े दिखाई दिए। वह चीख पड़ी, पहचान गई थी वह उन्हें। उन दोनों के सिरों को पुलिस अभी भी आस-पास के घने जंगलों में तलाश रही थी। वहाँ से कुछ ही दूरी पर, थोड़ा हटकर, जयेश का रक्तरंजित, निष्प्राण शरीर पड़ा था। उसकी आँखें खुली थीं, मानो अभी भी कुछ कहना चाहती हों। उस मंज़र ने सबकी आत्मा को झकझोर कर रख दिया। वह सिर्फ़ एक शव नहीं था, बल्कि एक भयावह त्रासदी का अंतिम प्रमाण था जिसने उनके जीवन को हमेशा के लिए बदल दिया था।

घटनास्थल पर पुलिस का सख्त घेरा था। कुछ अधिकारी जाँच में जुटे थे, एक फोटोग्राफर हर भयावह दृश्य को कैमरे में कैद कर रहा था। सब-इंस्पेक्टर विकास पलटी हुई कार का मुआयना कर रहे थे, जबकि फॉरेंसिक टीम के सदस्य कार पर उँगलियों के निशान तलाश रहे थे। हर कोई अपने काम में मग्न था, किसी को कुछ समझ आता, इससे पहले ही तमन्ना तेज़ी से गाड़ी से उतरी और बदहवास-सी दौड़ती हुई जयेश के रक्तरंजित, निष्प्राण शरीर से लिपट गई। एक चीख उसके गले से निकली, जो उस पूरे सन्नाटे को चीर गई। "मेरे बाबा!" वह बेतहाशा चिल्लाने लगी, जैसे उसका अपना अस्तित्व ही छिन गया हो। उसने अपना आपा पूरी तरह खो दिया था, और सबा उसे थामे हुए थी, पर तमन्ना ऐसे बिलख रही थी मानो अभी अपने प्राण त्याग देगी। उसकी आँखों से अविरल आँसुओं की धारा बह रही थी, और उसका शरीर शोक की अग्नि में तप रहा था। तमन्ना की इस दयनीय हालत को देख, सब-

इंस्पेक्टर विकास ने दो लेडी कॉन्स्टेबलों को इशारे से उसे वहाँ से दूर ले जाने को कहा। लेकिन तमन्ना जयेश के मृत शरीर को छोड़ने को तैयार नहीं थी। लेडी कॉन्स्टेबल ने बलपूर्वक उसे जयेश से अलग करने का प्रयास किया, पर न जाने कहाँ से तमन्ना के शरीर में इतनी शक्ति आ गई थी कि उसने जयेश के सिर को अपनी गोद में कसकर जकड़ लिया था। वह उसे किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ना चाहती थी। कुछ ही क्षणों के बाद, उसके शरीर में जो अचानक शक्ति का संचार हुआ था, वह क्षीण होने लगा। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा, और वह इस असहनीय शोक तथा पीड़ा को संभाल नहीं पाई। उसका शरीर शिथिल पड़ गया और वह वहीं बेहोश होकर गिर पड़ी।

मीडिया का हुजूम पुलिस अधीक्षक आशीष गुप्ता को चारों तरफ से घेर लेता है। कैमरों की फ्लैश चमकती है और माइक्रोफोन उनके सामने आ जाते हैं। "शहर में हत्याओं का सिलसिला शुरू हो गया है! यहाँ तो पुलिस ही सुरक्षित नहीं है तो आम जनता का क्या होगा?" एक तेज़-तर्रार पत्रकार ने तीखा सवाल दागा। पुलिस अधीक्षक ने शांत रहने की कोशिश की। "हमने जाँच शुरू कर दी है। हमें शक है कि इसके पीछे बतिघर गाँव के कुछ लोगों का हाथ हो सकता है, लेकिन हम हर पहलू से जाँच को आगे बढ़ाएंगे।" इतना कहकर, आशीष गुप्ता तेज़ी से आगे बढ़ गए। पत्रकार उनसे और सवाल पूछना चाहते थे—कई और सवाल, पर वे किसी का जवाब दिए बिना, भीड़ को चीरते हुए वहाँ से निकल गए।

मौत की खामोशी में डूबे घर में इंस्पेक्टर मदन ने कदम रखे। तमन्ना अपने शयनकक्ष के बिस्तर पर निढाल, लगभग बेजान सी लेटी थी। उसकी आँखों में कोई भाव नहीं था, बस एक शून्य। पास बैठी सब्बा अपनी ममतामयी हथेलियों से उसके माथे को सहला रही थी, जैसे उस अथाह पीड़ा को मिटाना चाहती हो, पर सब व्यर्थ था। मदन ने अपने स्वर में संयम का हर अंश घोलते हुए कहा, "आपके पति के पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट के अनुसार, उनकी हत्या कल शाम लगभग 6:30 से 7 बजे के बीच हुई थी। हमारी जाँच ज़ोरों पर है, और जल्द ही कुछ संदिग्धों को हिरासत में लेकर कड़ाई से पूछताछ की जाएगी।" वह जानता था कि तमन्ना को और आहत करना संभव नहीं था। गिरधर गोपाल ने उसकी दुनिया को इस कदर रौंद डाला था कि अब पीड़ा भी उसे छू नहीं सकती थी। मदन अपनी ओर से हर एहतियात बरत रहा था, पर उसे क्या पता था कि तमन्ना के भीतर जो सपनों का संसार था, वह कब का राख में बदल चुका है। और राख को अब कोई चोट, कोई दर्द महसूस नहीं होता। अपने हृदय की उसी राख को समेटे, तमन्ना ने मुश्किल से अपने सूखे होंठ खोले। उसकी आवाज़ एक फुसफुसाहट-सी निकली, "आखिर क्यों? किस बात की दुश्मनी थी मेरे भले पति से? शायद पैसों की बात थी! मुझसे एक बार माँग लेते, मैं खुशी-खुशी अपनी जान भी दे देती, पर यह सब करने की क्या ज़रूरत थी?" उसके प्रश्नों में चीत्कार थी, बेबसी थी, और ऐसा गहरा घाव था जो कभी भर नहीं सकता था। उसकी आँखों के सूखे कोनों से आँसुओं की कुछ बूंदें लुढ़कीं, और पहले से ही भीगा तकिया और नम हो गया। मदन के पास इन हृदयवेधी सवालों का कोई जवाब नहीं था। उसकी नज़रें असहाय सब्बा से मिलीं, और आँखों ही आँखों में उसने जाने की अनुमति माँगी। सब्बा ने भी टूटे हुए दिल से सहमति में सिर हिला दिया। इंस्पेक्टर मदन उस भयावह

दृश्य से, उस घुटन भरी खामोशी से बड़ी ही शालीनता और भारी मन से विदा हुए, अपने पीछे एक चीखती हुई त्रासदी और अनकहे, अनसुलझे सवालों का एक अनंत सिलसिला छोड़ गए।

मुंशी जी ने जयेश को बचपन से पाला-पोसा था। आज, उन्हीं बूढ़े हाथों से वह उसका अंतिम संस्कार कर रहे थे। चिता तैयार थी, और धधकती अग्नि की क्रूर लपटें आसमान की ओर उठने लगी थीं, मानो सीधे तमन्ना के हृदय को जलाने को आतुर हों। तमन्ना अपनी आँखों के सामने अपने प्रेम, अपने संसार को राख होते देख रही थी। हर लपट के साथ, उसका रोम-रोम जल रहा था। एक पल के लिए वह आपे से बाहर हो गई। उसकी आँखें लाल थीं, साँसें तेज़ और एक चीख के साथ वह उसी धधकती चिता की ओर दौड़ पड़ी, मानो उस विनाशकारी अग्नि में स्वयं को होम कर देना चाहती हो। पर आस-पास खड़ी कुछ महिलाओं ने फौलादी पकड़ से उसे जकड़ लिया, और उसके इस आत्मघाती, भयावह कदम को रोक लिया। उसका मन, उसकी आत्मा इतनी अधिक पीड़ा में थी कि अग्नि की जलन से होने वाला शारीरिक कष्ट भी उसके लिए नगण्य था। विरह की असहनीय पीड़ा ने उसके भीतर एक ऐसा शंखनाद कर दिया था, जिसे सहन करना असंभव था। वह इस यातना से मुक्ति चाहती थी, इस वेदना को हमेशा के लिए मिटा देना चाहती थी। सती हो जाना—यह न तो तार्किक था और न ही नैतिक रूप से सही, यह वह भी जानती थी, पर उस क्षण, उसकी आँखों के सामने इस भीषण कष्ट से बाहर निकलने का कोई और रास्ता नहीं था। वह ज़मीन पर धड़ाम से गिर पड़ी और हिचकियों में बिलख-बिलख कर रोने लगी। उसके आँसुओं की धार इतनी तीव्र थी कि मानो धरती भी उसके शोक में भीग उठी हो। उस पल, तर्क, जीवन, और भविष्य का कोई मोल नहीं था—केवल जयेश के साथ पुनः एकाकार होने की एक उन्मादी, अंतिम इच्छा थी।

मातम की गहरी छाया में डूबे घर में, तमन्ना के अब्बू जावेद और भाई शोएब ने ऐसे कदम रखे, मानो वे किसी अजनबी के घर आए हों। "कहाँ है तमन्ना?" जावेद के होंठों से निकले शब्द भावनाहीन थे, उनमें एक अटपटा सा रूखापन था, जैसे वे केवल एक कर्तव्य निभा रहे हों। सब की आँखें डबडबा आईं, उनका गला रूंध गया। "वो अपने कमरे से निकली ही नहीं है, उसका बहुत बुरा हाल है। आप लोग ही उसे समझाइए।" "हमारे समझाने का वक़्त अब निकल चुका है, आप ही बात कीजिए।" शोएब ने निर्ममता से कहा, उसकी आवाज़ में एक अजीब सी कटुता भरी थी। जावेद ने बिना कुछ कहे, सिर्फ हाथ उठाकर शोएब को चुप रहने का इशारा किया, फिर एक शुष्क स्वर में बोले, "चलो, मिलते हैं।" और ऐसा कहकर, वे आगे बढ़ गए, उनके कदमों में कोई सहानुभूति नहीं थी। तीनों तमन्ना के कमरे में पहुँचे। सब ने एक बार फिर अपनी बेटी को झकझोरने की कोशिश की, "यह कब तक चलेगा, मेरी जान? पिछले दो दिनों से एक दाना भी मुँह में नहीं डाला तुमने। अपनी पूजा-पाठ भी छोड़ दी! ज़रा अपनी हालत तो देखो! अगर तुम ही ऐसे टूटकर बिखर जाओगी, तो रोहन को कैसे पालोगी? अब तो सारी जिम्मेदारियाँ तुम्हारे नाजुक कंधों पर हैं!" सब की आँखों में ममता की बाढ़ थी, पर पास खड़े जावेद और शोएब की आँखों में सांत्वना का एक अंश भी नहीं था। वे तो, इस असहनीय दुःख को देखकर, एक घिनौनी आत्मसंतुष्टि का अनुभव कर रहे थे।

तमन्ना ने अपने आँसुओं को पोछने का व्यर्थ प्रयास किया, उसकी सूनी आँखों में एक अनंत शून्य था। उसके भीतर का दर्द शब्दों की सीमा से परे था। एक तीखी, हृदय-भेदी वेदना उसके कंठ से फूटी, "मैं यह समझ नहीं पा रही हूँ कि आखिर मेरी भक्ति में कहाँ चूक हो गई थी! आखिर मेरे भगवान ने, मेरे गिरधर गोपाल ने, मेरे साथ ऐसा क्यों किया?" उसके स्वर में परमात्मा से शिकायत नहीं, बल्कि एक टूटे हुए विश्वास की चीत्कार थी। बिना एक और शब्द कहे, वह अचानक एक हिंसक आवेग में उठी और लड़खड़ाते, बेसुध कदमों से पूजा घर की ओर भागी। तीनों स्तब्ध, जड़वत् वहीं खड़े रह गए। पूजा घर में पहुँचकर, तमन्ना ने भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति को अपने काँपते हाथों में उठा लिया। उसकी आवाज़ में एक हृदयविदारक विलाप था, "प्रभु! मैंने ऐसा कौन सा पाप किया था जो मुझे इतनी बड़ी सज़ा मिली है? अगर मैंने आपकी भक्ति और सेवा पूरे मन से की है, तो मेरे जयेश को मुझे लौटा दीजिए! मुझे और कुछ नहीं चाहिए, मैं जयेश के बिना नहीं जी सकती! आपकी भक्ति और जयेश का साथ ही पर तो मेरा जीवन टिका था, और अब लगता है ये दोनों ही खत्म हो जाएंगे।" पूजा घर के बाहर से, सबा जावेद और शोएब तमन्ना के इस हालत को देख रहे थे। अपने कलेजे के टुकड़े को ऐसे बिलखता देख, सबा का कलेजा फट पड़ा। उसने तुरंत अपने पल्लू से मुँह दबा लिया, ताकि उसकी सिसकियाँ और न सुनाई दें। उसके चेहरे की हर झुर्री उसकी लाचारी और बेबसी की कहानी कह रही थी। जावेद और शोएब घृणा की दृष्टि से देखते हैं और मुँह ऐंठते हुए वहाँ से चले जाते हैं।

पुलिस स्टेशन की हवा में डर की एक घनी, असहनीय परत जम चुकी थी। साँसें तक भारी हो रही थीं। गाँव के दर्जनों लोग मवेशियों की तरह ठूँसे गए थे अँधेरे, दमघोंटू कमरों में, जिनमें सूरज और उसके साथी भी थे। बगल के कमरे से आती चीखों और कराहों की पैनी आवाज़ें हर दीवार से टकराकर वापस लौटती थीं, जैसे किसी कसाईखाने की भयावह ध्वनि पूरे स्टेशन को लील गई हो। हर चेहरा पत्थर बन चुका था, आँखें मौत के साये से भी ज़्यादा सहमी हुई थीं। मुन्ना ने हिम्मत बटोर कर, टूटती हुई साँस में फुसफुसाया, "सूरज... हम... हम पकड़े तो नहीं जाएँगे?" उसकी आवाज़ में एक अनकहा डर था जो उसके होंठों पर जम गया था। सूरज की निगाहें सामने टिकी थीं, उसकी आवाज़ में लौह-सी दृढ़ता थी, "अगर इन्हें रक्ती भर भी पता होता कि यह काम किसने किया है, तो इतनी बड़ी भीड़ को ढोरों की तरह घसीट कर यहाँ नहीं लाते।" राहुल ने ठंडी साँस ली, उसकी आँखों में वही अटूट संकल्प चमक रहा था। उसने धीमे, लेकिन हर शब्द को तराशते हुए कहा, "इसलिए, चाहे ये हमें कितना भी नोचें, कितना भी तोड़ें... एक लफ़्ज़ भी नहीं निकलेगा।"

तमन्ना, चेतना के हर धागे से विहीन, पूजा घर के ठंडे पत्थरों पर मृतप्राय पड़ी थी। सबा ने उसे झिंझोड़ते हुए जगाया, उसकी आवाज़ में एक तीव्र, बेबस पुकार थी, "बेटी, कुछ तो खा लो!" तमन्ना ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी, उसकी आँखें शून्य में विलीन, भीतर के अँधेरे को दर्शाती थीं। "कम से कम अपने कमरे में तो लौट जाओ।" प्रभु की प्रतिमा पर चढ़ा हर फूल, हर पवित्र तुलसी और पान का पत्ता, अब निर्जीव और सूखकर कठोर हो चुका था। दीपक की बुझी, काली बाती एक भयानक सन्नाटा लिए खड़ी थी। माली द्वारा दो दिन पहले लाए गए

ताज़े फूल भी अपनी थैली में ही गलकर मुरझा चुके थे। जो पूजा घर कभी आस्था के प्रकाश, सौंदर्य और पवित्र सुगंध से देदीप्यमान रहता था, वह आज भयावह रूप से उजाड़ और वीरान लग रहा था। खाली भोग की कटोरी को अपने हाथों में उठाते हुए, तमन्ना की आवाज़ में आत्मा को चीर देने वाली एक कराह थी। "प्रभु, मुझे क्षमा करें! मैं कितनी अभागी हूँ कि आपकी सेवा भी नहीं कर पा रही। अब यहाँ दीपक तभी जलेगा, जब आपकी इच्छा होगी।" उसने काँपते हाथों से वह कटोरी प्रभु के चरणों में वापस रख दी, जैसे अपनी आखिरी उम्मीद भी सौंप रही हो। सब ने तमन्ना की बाँह थामकर उसे सहारा दिया। तमन्ना ने दूसरे हाथ से दीवार का सहारा लेते हुए, जैसे कोई मृत देह उठती हो, खुद को मुश्किल से सीधा किया। भोजन कक्ष में, जावेद और शोएब बेफिक्र खाना खा रहे थे। उनकी निगाहें तमन्ना पर पड़ीं, और उनकी आँखों में सहानुभूति का एक कण भी नहीं था, केवल नग्न घृणा और तिरस्कार की लौ दहक रही थी। तमन्ना, बिना एक शब्द कहे, अपने कमरे में जाकर बिस्तर पर ढह गई। सब वापस जावेद और शोएब के पास आई। "तुमने उससे बात की?" जावेद ने गुस्से से अपनी भौंहें टेढ़ी करते हुए, जैसे कोई शिकारी दहाड़ता हो, फुसफुसाया। "अभी उसकी हालत नहीं है ऐसी बातें करने की," सब ने अपनी आवाज़ को यथासंभव शांत रखने की कोशिश की। "हम और इंतज़ार नहीं कर सकते। सुबह हम खुद तमन्ना से बात करेंगे," शोएब ने ठंडे, क्रूर स्वर में कहा। सब ने उन्हें समझाने का प्रयास किया, "मैं फिर कहूँगी, यह सही समय नहीं है।" जावेद ने एक निष्ठुर मुस्कान के साथ कहा, "इससे बढ़कर कोई आवश्यक कार्य नहीं है, इसलिए हम इसे तत्काल पूरा करना चाहते हैं।" इतना कहकर, वह खाने की मेज से उठकर चला गया, अपने पीछे एक अमानवीय चुप्पी छोड़ता हुआ।

सूरज, राहुल, और मुन्ना, उल्टे लटके हुए थे, पुलिस की बेरहमी भरी लाठियाँ उनके शरीर पर अंधाधुंध बरस रही थीं। हर वार के साथ उनकी चीखें वातावरण में गूँज उठती थीं, पर कोई भी उनकी आवाज़ में छिपी सच्चाई को स्वीकारने को तैयार न था। उनकी आँखों में, उनके हर चीत्कार में, एक अडिग आत्मबल साफ झलक रहा था – एक ऐसा विश्वास कि उन्होंने कुछ भी गलत नहीं किया है। यही उनका अडिग सिद्धांत था, जिसकी नींव पर उनका अडिग आत्मबल टिका था। उन्हें पूरा यकीन था कि वे सही हैं, लेकिन सही या गलत का अंतिम निर्णय तो केवल समय ही करता है।

अगली सुबह, सब, जावेद और शोएब तमन्ना के कक्ष में किसी आसन्न टकराव के भारीपन के साथ प्रविष्ट हुए। तमन्ना, खिड़की से बाहर असीम वीराने में निहार रही थी, उसकी आँखें विचारों से रिक्त, गहन हताशा के बोझ से झुकी थीं। सब ने उसके पास पहुँचकर, उसकी काँपती हथेलियों पर अपना हाथ रखा, और आवाज़ में ममता घोलकर पूछा, "क्या कर रही हो बेटी?" तमन्ना की आवाज़, अंतिम साँसों-सी क्षीण, बस फुसफुसाई, "अब करने को बचा ही क्या है?" जावेद ने घृणा से भरी, तीखी-सी मुस्कान के साथ कटाक्ष किया, "अगर तूने मेरी बात मानकर इस काफ़िर से निकाह न किया होता, तो अल्लाह तुझे यह नतीजा क्यों देता?" तमन्ना का उत्तर आया, उसकी रुग्ण काया से निकली आवाज़ में इस बार दुर्बलता का कोई नामोनिशान नहीं था, बल्कि अडिग विश्वास की लौ प्रचंडता से धधक रही थी। "जहाँ तक

मुझे ज्ञात है, इस्लाम में कर्मों का फल तो क्रयामत के दिन मिलता है, फिर मुझ पर इतनी जल्दबाज़ी में यह 'कृपा' क्यों बरसी?" शोएब ने क्रोध से दहकते हुए कहा, "होशियारी की हद पार मत कर! अगर दोज़ख की आग से बचना है तो अभी भी मौका है। तत्काल इस्लाम कबूल कर और अपने बच्चे को इस्लाम की तालीम दे!" तमन्ना का प्रत्युत्तर, जैसे किसी सिद्ध योगी का गहन ज्ञान, उनके कानों में गूँजा। "मेरा जो भी कर्मफल होगा, वह तो मुझे भोगना ही है। 'एकम् सत् विप्राः बहुधा वदन्ति' - सत्य एक है, परंतु ज्ञानी उसे अनेक रूपों में व्यक्त करते हैं। सनातन धर्म इसी गहन सिद्धांत पर प्रतिष्ठित है कि एक ही ईश्वर, एक ही परम सत्य, एक ही वास्तविकता है जो अनंत रूपों में प्रकट होती है। इसके विपरीत, अब्राहमिक धर्म को सत्य पर एक थोपे गए आवरण की तरह प्रस्तुत किया जाता है, यह विज्ञान के सार्वभौमिक नियमों के विरुद्ध है, जबकि सनातन धर्म का सिद्धांत जीवन के शाश्वत प्रवाह और ब्रह्मांडीय व्यवस्था के पूर्णतः अनुरूप है। अब्राहमिक मतों में सत्य वह है जो एक विशिष्ट पुस्तक, एक विशिष्ट संस्थापक द्वारा, एक विशिष्ट समय, एक विशिष्ट भौगोलिक परिस्थिति और एक विशिष्ट भाषा में रचा गया था। वहाँ जीवन एक कठोरतम परीक्षा बन जाता है, जहाँ तुम्हें एक पूर्वनिर्धारित मापदंड पर ही खरा उतरना होता है। जबकि सनातन धर्म में सत्य किसी संस्कृति, समय या व्यक्तित्व की संकीर्ण सीमाओं में बंधा नहीं है। यह ईश्वर के साथ हमारे उस मौलिक, अटूट संबंध को साकार करने के बारे में है जो आदि-अनादि काल से विद्यमान है। यह शरीर, मन और समस्त भौतिक अस्तित्व से परे एक ऐसी स्थिति की प्राप्ति के बारे में है जहाँ परम चेतना का प्रत्यक्ष अनुभव होता है। अब्राहमिक धर्मों ने शाश्वत नरक की आग से लोगों को 'बचाने' के नाम पर युद्धों का क्रूर सहारा लिया, औपनिवेशिक शासन थोपा और मिशनरियों को हथियार बनाकर अपने विश्वास का प्रसार किया। अब प्रश्न यह उठता है कि उन करोड़ों आत्माओं का क्या हुआ जिन्होंने अब्राहमिक धर्म की पुस्तकों को कभी पढ़ा ही नहीं था? ऐसा क्यों है कि किसी के पास ईश्वर का संदेश है और किसी के पास नहीं? क्या परमेश्वर हम सभी की परीक्षा एक समान नहीं लेते? सनातन धर्म में किसी न्यायाधीश का निर्णय नहीं है, किसी एक पुस्तक का अध्यानुसरण नहीं करना है। जीवन के किसी भी क्षेत्र से, कोई भी व्यक्ति परम सत्य तक पहुँच सकता है।" जावेद ने धैर्य का मुखौटा पहनकर कहा, "हिंदू धर्म कुछ नहीं होता। वह तो अरब के लोग सिंधु नदी के क्षेत्र के निवासियों को 'हिंदू' कहते थे।" ऐसा प्रतीत होता था कि दो विपरीत दर्शनों के बीच एक भीषण वैचारिक युद्ध छिड़ चुका था। तमन्ना ने अटूट आत्मविश्वास और बेरुखी से जवाब दिया, "शब्द मायने नहीं रखते, हिमालय से कन्याकुमारी तक पैदा होने वाला हर इंसान सनातनी ही है, सनातन जीने का एक तरीका है अब ये बात मूर्खों को कहाँ समझ आएगी!" तमन्ना द्वारा किये गए कटाक्ष से जावेद और शोएब भड़क उठे। शोएब ने अत्यंत तेज़ और आक्रामक स्वर में कहा, "मूर्ख ! जिस धर्म में हज़ारों मूर्तियाँ हों, इतने भगवान कि किसी को समझ ही नहीं आता कि किसकी पूजा करें, और तुम उसे इस्लाम से बेहतर बता रही हो!" तमन्ना का उत्तर ज्ञान की स्पष्टता और आध्यात्मिक गहराई से परिपूर्ण था। "ये इतनी मूर्तियाँ तो बस एक माध्यम हैं। जिसके मन में जो स्वरूप बस जाए, वह उसी मार्ग से अंतिम सत्य, ब्रह्म तक पहुँच सकता है। एक साधारण इंसान से सीधे ब्रह्म की निराकार बात करोगे तो वह क्या समझेगा? इसलिए ये मूर्तियाँ हैं— पहले मूर्तियों का ध्यान लगाओ, उसके बाद मंत्रों का, और अंत में उस निर्विकार ब्रह्म का,

जिसकी तुम भी आराधना करते हो। भगवान तो एक ही हैं, बस नाम अलग-अलग। यही निराकार और साकार के बीच का भ्रामक मतभेद है। हम कहें कि 'हम मूर्ति में भगवान को नहीं मानेंगे, हम स्वरूप में भगवान को नहीं मानेंगे'—हम यह कह सकते हैं कि 'हमारी मूर्ति पूजा में रुचि नहीं है', पर 'हम मानेंगे नहीं'? यह कहकर तो हम स्वयं ब्रह्म के सामर्थ्य पर ही प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं! जो इस पूरे जगत की रचना कर सकता है, क्या वह कोई स्वरूप धारण नहीं कर सकता? अगर हम यह कहें कि 'नहीं कर सकता', तो हमने अपने ब्रह्म को असमर्थ और सीमित बना दिया! फिर वह सर्वोपरि सत्ता कहाँ रही? हाँ, आप यह कह सकते हैं कि 'हमको ब्रह्म के निराकार स्वरूप का चिंतन, उसमें विलीन होना ज़्यादा प्रिय है, हम इसको मानते हैं, सगुण-साकार में हमारा प्रेम नहीं है।' यह स्वीकार्य है, परंतु वह निराकार भी है और वह साकार भी—इस परम सत्य का निर्णय गोस्वामी तुलसीदास ने रामायण में अद्वितीय ढंग से किया है। तमन्ना के मुख से गूढ़ वचन प्रवाहित हुए: "सगुणहि अगुणहि नहीं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा॥ अगुनि अरूप अलख अज जोई। भगत प्रेमबस सगुन सो होई॥" "सगुण और निर्गुण में रत्ती भर भी भेद नहीं है—मुनिजन, पुराण, पंडित और स्वयं वेद भी इसी सत्य का उद्घोष करते हैं। जो परमतत्त्व निर्गुण, निराकार, अव्यक्त और अजन्मा है, वही अपने भक्तों के अगाध प्रेमवश सगुण रूप धारण कर लेता है।" वह आगे बोली: "जो गुणरहित सगुण सोइ कैसें। जलु हिमउपल बिलग नहीं जैसें॥ जासुनाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा॥" तमन्ना के स्वर में अब निर्भीक स्पष्टता थी, "जो निर्गुण है, वही सगुण कैसे हो सकता है? यह ऐसा ही है जैसे जल और ओले में कोई भिन्नता नहीं—दोनों मूलतः जल ही हैं। ठीक वैसे ही, निर्गुण और सगुण एक ही परमसत्ता के दो रूप हैं। जिसका नाम ही भ्रमरूपी अंधकार को मिटाने के लिए सूर्य के समान है, उसके लिए मोह या अज्ञान का प्रसंग कैसे संभव हो सकता है?" जावेद ने दाँतों को भींचकर, खिसियाते हुए कहा, "तुम पागल हो चुकी हो! तुम्हें कभी जन्नत नसीब नहीं हो सकती।" तमन्ना ने अटल धैर्य के साथ पुनः समझाया, "विवाद तभी जन्म लेता है जब हम एक-दूसरे की उपासना पद्धतियों को निम्न ठहराने का प्रयास करते हैं। एक ही परमात्मा, भक्तों को सुख देने के लिए अनेक रूपों में प्रकट होता है। विडंबना यह है कि कुछ लोगों को तो विवाद से ही प्रेम हो जाता है, वे चाहते हैं कि समस्याएँ बनी रहें।" उसके स्वर में अब विश्वास की प्रचंड लहरें उठ रही थीं। जावेद का धैर्य अब पूरी तरह दम तोड़ चुका था, वह चीखते हुए बोला, "इस्लाम ही सच्चा मजहब है! इसके सामने किसी की कोई बिसात नहीं। क़यामत के दिन सिर्फ मुस्लिमों को ही जन्नत नसीब होगी!" तमन्ना ने दृढ़तापूर्वक अपने विचारों को रखा, "अब्राहमिक धर्मों में, ईश्वर और भक्त सदैव अलग ही रहेंगे। भक्त निरंतर अपने पापों से मुक्ति पाने में लीन रहता है ताकि उसे जन्नत मिल सके। परंतु हिंदू धर्म में, आप स्वयं भगवान में विलीन हो सकते हैं, उस अनंत सागर की एक बूँद बन सकते हैं। ईसाई धर्म के मूल में ही पाप की अवधारणा है—इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि हम जन्म से ही स्वभावतः पापी हैं, और प्रायश्चित्त केवल मसीह की मृत्यु तथा पुनरुत्थान में विश्वास के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है। प्रत्येक व्यक्ति को नरक में अनंत काल की सज़ा से बचाया जाना चाहिए, और जब तक आप उनके विश्वास के नहीं होंगे, आपको मुक्ति नहीं मिल सकती। इस्लाम का विचार है कि यदि आप मुसलमान बन जाएँ और मुहम्मद के रहस्योद्घाटन को स्वीकार कर लें तो आप स्वर्ग में प्रवेश कर सकते

हैं। यही वह चीज़ है जो इन धर्मों के अनुयायियों को दुनिया को 'विश्वासियों' और 'गैर-विश्वासियों' में विभाजित करने के लिए मजबूर करती है। इसके विपरीत, हिंदू धर्म सत्य पर एकाधिकार होने का दावा नहीं करता। हालाँकि, हिंदू धर्म यह मानता है कि परम सत्य तक पहुँचने के अनेक, विविध मार्ग हैं।" "अब्बा, आप क्यों इसके साथ व्यर्थ समय गँवा रहे हैं? यह अब काफ़िर हो चुकी है। कल ही मौलवी साहब को बुलवाकर इसे कलमा पढ़वा देते हैं।" शोएब ने क्रोध से अपने पिता जावेद से कहा। जावेद, पहले से ही तैश में उबल रहे थे, और बेटे के संबोधन ने उनके आक्रोश की ज्वाला को प्रचंड कर दिया। वह आगे बढ़े और तमन्ना के गाल पर एक ज़ोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया। सब ने असहाय होकर रोकने का प्रयास किया, पर व्यर्थ। "बदजात! तूने पूरे खानदान का नाम मिट्टी में मिला दिया। तुझे तो पहले ही खत्म कर देना चाहिए था। तुझे हम सिर्फ कलमा ही नहीं पढ़वाएँगे, बल्कि दूसरी शादी भी करवाएँगे। तेरे पास बस एक दिन का समय है, जो सोचना है, सोच ले!" जावेद चिल्लाते हुए बोले, और दोनों वहाँ से मुड़कर जाने लगे। तभी, तमन्ना एक शेरनी की भांति दहाड़ी, उसकी आवाज़ में अदम्य साहस भरा था। "एक दिन क्या, पूरी ज़िन्दगी भी अगर सोचने को मिले तो भी मेरा फैसला नहीं बदलेगा! मैं भी देखती हूँ आप क्या कर पाते हैं!" शोएब ने एक कुटिल मुस्कान के साथ कहा, "बस एक दिन! फिर तेरी सारी अकड़ निकल जाएगी। हम भी देखते हैं तुझे बचाने कौन आता है।" यह कहकर वह चला गया। सब ने नम आँखों से तमन्ना को समझाया, "बेटी, उनकी बात मान क्यों नहीं लेती? वो तुम्हारा भला ही तो सोच रहे हैं। क्या अकेली बाकी ज़िन्दगी काटेगी? हमारे मजहब में क्या कमी है? देख बेटी, अपने अब्बू और भाई की बात मान ले।" "अम्मी, तुम नहीं समझोगी। मुझे अकेला छोड़ दो!" तमन्ना अपनी माँ से मुँह मोड़कर बैठ गई, उसकी आँखों में अथाह पीड़ा और निश्चय था। सब निराश होकर दूसरे कमरे में रोहन के पास चली गई, अपने भीतर एक अनकहे दर्द को समेटे हुए।

आधी रात को तमन्ना की नींद उचट गई! उसके जेहन में पिता की चेतावनी एक बिजली की तरह गूँज रही थी। जयेश तो जा चुका था, और अब बारी थी कृष्ण कन्हैया की भक्ति छीनने की। उसे पता था, उसके पिता, भेड़ियों की विशाल भीड़ जुटाकर उस पर कभी भी हमला कर सकते हैं। यह कैसा लोकतंत्र था, जिसने अधिकारों के नाम पर सिर्फ धोखा बेचा था, एक शर्मनाक झूठ! घटना घटने के बाद, यह खोखला लोकतंत्र केवल क्षतिपूर्ति का नाटक करता है, जिसके लिए भी खुद ही जूते घिसने पड़ते हैं! न्याय पाने के लिए वकील को पैसे क्यों दें, जब राज्य की नाकामियाँ ही हमें पीड़ित बनाती है? सरकारी कर्मचारी गलत जानकारी दर्ज करे, या FIR लिखवाने के लिए भी दर-दर भटकना पड़े - यह कहाँ का न्याय है? यह एक घिनौना मज़ाक है! तमन्ना ने घर में यह सब देखा था। उसके पिता की इलाके में वोटों पर ऐसी पकड़ थी कि पुलिस भी उनके सामने दुम हिलाती थी! उसे पता था, पुलिस से कुछ दिनों की सुरक्षा मिल सकती है, पर पिता घात लगाए शिकारी की तरह बैठे थे। जयेश के प्रभाव के कारण ही वे उसका बाल भी बाँका नहीं कर पाए थे, पर अब उनकी हिम्मत बेशर्म हो चुकी थी, वे चुप नहीं बैठेंगे। वह अपने पिता और उनके मौलाना की हिंसक प्रवृत्ति से अच्छी तरह वाकिफ थी। उसे याद था मोहल्ले की लड़कियाँ कैसे एसिड के आतंक के साये में जीती थीं, कैसे चौदह-पंद्रह साल की बच्चियों पर ज़बरदस्ती शादियाँ ठोक दी जाती थीं अधेड़ उम्र के

लोगों से, और पुलिस, सिस्टम, संविधान सब के सब नपुंसक बने देखते रहते थे! इस समाज की कुरीतियों का सबसे ज़्यादा शिकार स्त्रियाँ ही थीं, हमेशा से! "एक काम कर सकती हूँ," तमन्ना खुद से बड़बड़ाई नहीं, उसने एक संकल्प लिया, "अपने वकील को मेल कर देती हूँ कि रोहन का ख्याल 18 साल होने तक रखें। उसके बाद वही कानूनी उत्तराधिकारी होगा। रोहन पर मेरे परिवार का कोई अधिकार नहीं होगा।" उसने मोबाइल उठाया और वकील को मेल करने लगी। मेल भेजकर उसने फोन क्रोध से बिस्तर पर फेंक दिया। तमन्ना ने अपने चेहरे को हथेलियों से ढककर रोना शुरू कर दिया। जो भी सपने उसने संजोए थे, तार-तार हो चुके थे! हज़ारों दलीलें भी उसके मन को बहला नहीं सकती थीं। कुछ देर रोने के बाद, एक भयानक ज्वाला के साथ वह बिस्तर से उठी और रोहन के कमरे में गई। उसने रोहन को चूमा और उसका सर सहलाने लगी। तमन्ना के कुछ आँसू रोहन के कोमल गालों पर गिरे। जब रोहन जागने लगा, तो तमन्ना तेजी से कमरे से निकल गई। वह घर से निकलकर अंधेरे में डूबी मुख्य सड़क पर पहुँच गई।

२. अध्याय - आशीर्वाद और अभिशाप की द्विविधा: नया मार्ग

समय के हाथों इंसान कितना मजबूर हो सकता है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। और जब यह मजबूरी सहने की सारी हदें पार कर जाती है, तो इंसान के मन में आत्महत्या के काले विचार जन्म लेने लगते हैं, एक ऐसी मुक्ति की इच्छा जो जीवन से भी बड़ी लगने लगती है। आत्महत्या तुम्हारे देह के कष्टों को शांत कर सकती है, पर आत्मा को मिले गहरे आघातों का वह कोई समाधान नहीं। वह आत्मिक पीड़ा तुम्हारे साथ हमेशा-हमेशा रहेगी, क्योंकि यह शरीर तो मात्र एक आवरण है। आवरण बदलने से मन का घाव कैसे भरेगा? ऐसी ही चोटिल आत्माओं के बारे में कहा जाता है कि वे भटकती रहती हैं। तमन्ना यह गूढ़ सत्य नहीं समझ सकी। वह एक चलते ट्रक के सामने अंधे विश्वास में कूद पड़ी, इस भ्रम में कि जीवन के सारे कष्ट यहीं समाप्त हो जाएँगे, और अगर प्रभु ने चाहा, तो उस अदृश्य पुल के उस पार जयेश से उसकी मुलाकात होगी। ट्रक और बाकी गाड़ियाँ एक-एक करके तमन्ना के ऊपर से गुज़र रही थीं, पर उसे कुछ भी नहीं हुआ। सभी गाड़ियाँ उसे बिना छुए निकल गईं। तभी उसे बाँसुरी की दिव्य, सम्मोहित कर देने वाली आवाज़ सुनाई दी। तमन्ना उठकर खड़ी हो गई। गाड़ियाँ अब भी उसके आर-पार जा रही थीं, जैसे वह स्वयं अदृश्य हो गई हो। एक अकल्पनीय चमत्कार घट चुका था, और बाँसुरी की आवाज़ सुनकर तमन्ना समझ गई कि कन्हैया की असीम कृपा हो चुकी है। अब उसके जीवन में एक नई यात्रा, एक अभूतपूर्व अनुभव, एक उज्ज्वल प्रकाश आ चुका था। इसी नई यात्रा के लिए तमन्ना बाँसुरी की आवाज़ की तरफ अपने कदम बढ़ा देती है। सड़क किनारे कुछ पेड़ थे, और बाँसुरी की आवाज़ उसी तरफ से आ रही थी। तमन्ना उन्हीं पेड़ों के बीच आगे बढ़ती है। उसकी आँखों में एक अनूठी चमक है, आशा की स्वर्णिम किरण है। हर कदम में एक अटूट विश्वास है कि अब जो होगा, कन्हैया की इच्छा से, केवल शुभ ही होगा! कन्हैया स्वयं आए हैं! हज़ारों सालों में कितनों के लिए आए? आज मेरे लिए आए! तमन्ना भावविभोर हो कर, लगभग दौड़ते हुए तेज़ चलने लगती है। उसकी आँखों से खुशी के आँसुओं की धारा फूट पड़ती है, जैसे कोई झरना बह रहा

हो। मीरा को तो खुद में ही समाहित कर लिया था, और मेरे लिए स्वयं आए हैं। मेरा जयेश अब मुझे वापस मिल जाएगा—इसी अदम्य आशा के साथ तमन्ना लगभग पाँच मिनट में वहाँ पहुँच जाती है जहाँ एक पेड़ की डाली पर बैठे मनमोहक कन्हैया बाँसुरी बजा रहे हैं। तमन्ना पूरी तरह से मंत्रमुग्ध हो जाती है। आज तक सिर्फ सुना था, पर जब आज सजीव दर्शन हुआ तो समझ आया कि जो सुना था, वह तो कुछ भी नहीं था, एक तुच्छ कल्पना मात्र! माथे पर मोरपंख, कानों में कुंडल, गले में वैजयंती माला और हाथों में बाँसुरी धारण किए हुए, वे एक अलौकिक छवि प्रस्तुत करते हैं। उनकी बाँसुरी की मधुर ध्वनि पूरे संसार में प्रेम और आनंद का साक्षात् संचार कर रही है। इस रूप में वे प्रेम और आकर्षण के सर्वोच्च प्रतीक हैं। कृष्ण को एकमात्र पूर्ण अवतार माना गया है। महावीर और बुद्ध ने जब ज्ञान प्राप्त किया तो उनका कोई व्यक्तित्व नहीं बचा, पर उनकी साधना पद्धति से उनका एक व्यक्तित्व मालूम पड़ता है। परन्तु कृष्ण समस्त साधना पद्धति की बात करते हैं, और यह विशेषता उन्हें सर्वोच्च बनाती है। इसलिए कृष्ण को जिस रूप में देखना चाहें, देख सकते हैं। तमन्ना ने कृष्ण को किशोर रूप (वंशीधारी) के रूप में देखा तो उसी रूप में पाया। भागवत कुछ और अर्थों में देखते हैं, कवि कुछ और अर्थों में देखते हैं। राम को हमने पूर्ण अवतार नहीं माना, क्योंकि उनके जीवन की एक व्यवस्था है। कृष्ण ने कोई सीमा रेखा नहीं खींची थी, इसलिए वे हमसे सीधे, सहज रूप से जुड़ जाते हैं। कोई मर्यादा नहीं, कोई सीमा नहीं—इसलिए तो वे पूर्ण हैं! राम के संदर्भ में भ्रांति नहीं हो सकती, वे उम्मीद के मुताबिक ही काम करेंगे पर कृष्ण के मामले में कुछ भी तय नहीं है कि वे क्या करेंगे, वे बाँसुरी बजाएँगे या गोपियों के साथ नृत्य करेंगे, माखन चुरा लेंगे, नाग के फन पर नृत्य करेंगे, गोवर्धन पर्वत उठा लेंगे, गोपियों के वस्त्र चुरा लेंगे, सुदर्शन चक्र चला देंगे, रुक्मिणी को घर से भगा ले जाएँगे, मथुरा से द्वारका चले जाएँगे और यदुवंशियों को लड़ता छोड़ इस मृत्युलोक से विदा हो जाएँगे—ऐसी हज़ारों घटनाएँ हैं, जो उनकी अप्रत्याशितता दर्शाती हैं! पूर्ण व्यक्ति भविष्यवाणी के बाहर होता है। पूर्ण व्यक्ति को समझना कठिन होगा, इसलिए कृष्ण को मानने वाले, प्रेम करने वाले बहुत हैं, पर सही अर्थों में मानने वाले लगभग नगण्य हैं। क्योंकि कृष्ण को मानना अत्यंत कठिन है। जो भी मानता है, वह भी चुन लेता है—"मेरे बाल गोपाल," भले वे युवा कृष्ण की बात ही नहीं करते हों, वे खतरनाक मालूम पड़ते हैं, भयावह! केशव के लिए युवा कृष्ण ही सबसे दिव्य थे। यौवन के पूरे राग-रंग में नाचता हुआ। केशव कहते हैं, "जो परमात्मा राग-रंग में पूरा नहीं नाच सके, वह अभी कमज़ोर है! उसे भी भय है क्या? आदमी भयभीत हो तो ठीक है, पर परमात्मा को किस बात का डर?" केशव ने बाल कृष्ण को छोड़ युवा कृष्ण के लिए गीत रचे। कृष्ण इतने विराट हैं कि उन्हें पूरा आत्मसात करने की हिम्मत न के बराबर होगी। हर कोई थोड़ा-थोड़ा चुन लेता है। जब भी कोई चुनेगा तो खंड करेगा, और खंडित कृष्ण का कोई अर्थ नहीं—अखंड कृष्ण का ही कुछ अर्थ है! कौन सोच सकता है कि जो आदमी अपने कोमल हाथों से बाँसुरी बजाता हो, वह सुदर्शन चक्र जैसा अमोघ अस्त्र लेकर खड़ा हो जाएगा? हम यह सोच भी नहीं सकते कि बुद्ध और महावीर चक्र लेकर खड़े हो जाएँगे। श्रीकृष्ण आँखें बंद करके बाँसुरी बजाने में पूरी तरह लीन हैं। तमन्ना भक्ति-भाव की पराकाष्ठा से विभोर है। वह मुग्ध भाव से बस देखे जा रही है। उसकी आँखों से आँसुओं की अविरल धारा बह रही है। कुछ देर बाद श्रीकृष्ण डाली से नीचे कूद पड़ते हैं। तमन्ना उन्हीं के चरणों में ढह पड़ती है। "कहाँ जा

रही थी?" श्रीकृष्ण ने एक मनमोहक मुस्कान के साथ पूछा। "आपको तो सब पता है, आप मेरे लिए आए, मैं कृतार्थ हो गई, धन्य हो गई! परन्तु आपने मेरे जयेश के साथ ऐसा क्यों किया? मैं आपकी भक्ति क्यों करती थी? ताकि मैं सदा सुहागन रह सकूँ, परन्तु आपने तो मेरी माँग ही उजाड़ दी, मेरा सब कुछ छीन लिया! मुझे मेरा जयेश लौटा दीजिए। मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं मरते दम तक सुहागन रहूँ और आपकी भक्ति करती रहूँ।" तमन्ना ने फूट-फूटकर रोते हुए, हृदय विदारक स्वर में विनती की। "मेरे लिए यह असंभव नहीं है, पर तुम्हें पता है न मैंने अभिमन्यु को नहीं बचाया, मैंने बर्बरीक को रोका, मैंने समय से पहले सूर्यास्त कर दिया और फिर सूर्य को वापस ले आया। पांडवों को मैं पूरी पृथ्वी ऐसे ही दे सकता था, परन्तु मेरे होते हुए भी उन्हें भी युद्ध करना पड़ा तब जाकर उन्हें हस्तिनापुर मिला। तुम जो माँग रही हो उसके लिए भी तुम्हें एक युद्ध लड़ना होगा। क्या तुम यह कर सकती हो?" श्रीकृष्ण ने अपनी गहन मुस्कान के साथ कहा। "युद्ध! कैसा युद्ध?" तमन्ना घबराहट से काँप उठी। "घबराओ नहीं, युद्ध का तात्पर्य यह है— कर्म युद्ध। तुम्हें स्वयं अपने पति को बचाना होगा, अगर बचा सकती हो तो बचा लो, परन्तु विधि का विधान क्या है तुम्हें पता है न?" श्रीकृष्ण ने अपनी चिरपरिचित रहस्यमयी, गंभीर मुस्कराहट के साथ कहा। तमन्ना की आँखों में एक नई, दृढ़ चमक आ चुकी है। उसे एक आशा की किरण दिखी है। "जैसे सावित्री ने सत्यवान को काल से बचाकर वापस ले आई थी, वैसे ही मैं जयेश को वापस ले आऊँगी!" श्रीकृष्ण तमन्ना की बातों को सुनकर एक गहरी मुस्कान के साथ मुस्कुरा रहे हैं। "मैं काल नहीं श्रीकृष्ण हूँ, तुमने तो छलिया को ही छलने की योजना बना ली। मेरा काम है धर्म की स्थापना करना, अन्याय का नाश करना! काल की तरह मैं शब्दों से नहीं, बल्कि अपने लक्ष्य से बंधा हूँ, अपने भक्तों की अडिग भक्ति और प्रेम से बंधा हूँ! इसलिए हे तमन्ना, मुझे काल समझने की भूल मत करना। जहाँ तक तुम्हारी इच्छा का सवाल है, वह तो मैं अवश्य पूरा करूँगा। अब मुझे यह बताओ कि समय में कब वापस जाना चाहती हो?" "जिस दिन मेरे पति की हत्या हुई थी, उसकी सुबह मैं समय में वापस जाना चाहती हूँ ताकि मैं उन्हें बचा सकूँ।" तमन्ना ने अत्यंत विनती के साथ कहा। "मैं तुम्हें समय में वापस भेज दूँगा और तुम्हें सब कुछ याद भी रहेगा, किन्तु तुम किसी से भी यह बात बता नहीं सकती हो। अगर बताया तो वापस तुम इसी समय पर लौट आओगी। मेरे समक्ष।" "मुझ पर यह आपकी असीम कृपा होगी!" "ऐसा ही होगा, तथास्तु!" श्रीकृष्ण क्षण भर में अंतर्ध्यान हो जाते हैं।

10 जुलाई 2022, सुबह के तीन बजे, तमन्ना की नींद नहीं, बल्कि उसकी आत्मा चीख उठी! वह खौफ में डूबी थी। इतनी सुबह पति को कैसे जगाए? क्या कहेगी? "आज तुम्हारी हत्या होने वाली है?" और फिर जो सवालों का सैलाब आएगा, उसका जवाब क्या देगी? हर एक पल एक युग-सा भारी लग रहा था। भविष्य जानना एक क्रूर पहेली है। तुम उसे बदल सकते हो या नहीं? यदि तुम बदल नहीं सकते, तो तुम शक्तिहीन हो। तुम जानते हो कि तुम सीढ़ी से गिरोगे और तुम्हारी गर्दन टूट जाएगी, पर तुम खुद को रोकने में पूरी तरह असहाय हो। यह ज्ञान ही तुम्हारे जीवन को नरक बना देगा, एक जीती-जागती यातना! हाँ, यह जानकर थोड़ी राहत ज़रूर मिलती है कि जिस विमान में तुम बैठ रहे हो, वह दुर्घटनाग्रस्त नहीं होगा। लेकिन अगर तुम भविष्य बदल सकते हो और तुम ऐसा करते हो, तो परिवर्तन के

बाद, जो तुमने देखा था, वह अब भविष्य नहीं है। अब तुम्हें नई, भयावह अनिश्चितताओं के साथ जीना होगा। श्रीकृष्ण ने तमन्ना को भविष्य बदलने का मौका तो दिया है, पर भाग्य किस करवट बैठेगा, यह तो सिर्फ़ समय ही बता सकता है! हम सब भविष्य जानना चाहते हैं, पर अगर सच में कोई हमें हमारा पूरा भविष्य बता दे, तो हमारा वर्तमान एक असहनीय बोझ, एक अभिशाप बन जाएगा। यह जीवन यात्रा, जिसका हम आनंद ले सकते हैं, एक दुःस्वप्न बन जाएगी। तमन्ना पूजा घर में, प्रभु श्रीकृष्ण के सामने बैठी, पर उसका मन तूफ़ानी समुद्र-सा विचलित था। अगर तमन्ना को पता होता कि यह क्षण बिताना इतना कठिन होगा, तो वह वर्तमान में थोड़ी देर से आती। पूजा घर से निकलकर वह वापस कमरे में लौटी। सुबह के 04 बजकर 15 मिनट हुए थे। क्या करे? जयेश को जगा दे? नहीं, नहीं, उसे शक हो जाएगा, उसके प्लान पर पानी फिर जाएगा! तमन्ना सो भी नहीं सकती थी, क्योंकि सबको लगेगा कि उसकी तबीयत खराब है। वह स्नान करने चली गई। सबा के उठने से पहले उसने तेजी से पूजा समाप्त की। यह सब करते-करते सुबह के 5 बज गए। अब तमन्ना का धैर्य का बाँध टूट गया! वह जयेश को जगाने लगी। "उठिए! जल्दी उठिए! मुझे आपसे कुछ अत्यंत महत्वपूर्ण बात करनी है!" तमन्ना ने अपनी सारी भावनाओं पर कठोर लगाम कसकर प्यार से कहा। "क्या बात है? आज तुम्हारी पूजा जल्दी खत्म हो गई। मुझे कुछ देर और सोने दो।" जयेश ने नींद में बेफिक्री से कहा। "मुझे आपसे कुछ अति-आवश्यक बात करनी है।" "क्या यह बात एक घंटे बाद नहीं हो सकती?" जयेश ने नींद में अल्हड़पन से कहा। "नहीं, मुझे अभी! इसी क्षण! बात करनी है।" तमन्ना ने अटल दृढ़ता से कहा। जयेश उठकर बैठ गया। "अब बोलो। क्या बात है।" "आप मेरा ख्याल नहीं रखते हैं। आप कभी मुझे घुमाने नहीं ले जाते।" "तुम्हें ही पूजा से फुर्सत नहीं मिलती। तुम बोलो तो इस वीकेंड घूमने चलते हैं।" "इस वीकेंड नहीं, मुझे आज ही, इसी पल जाना है।" "आज कैसे हो पाएगा? आज तो बिज़नेस के सिलसिले में एक अहम मीटिंग है। अगर मैं मिलने नहीं गया तो भारी नुकसान हो जाएगा।" "नुकसान-फायदा तो ज़िंदगी भर लगा ही रहता है, पर आज आपको मेरे साथ जाना ही होगा, आपको मेरी सौगंध!" "क्या हो गया है तुम्हें? आज तुम्हारी पूजा भी जल्दी खत्म हो गई और अब अचानक घूमने की बात।" जयेश को अहसास हो रहा था कि कुछ तो गड़बड़ है। जयेश के शक को दूर करने के लिए तमन्ना मुस्कुरा कर उसके नजदीक गई। "मैं आपके साथ घूमने नहीं जाऊँगी तो किसके साथ जाऊँगी?" जयेश भी तमन्ना को अपनी बांहों में भर लेता है। "ठीक है, आज सुबह मुंशी जी को आने दो, उनसे मिलकर हमलोग निकल जाएंगे। अब तो खुश हो न? मैं थोड़ा सो लूँ?" जयेश ने तमन्ना से आग्रह भरा निवेदन किया। "ठीक है, सो लीजिए।" ऐसा कह कर तमन्ना कमरे से चली गई। सुबह के 6 बजकर 10 मिनट हो गए थे। तमन्ना नाश्ता बनाने में लग गई ताकि निकलने की तैयारी जल्दी हो सके। घर के नौकर-चाकर इतनी सुबह तमन्ना को किचन में देख, उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें उभर आईं। "मेमसाहेब, आप रहने दीजिए, हम सब कर लेंगे।" बाबर्ची ने शालीनता से आग्रह किया। "आज हमें हर हाल में जल्दी निकलना है, इसलिए मैं भी हाथ बँटाऊँगी।" तमन्ना ने गंभीरता से कहा और सभी चुपचाप काम करने लगते हैं।

जयेश ड्राइंग रूम में अखबार पढ़ रहा था तभी वहां मुंशी जी आये। "क्या बात है मुंशी जी, आज जल्दी आ गए?" जयेश ने आश्चर्यचकित होकर पूछा। "बहू का फ़ोन आया था, जल्दी आने को कह रही थीं।" मुंशी जी ने बताया तभी तमन्ना वहाँ आ जाती है। "हाँ, हाँ, मैंने ही बुलाया है! आज ये यहीं नाश्ता करेंगे।" जयेश अवाक रह गया। तमन्ना घड़ी देखती है। सुबह के आठ बज चुके थे। जयेश डाइनिंग टेबल पर बैठता है। "हम लोग जाएँगे कहाँ? ये तो बताया ही नहीं।" तभी वहाँ सबा आती है। "कहाँ जाने की बातें हो रही हैं?" सबा ने पूछा। "तमन्ना को अचानक घूमने का शौक चढ़ गया है, बोलती है आज ही जाना है।" जयेश ने अपनी विकट परिस्थिति ज़ाहिर की। "यह अचानक क्या हुआ? और कहाँ जाना है? कितने दिन के लिए जाना है? मुझे तो बताना चाहिए था। यहाँ रोहन को सर्दी-जुकाम हो गया है, इसे मैं अकेले कैसे सँभालूँगी?" सबा ने बिना रुके, सवाल की झड़ी लगा दी। "माँ, घर के नौकर-चाकर यहीं रहेंगे। रोहन को तुम अपनी नानी माँ के नुस्खों से ठीक कर लो, पर कृपा करके अब कोई सवाल मत पूछो!" तमन्ना ने तीखे स्वर में, झुंझलाते हुए कहा। सबा और जयेश एक-दूसरे का चेहरा देखते हैं। दोनों तमन्ना के इस अभूतपूर्व बदले हुए रूप से स्तब्ध थे। "मैं एक सवाल पूछूँ?" जयेश ने प्यार से, पर सतर्कता से पूछा। "हाँ, पूछिए!" तमन्ना ने तपाक से, बिना सोचे कहा। "मैं कुछ पैकिंग कर लूँ।" "जो भी करना है कीजिए, पर दस बजे तक हम लोग हर हाल में निकल जाएँगे।" ऐसा कहकर तमन्ना अपने कमरे में चली जाती है।

तमन्ना और जयेश घर से निकल ही रहे थे कि कविता रोते-धोते घर के अंदर आई। तमन्ना सीधे कविता के पास पहुँची, मानो उसका ही इंतज़ार कर रही हो। "कविता, तुम अपनी बात मेरी माँ से कर सकती हो। घबराओ मत, संजीव तुम्हारी हर बात मान लेगा।" तमन्ना अपना बैग लेकर बाहर निकल गई, जयेश उसके पीछे-पीछे चल रहा था। किसी को समझ नहीं आया कि आखिर हुआ क्या है। "बेटी, तुम अंदर आओ। आज सुबह से ही अजीब हरकतें कर रही है।" सबा ने प्यार से कविता के कंधे पर हाथ रखकर कहा। दोनों गाड़ी की तरफ बढ़े, तभी ड्राइवर ने दरवाज़ा खोला। "आज गाड़ी तुम नहीं, साहब चलाएँगे।" ड्राइवर और जयेश एक-दूसरे का चेहरा देखने लगे। ड्राइवर किंकर्तव्यविमूढ़ होकर जयेश को देखता है, जयेश हाँ में अपनी गर्दन हिलाकर ड्राइवर को जाने का इशारा करता है। ड्राइवर गाड़ी की चाभी जयेश को दे देता है। जयेश बहस नहीं करना चाहता था, क्योंकि तमन्ना के व्यवहार से वह पहले ही बेहद परेशान था।

जयेश गाड़ी चला रहा था। माहौल को हल्का करने की कोशिश में उसने तमन्ना को छेड़ा, "यह पहली बार है जब मैंने किसी महिला की इतनी कम पैकिंग देखी है, बस एक छोटा-सा बैग! पिछली बार जब हम घूमने गए थे, तो तीन बड़े सूटकेस लेकर निकली थी तुम।" पर तमन्ना का ध्यान कहीं और ही था। वह बेचैनी से, बार-बार पीछे मुड़कर देख रही थी। "कोई पीछा नहीं कर रहा," जयेश ने बुझी हुई आवाज़ में कहा। "क्या बात है? मुझे कुछ बताओगी? पिछले एक घंटे से मैं बस गाड़ी चला रहा हूँ। कहाँ जाना है? क्या करना है? कुछ तो बताओ।" जयेश की आवाज़ में अब साफ़ झुंझलाहट थी। ऐसी चलने के बावजूद तमन्ना को पसीना आ रहा था; वह भीतर से काँप रही थी। उसने अपनी घड़ी देखी। "छह घंटे में हम कहाँ पहुँच

जाएँगे? लगभग 280 किलोमीटर यहाँ से।" तमन्ना ने काँपती हुई आवाज़ में पूछा। "पर इतनी दूर जाना ही क्यों है? उससे अच्छा तो पास की पहाड़ियों में अपने दोस्त का रिसॉर्ट है, वहाँ चलते हैं," जयेश ने अधीर होकर कहा।

"सवाल मत पूछो, बस चलते रहो।" "ठीक है बाबा, पर एक चाय तो पी लें।" "कुछ नहीं करना है, बस चलते रहो।" जयेश को अब गहरी चिंता ने घेर लिया था। उसका शक अब एक कड़वे विश्वास में बदल चुका था कि तमन्ना कोई अति-गंभीर बात छिपा रही है। "मुझे मारने का तो इरादा नहीं है?" जयेश ने एक फीकी, मजबूर-सी मुस्कान के साथ कहा। "गाड़ी रोको! गाड़ी रोको!" तमन्ना चीख पड़ी, उसकी आवाज़ में आतंक और दहशत भरी थी! जयेश ने घबराकर गाड़ी सड़क किनारे लगा दी। तमन्ना जयेश से लिपट गई और हृदय विदारक स्वर में, बिलख-बिलखकर रोने लगी। "मरने की बात मत करो!" तमन्ना असहनीय पीड़ा से छटपटा रही थी, मानो कोई जीव अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रहा हो। "क्या हो गया है तुम्हें? क्या बात है? तुम इस तरह से व्यवहार क्यों कर रही हो?" जयेश के चेहरे पर गहरी चिंता की लकीरें खिंच गईं। "मैं कुछ नहीं बता सकती। मैं कुछ नहीं बता सकती।" तमन्ना के इन शब्दों ने जयेश को अब उसकी मानसिक स्थिरता के प्रति भयभीत कर दिया। उसे लग रहा था कहीं वह किसी मानसिक बीमारी से तो ग्रस्त नहीं हो गई, परन्तु श्रीकृष्ण के अतिरिक्त कोई भी उसकी वर्तमान मनःस्थिति की भयावह गहराई की कल्पना भी नहीं कर सकता था। ऐसा लग रहा था जैसे यह वरदान, यह अवसर भी एक शाप बन गया है, ठीक वैसे ही जैसे भीष्म की इच्छा-मृत्यु के वरदान के साथ हुआ था। किसने सोचा था कि उन्हें महाभारत जैसा भीषण युद्ध लड़ना होगा, अपने बच्चों के शवों को देखना होगा, अपने ही घर का क्लेश, अपनी मर्यादा को तार-तार होते देखना पड़ेगा? अगर उन्हें यह सब पहले से पता होता, तो वे शायद इस वरदान को लौटा देते। तमन्ना कुछ कह नहीं सकती थी। इस वरदान के मिलने पर जितनी खुश थी, अभी जयेश को वापस खोने के डर से उसकी रूह तक काँप जाती है, उसकी साँसें अटकने लगती हैं। "मैं जो कहूँगी वह करोगे न? बोलो, करोगे न?" "हाँ, करूँगा।" "मैं तुम्हें कुछ नहीं होने दूँगी। अब जल्दी चलो यहाँ से, जितनी दूर जा सकते हैं, चलो, भागो!" जयेश ने गाड़ी स्टार्ट की और आगे बढ़ गया। तमन्ना की सिसकियाँ, उसकी घबराहट, उसकी तीव्र तड़प अब जयेश भी अपनी आत्मा में महसूस कर पा रहा था। लगभग एक घंटे तक जयेश चुपचाप गाड़ी चलाता रहा। "घाटी शुरू होने वाली है, कुछ खा लें, दोपहर भी हो चुका है।" "एक दिन नहीं खाने से कुछ बिगड़ नहीं जाएगा, आप बस चलते रहिए।" जयेश ने कोई जवाब नहीं दिया। घाटी में प्रवेश करने के कुछ देर बाद आगे गाड़ियों की एक लंबी कतार दिखी। "लगता है आगे सड़क जाम है," जयेश ने धीमे, निराशा भरे स्वर में कहा। "पता करो क्यों जाम है?" तमन्ना ने आतंकित होकर पूछा। जयेश ने गाड़ी कतार में खड़ी कर दी। वह गाड़ी से उतरकर अगले ड्राइवर से बात कर रहा था, तमन्ना उसे एकटक, व्याकुल नज़रों से देखते हुए नाखून चबा रही थी। जयेश वापस आकर बैठ गया। तब तक उसकी गाड़ी के पीछे भी गाड़ियाँ खड़ी हो चुकी थीं। सड़क लगभग पूरी तरह से अवरुद्ध हो गया था। "क्या हुआ?" तमन्ना ने बेचैनी से पूछा। "भूस्खलन हुआ है, कुछ देर में रोड क्लियर हो जाना चाहिए। वापस चलें?" जयेश की आवाज़ में रत्ती भर भी उत्साह नहीं था, केवल

गहरी निराशा थी। "नहीं! वापस नहीं जा सकते! कुछ देर इंतज़ार करते हैं। घर से जितना दूर हैं, उतना अच्छा है," तमन्ना के स्वर में एक अटल दृढ़ता थी, जिसे तोड़ा नहीं जा सकता था।

जयेश की मृत्यु होने वाली थी, पर तमन्ना तो जीते-जी मर रही थी, हर एक पल, तिल-तिल तड़प रही थी। जयेश तो एक पल में मरेगा, उसे उसी पल का कष्ट भोगना है, परन्तु तमन्ना के लिए एक-एक पल दुःसह्य हो चुका था। तमन्ना भयभीत होकर अपनी सीट पर बैठी थी, इस इंतज़ार में कि कब यह जाम छूटे और फिर से दूर जाने की यात्रा प्रारम्भ हो। माथे पर पसीने की बूंदों की लड़ी बन गई थी, जिसे देख जयेश को भी चिंता हो रही थी। मृत्यु का एक बार स्मरण भी आ जाए तो इस सारे जीवन से प्राण निकल जाते हैं। इस जीवन का अर्थ तभी तक है जब तक कि हमने मृत्यु का विचार नहीं किया। जब तक मृत्यु का बोध नहीं हुआ, तभी तक इस जीवन का खेल है, तभी तक सपनों का महल है। कागज़ की नावें तैराए जाते हैं, बनते जाते हैं कागज़ के महल। मृत्यु का स्मरण आते ही सब ढह जाता है। तमन्ना के स्वप्न बड़े थे। अभी वह युवा है। उसकी कामनाएँ बड़ी थीं, इच्छाएँ अदम्य थीं। उसका मन संसार में अपने पंख फैलाने का था लेकिन सब तमन्ना की आँखों के समक्ष खंडहर हो गया था। सारी कामनाएँ तिरोहित हो गईं। मौत ने एक झपट्टा मारा और सब व्यर्थ हो गया। मौत पर बात समाप्त तो नहीं हो जाती, किन्तु यह बात तमन्ना को अभी कोई नहीं समझा सकता। उसका एकमात्र लक्ष्य है जयेश को बचाना। अगर किसी को इसी जीवन में मौत दिखाई दे जाए तो दूसरा जीवन तभी शुरू हो जाता है। तमन्ना इसको स्वीकार नहीं कर पा रही कि क्या फर्क पड़ता है जयेश की मृत्यु आज आए, 10 साल बाद आए, 40 साल बाद आए, पर आएगी ज़रूर। सवाल ये है कि, जीने का स्वाद कहाँ मिल सका? इस स्वाद को कौन छोड़ना चाहता है? मृत्यु है, यह तीर हृदय में चुभ जाए तो संसार व्यर्थ हो जाता है और संन्यास सार्थक हो जाता है। तमन्ना हार नहीं मानने वाली। वह अपने सुहाग को बचा कर रहेगी, उसने प्रण किया है। उसने अपने प्रभु की भक्ति की है। पहले भी महिला के सतीत्व ने मौत को हराया है; तमन्ना भी हरा कर रहेगी। वह नहीं जानती या जानना नहीं चाहती है कि मौत से वही मिटता है जो झूठ था। मौत से वही मिटता है जो भ्रामक है। मौत से सिर्फ सपने मिटते हैं, पर सत्य नहीं मिटता। सवाल यह है कि हमारे लिए सत्य बड़ा है या सपना। आम इंसान तो सपना देख कर ही जी रहा है। मृत्यु सामने हो तो भगवान के अलावा कोई मार्ग भी तो नहीं। तमन्ना ने भी अपना आँचल भगवान के सामने ही फैलाया और भगवान ने उसे एक मौका भी दिया है। मृत्यु न होती तो कोई ईश्वर के चरणों में जाता भी नहीं। मृत्यु न होती तो धर्मस्थल न होते। मृत्यु न होती तो धर्म न होता। मृत्यु है तो धर्म का विचार उठता है, मृत्यु जगाती है, चेताती है। नहीं तो हमारी मूर्छा बनी ही रहती। मृत्यु न होती तो फिर कौन प्रश्न करेगा? कौन ध्यान करेगा? मृत्यु अपूर्व है। मृत्यु अमंगल नहीं है, मृत्यु में मंगल छिपा है। मृत्यु दुश्मन नहीं परन्तु हम सारा जीवन उसे दुश्मन ही समझते हैं। जीवन असली दुश्मन है, जीवन तो सुला देती है और मृत्यु जगा देती है। जीवन तो सोये-सोये निकल जाता है, मौत आती है, झकझोर देती है। सब धूल झर जाती है, विचारों की धूल, वासना की धूल। पुनर्विचार करना होता है। फिर से किसी दूसरे जीवन के आधार रखने होते हैं जिसे मौत न मिटा सके। उस जीवन का नाम मोक्ष है। संसार, एक ऐसा जीवन जिसे मौत छीन लेती है। निर्वाण, ऐसा जीवन जिसे मौत नहीं

छीन पाती। तमन्ना और जयेश पास बैठे हैं परन्तु दोनों के विचार अभी कोसों दूर हैं। समय बीतता जाता है। दो घंटे बीत जाते हैं। जितने लोग हैं उतनी दुनिया हैं, हर कोई अपनी दुनिया से घिरा है। तमन्ना और जयेश भी अपनी दुनिया से घिरे हैं। तमन्ना यह सोच रही है कि शाम का समय आने वाला है और सुरक्षित जगह चला जाए। जयेश सोच रहा है कि कैसे यह जाम खत्म हो और यहाँ से आगे बढ़ा जाए। शाम के 4:30 बज जाते हैं।

कभी-कभी आशीर्वाद अभिशाप के रूप में आते हैं। इसीलिए अभिशाप को भी कभी एकदम से ठुकराना नहीं चाहिए; कौन जाने अभिशाप में ही वरदान छिपा हो। जीवन भर की पूजा-अर्चना के बाद भी तमन्ना को कृष्ण कन्हैया के दर्शन की कोई संभावना नहीं थी। ऐसे ही पूजा करते-करते यह जीवन समाप्त हो जाता। जयेश की मौत ने एक अपूर्व क्रांति कर दी। सारी दूरियाँ मिट गई, माया का जाल टूटा, प्रभु स्वयं प्रकट हो गए और तमन्ना को उसके इष्ट देव से मिलने का मौका मिला। इंसान इस भ्रांति में जीता है कि हम सदा रहेंगे और अपने सपनों को बुनता रहता है। हम इंच-इंच ज़मीन के लिए लड़ते हैं, रत्ती-रत्ती धन और पद के लिए लड़ते हैं। दुनिया तो धर्मशाला है, पर हम मान बैठते हैं कि यही हमारा निवास है। जब तमन्ना का सुख-चैन छिन गया, तब प्रभु का सत्य प्रकट हुआ, परन्तु उसने अपने पति का मोह त्याग नहीं किया, उसने परंपरा का त्याग नहीं किया, उसने अपने सती होने के गौरव का त्याग नहीं किया। तमन्ना के लिए अभी कुछ भी स्पष्ट नहीं है; उसका एकमात्र लक्ष्य है अपने पति के प्राणों की रक्षा करना। वक्रत ने तलवार से उसकी बसी-बसाई दुनिया काट कर अलग कर दी, परन्तु वह उस दुनिया का मोह त्याग नहीं पा रही, और त्याग भी कैसे? हज़ारों साल से स्त्रियों को यही तो सिखाया गया है कि पति ही सबकुछ है! स्त्रियों के आदर्श भी तो वैसी ही स्त्रियाँ हैं। तमन्ना को उन्हीं मापदंडों पर खुद को साबित करना है। तमन्ना किसी अमृत की तलाश में नहीं भटक रही है, वह तो उन मानकों पर अपने आप को साबित करना चाहती है जो स्त्रियों के अटल आदर्श रहे हैं। विचार या तो अतीत के होते हैं या भविष्य के, तमन्ना अपनी स्मृतियों से प्रेरणा लेकर भविष्य के लिए और अच्छे सपने संजोने में लगी है। विचार वर्तमान में नहीं होता है। अगर कोई भी विचार हमारे भीतर नहीं उठता, तो भीतर एक शून्य है और हम वर्तमान में हैं। जो अभी अस्तित्व में नहीं है, तमन्ना उसकी योजना बना रही है और जो है, उसमें तमन्ना जीना नहीं चाहती।

तीन घंटे से ज़्यादा हो चुके थे, और सड़क पर लगा जाम, एक जीवंत दानव की तरह, लगातार फैलता जा रहा था। लोग अपनी गाड़ियों से निकल कर बातचीत कर रहे थे। हर गुजरते चेहरे में उसे एक संभावित हमलावर नज़र आ रहा था। हर आंख, हर हरकत, उसके शक के दायरे में कैद थी। भीड़ की ये बेतरतीब हलचल उसके भीतर एक तीव्र बेचैनी पैदा कर रही थी, जैसे कोई अदृश्य हाथ उसके गले को भींच रहा हो। "ये रास्ता साफ होते-होते रात हो जाएगी। हमें कुछ करना होगा!" बहुत देर की खामोशी को तोड़ते हुए, तमन्ना की आवाज़ में एक नई दृढ़ता थी, मानो उसने अपने भाग्य का फैसला खुद कर लिया हो। उसके शब्द, एक आदेश की तरह हवा में गूँजे, परमात्मा की हर कोशिश को धृता बताते हुए। "हमें कुछ करना होगा? क्या मतलब है?" जयेश की आँखों में खालीपन था। दिन भर की घटनाओं

ने उसे भ्रमित कर दिया था, जैसे वह किसी अजीबोगरीब सपने में फंसा हो। "चलो यहाँ से।" तमन्ना ने फुसफुसाया, उसकी आवाज़ में एक अनकहा दबाव था। "कहाँ जाना है?" जयेश ने अचंभित होकर पूछा। "बाहर निकलो, फिर बताती हूँ।" तमन्ना ने बिना एक पल गंवाए गाड़ी का दरवाज़ा खोला और बाहर निकल गई। जयेश उसके पीछे-पीछे भागा, उसके हर कदम में अनिश्चितता थी। "गाड़ी का क्या करना है?" उसने पूछा। "गाड़ी छोड़ दो! ऐसी कई गाड़ियां खरीद सकते हैं हम!" तमन्ना ने एक तेज़, लगभग क्रोधित स्वर में कहा, उसके कदम पहले से ही घाटी की ओर बढ़ रहे थे। सैकड़ों गाड़ियों की कतार को चीरते हुए, वह ऊपर की ओर बढ़ रही थी, उसकी आँखें किसी छिपे हुए रास्ते की तलाश में थीं। तभी उसे एक पगडण्डी दिखी, जो सीधे जंगल के अंधेरे में समा रही थी। बिना सोचे समझे, तमन्ना उस पगडण्डी पर मुड़ गई। "इधर कहाँ जा रही हो?" जयेश ने हड़बड़ाते हुए पूछा, उसकी आवाज़ में डर साफ झलक रहा था। "हम वहाँ शांति से रहेंगे। यहाँ की भीड़ मुझे पसंद नहीं है।" तमन्ना ने लड़खड़ाते हुए कहा, पहाड़ी ढलान पर उसका संतुलन बिगड़ा। "संभल के तमन्ना!" जयेश चिल्लाया, उसकी आवाज़ में घबराहट थी। "मेरी चिंता छोड़ो! अपने कदमों पर ध्यान दो!" तमन्ना ने उसे आश्वस्त किया, लेकिन उसकी अपनी साँसें भी तेज़ हो रही थीं। शाम का धुंधलापन अब गहराने लगा था, और जंगल का वातावरण और भी रहस्यमय होता जा रहा था। "तमन्ना, थोड़ा आराम कर लें। कब तक चलते रहेंगे?" जयेश का दुबला-पतला शरीर अब जवाब दे रहा था। उसकी साँसें हाँफ रही थीं, माथे से पसीना बह रहा था। वातानुकूलित कमरों में पलने वाला शरीर इन पहाड़ों की चढ़ाई कैसे सहता?" क्या तुम मुझसे भी कमज़ोर हो?" तमन्ना गुस्से से पीछे मुड़ी और चिल्लाई। उस चिल्लाहट के कारण उसका संतुलन बिगड़ गया, और वह फिसल गई। "तमन्ना!" जयेश चीखा, उसकी ओर भागा। तमन्ना दर्द से कराह उठी। उसका पैर मुड़ गया था, और सर पर लगी चोट से वह होश खोने लगी थी। जयेश ने उसे अपनी बांहों में भरा, उसके गालों पर थपकियां मार रहा था, हर कीमत पर उसे होश में रखने की कोशिश कर रहा था। "आप कहीं नहीं जाइएगा, आप कहीं नहीं जाइएगा।" तमन्ना ने बुदबुदाया और बेहोश हो गई। अंधेरा पूरी तरह से छा चुका था। इस अनजाने जंगल में, एक घायल तमन्ना के साथ, जयेश को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उसके पास एक ही रास्ता बचा था। उसने तमन्ना को अपनी गोद में उठाया और धीमी, लेकिन दृढ़ कदमों से वापस सड़क की ओर बढ़ने लगा।

३. अध्याय - अतीत की कसक और वर्तमान की चिंगारी

दो दिनों के बाद, जब तमन्ना की आँखें अस्पताल के सफेद, बेजान कमरे में खुलीं, तो सामने बैठी सबा उसे होश में देख, बिजली की तेज़ी से उसकी ओर लपकी और कसकर गले लगा लिया। "अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है! मुझे तो लगा सब कुछ तबाह हो गया," सबा की आवाज़ में राहत और दर्द दोनों घुले हुए थे। "जयेश कहाँ है?" तमन्ना ने लड़खड़ाती आवाज़ में पूछा, उसकी आँखों में उम्मीद की एक झिलमिलाती किरण थी। सबा कुछ न बोली, बस छाती पीट-पीट कर रोने लगी। उस एक पल में, तमन्ना सब कुछ समझ गई। एक भीषण सच्चाई ने उसे जड़ दिया। उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बह निकली, जैसे कोई बाँध टूट

गया हो। कलेजा फटा जा रहा था, रोम-रोम अग्नि की तपिश में जल रहा था। मन की पीड़ा को अब और बाँधने में वो असमर्थ थी। "कैसे हुआ?" तमन्ना ने पूछा, उसकी आवाज़ अब सिर्फ एक फुसफुसाहट थी। "तुम्हें अस्पताल में छोड़ने के बाद, रात को जब वो घर जा रहे थे, तो कुछ लोगों ने उनकी हत्या कर दी," सब ने बिलखते हुए बताया, हर शब्द एक कड़वे घूँट की तरह था तभी तमन्ना के अबू जावेद और भाई शोएब कमरे में दाखिल हुए। उन्हें देखते ही तमन्ना चीख उठी, "इन्हें यहाँ से बाहर जाने बोलो!" जावेद और शोएब को कुछ समझ नहीं आया। वे एक-दूसरे का चेहरा देखते रहे और चुपचाप कमरे से बाहर निकल गए। डॉक्टर और नर्स अंदर आए। तमन्ना को होश में देखकर डॉक्टर को संतोष हुआ। "भगवान का लाख-लाख शुक्र है कि आप होश में आ गईं। आपके सर पर गहरी चोट लगी थी। आप कोमा में भी जा सकती थीं," डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा। "माँ जी, अब आप जाइए। इन्हें आराम करने दीजिए," नर्स ने विनम्रता से कहा। सब ने तमन्ना के माथे को चूमा, अपने आँसुओं को पोंछते हुए बाहर निकल गईं, लेकिन उसके चेहरे पर गहरे दुख की छाप साफ दिख रही थी।

रात में तमन्ना की आँखों से नींद कोसों दूर थी। एक असहनीय बेचैनी उसे घेरे हुए थी, और इस बार उसे खुद पर भी प्रचंड क्रोध आ रहा था। जब बेचैनी अपने चरम पर पहुँच गई, तो उसने अपने शरीर से जुड़े मशीनी तारों को झटके से उखाड़ फेंका। प्लास्टर लगे पैर को घसीटते हुए, वह खिड़की की ओर बढ़ी। खिड़की अपनी जगह पर अड़ी थी, अचल। एक कुर्सी को खींचकर वह खिड़की के पास बैठ गई और लोहे के स्टैंड को उठाकर खिड़की तोड़ने का प्रयास करने लगी। चार-पाँच ज़ोरदार प्रहारों के बाद, शीशा टूट गया। दीवार का सहारा लेकर वह खड़ी हुई और खिड़की से कूदकर आत्महत्या करने की तैयार थी। उसकी आँखों से दुख अश्रुधारा के रूप में बह रहा था, जैसे उसके हृदय का समूचा दर्द पिघलकर बह निकला हो। तमन्ना कूदने ही वाली थी कि किशन कन्हैया ने फिर उसका हाथ थाम लिया और उसे कमरे के अंदर ले आए। उनके स्पर्श मात्र से तमन्ना के सारे घाव भर गए, और उसका पैर ठीक हो गया। वह पुनः किशन कन्हैया के चरणों में गिर पड़ी। "मैं असफल हो गई। इस बार तो मेरी वजह से मेरा सुहाग उजड़ गया," तमन्ना ने रोते हुए कहा, उसकी आवाज़ में गहन पीड़ा थी। "उठो! घबराओ मत! तुमने पूरी कोशिश की," प्रभु ने तमन्ना को अपने हाथों से उठाते हुए कहा, उनके शब्दों में शांति और सांत्वना थी। "मुझे एक मौका और दीजिए। इस बार मैं जयेश को कुछ नहीं होने दूँगी," तमन्ना ने रोते हुए विनती की, उसकी आँखों में एक नई उम्मीद झलक रही थी। "तो तुम यही चाहती हो?" किशन भगवान ने मुस्कुराते हुए पूछा, उनकी मुस्कान में एक रहस्यमयी चमक थी। "मुझ पर कृपा कीजिए, मुझे एक मौका और दीजिए," तमन्ना हाथ जोड़े रो रही थी, उसकी आँखें अनुनय से भरी थीं। "और किस समय में वापस जाना है तुम्हें?" "उसी दिन जिस दिन मेरे पति की हत्या हुई थी।" "शर्त याद है न? अगर किसी को इस बारे में बताया तो वापस तुम उसी समय में चली जाओगी जब पहली बार हम और तुम मिले थे।" "जी, बिल्कुल याद है। मैं किसी से कुछ नहीं कहूँगी।" "तथास्तु," ऐसा कहकर भगवान अंतर्ध्यान हो गए।

तमन्ना एक बार फिर सुबह के 3 बजे जाग उठी, उसकी आँखों में नींद का कोई निशान नहीं था। जयेश उसके पास ही गहरी नींद में सो रहा था। वह उठी और कमरे में टहलने लगी, इस बार पूजा-पाठ के बजाय उसके दिमाग में बस एक ही चीज़ थी—योजना बनाना। सोचते-सोचते सुबह के 5 बज गए। बेचैनी में तमन्ना ने पुलिस को फोन लगाया। "हैलो," उसने कहा। उधर से भी "हैलो" की आवाज़ आई। "जी, मैं रोहन इंडस्ट्रीज के मालिक जयेश की पत्नी बोल रही हूँ। मेरे पति की जान को खतरा है, क्या आप सिक्योरिटी मुहैया करवा सकते हैं?" "सिक्योरिटी तो मिल जाएगी, लेकिन पहले ये बताइए कि आपको कैसे पता चला कि आपके पति की जान को खतरा है? किसी ने धमकी दी है? आपको किसी पर शक है? सिक्योरिटी के लिए आपको एक एप्लीकेशन देना होगा, उसके बाद ही हम सिक्योरिटी मुहैया करा पाएंगे।" पुलिस की ये बातें सुनकर तमन्ना ने फोन काट दिया। उसने तुरंत मुंशी जी को फोन लगाया। "क्या बात है बहुरानी? इतनी सुबह फोन किया," मुंशी जी की आवाज़ में हैरानी थी। "पहले एक वादा कीजिए," तमन्ना ने कहा। "कैसा वादा?" "यही कि मैं जो कुछ भी कहूँगी उसका कारण आप नहीं पूछेंगे।" "ठीक है, काम क्या है?" "मुझे जयेश की सुरक्षा की चिंता है। आप कुछ बॉडीगार्ड का इंतजाम कीजिए।" "क्या साहेब की जान को खतरा है?" मुंशी जी ने तपाक से सवाल दागा। तमन्ना कुछ नहीं बोली, और मुंशी जी को अपने वादे की याद आई। "ठीक है बहुरानी, मैं एक-दो दिन में इंतजाम करता हूँ।" "एक-दो दिन में नहीं, आज सुबह 9 बजे तक करना है। पैसों की चिंता न करें।" "इतने कम समय में!" मुंशी जी ने कहा। तमन्ना फिर कुछ नहीं बोली। "ठीक है, हो जाएगा," मुंशी जी ने धीरे से कहा, और तमन्ना ने फोन रख दिया।

तमन्ना ने जयेश को जगाया। "आज तुमने पूजा नहीं की," जयेश ने अलसाई आवाज़ में पूछा, उसकी आँखों में अभी भी नींद थी। "आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है," तमन्ना ने धीमी, उदास आवाज़ में कहा। "क्या हुआ? डॉक्टर के पास चलें?" जयेश तुरंत उठकर बैठ गया और अपने हाथों से तमन्ना के माथे को छूकर देखा, कहीं बुखार तो नहीं। तमन्ना का पूजा छोड़ देना, जयेश के लिए मामले की गंभीरता को समझने का संकेत था। वह जानता था कि तमन्ना अपनी पूजा कभी नहीं छोड़ती। "मुझे कहीं नहीं जाना है और आज आप भी कहीं नहीं जाएंगे। हम दोनों यहीं घर में रहेंगे," तमन्ना ने जिद करते हुए कहा, उसकी आवाज़ में एक अजीब-सी बेचैनी थी। "ठीक है। मैं आज की सारी मीटिंग कैंसिल कर देता हूँ," जयेश ने कहा। उसके इतना कहते ही तमन्ना ने उसे गले लगा लिया। जयेश अचम्भित था, तमन्ना का यह व्यवहार उसकी समझ से परे था।

नाश्ता परोसा जा रहा था, तभी सबा वहां रोहन को लेकर आती है। जयेश खुशी-खुशी रोहन को अपनी गोद में लेकर खिलाने लगता है। तभी मुंशी जी पांच बॉडीगार्ड के साथ घर के अंदर आते हैं। "मुंशी जी, ये सब कौन हैं?" जयेश ने आश्चर्य से पूछा।

"इन्हें मैंने बुलवाया है, मुंशी जी। इन्हें घर के चारों ओर रखवाली करनी है। आप सभी जा सकते हैं," तमन्ना ने मुंशी जी और बॉडीगार्ड्स को सीधे बाहर जाने को कहा। मुंशी जी उन सबको लेकर बाहर चले जाते हैं। जयेश की उलझन बढ़ गई। "ये सब क्या चल रहा है? पहले

तुम्हारी तबीयत खराब हो जाती है पर तुम डॉक्टर के पास नहीं जाना चाहती। उसके बाद अचानक मेरी जानकारी के बिना पांच-पांच बॉडीगार्ड!" जयेश तमन्ना की हरकतों से चिढ़ गया था, उसकी आवाज़ में नाराजगी साफ थी। "मेरा आप पर कोई अधिकार है कि नहीं? मैं आपके लिए कुछ निर्णय ले सकती हूँ कि नहीं?" तमन्ना का ये तीखा तेवर देखकर जयेश भी सकपका गया और अपनी आवाज़ को धीमा करते हुए कहता है। "ये सब तुम मेरे लिए कर रही हो? पर अचानक से ये सब क्यों?" रोहन को जयेश की गोद से लेकर सब्बा घर के अंदर चली जाती है, शायद माहौल की गरमाहट महसूस कर चुकी थी। "आप नहीं समझेंगे, आप आराम कीजिए," तमन्ना ने भी धीरे से कहा, उसकी आवाज़ में एक अनकही पीड़ा थी। "आराम की जरूरत तुम्हें है," जयेश प्लेट को धक्का देकर अपने कमरे में चला जाता है। तमन्ना का मन कचोट रहा था, लेकिन वह कुछ नहीं कह सकती थी। वह वहीं, मेज़ के पास, खामोश बैठ जाती है।

तमन्ना अकेली ड्राइंग रूम में बैठी थी, उसका मन शांत नहीं था। तभी कविता, उसकी पड़ोसन, सीधे उसके पास आई। "दीदी! ये घर के बाहर इतने बॉडीगार्ड क्या कर रहे हैं? मुझे तो अंदर ही नहीं आने दे रहे थे। मैं तो मुंशी जी की वजह से अंदर आ पाई।" "तुम्हें भला कौन रोक सकता है?" तमन्ना ने बुदबुदाया। "क्या मतलब?" कविता ने पूछा। "कुछ नहीं, ये बताओ कैसे आना हुआ?" तमन्ना बिना किसी दिलचस्पी के बात कर रही थी। वह अपनी ही उलझनों में खोई हुई थी। कविता रोने लगी। "मैं संजीव के साथ नहीं रहना चाहती। वो एक नंबर का धोखेबाज़ है।" तभी, अंदर के कमरे से सब्बा के चीखने की आवाज़ आती है। सभी आवाज़ की दिशा में भागते हैं। कमरे के अंदर सब्बा दर्द से कराह रही थी। "इन्हें जल्दी हॉस्पिटल ले चलो!" घर के नौकर और जयेश सब्बा को उठाकर घर से बाहर निकलते हैं। बाहर मुंशी जी भी भागते हुए आते हैं। "जल्दी गाड़ी निकालो!" जयेश चिल्लाता है। जयेश भी गाड़ी में बैठना चाहता है, तभी तमन्ना जयेश का बाँह को ज़ोर से पकड़ लेती है। "आप घर में ही रहिए, मैं जाती हूँ।" तमन्ना जयेश की आँखों में झाँक रही थी, उसकी नज़रों में एक दृढ़ संकल्प था। तमन्ना के हाथों की पकड़ से जयेश समझ जाता है कि सबके सामने बहस करने का कोई फायदा नहीं है। "ठीक है," जयेश इतना कहकर दो कदम पीछे हट जाता है। "कविता तुम घर जाओ। संजीव तुम्हारी हरेक बात मान लेगा, उसकी चिंता मत करो।" तमन्ना इतना कहकर सब्बा के साथ जाने के लिए मुड़ जाती है।

अपनी माँ के शीश को अपनी गोद में लिए तमन्ना यही सोच रही थी कि क्या वो फिर से विफल होने वाली है। यह विचार एक काले आवरण की तरह उसके मन पर छाया हुआ था। माँ की कराह उसे सुनाई तो दे रही थी, हर आह उसके अंतर्मन को छू रही थी, पर उसका ध्यान कहीं और था – अपने ही विचारों के गहरे भंवर में। उसने माँ के हाथ को कसकर थाम रखा था। तमन्ना को आभास हो रहा था कि प्रभु ने इस बार कोई नयी पटकथा लिखी है इस लिए तमन्ना अपने अगले कदम के बारे में सोच रही थी। आवास के भीतर, जयेश क्रोध में तप्त था। उसका चेहरा लाल था, नसें तन गई थीं। पास ही एक सेविका रोते हुए रोहन को शांत कराने का प्रयास कर रही थी, पर रोहन की सिसकियाँ शांत नहीं हो रही थीं। "बाहर ले

जाकर इसे चुप कराओ!" जयेश चिल्लाया, उसकी आवाज़ में गुस्सा और हताशा स्पष्ट थी। सेविका रोते हुए रोहन को लेकर बाहर निकल गई, उसकी अपनी आँखें भी आर्द्र थीं।

"आपकी माँ को हार्ट अटैक हुआ है। जल्द से जल्द शल्य चिकित्सा करनी पड़ेगी," चिकित्सक ने जल्दबाज़ी में कहा, उनके शब्दों में आपातकाल की घोषणा थी। तमन्ना का हृदय एक पल को धड़कना भूल गया। "माँ किसी संकट में तो नहीं हैं न?" तमन्ना ने काँपते हुए पूछा, उसकी आवाज़ कंठ में ही अटक रही थी। "ब्लॉकेज हैं, पर घबराने की कोई बात नहीं। ऑपरेशन से सब ठीक हो जाएगा।" चिकित्सक इतना कहकर चले गए, अपने पीछे एक अजीब-सी नीरवता छोड़ गए। तमन्ना ने जल्दबाज़ी में मुंशी जी को फ़ोन लगाया। "मुंशी जी, जयेश घर पर ही हैं न, वो ठीक हैं न?" तमन्ना ने अपनी थिरकती हुई आवाज़ में पूछा, चिंता उसके प्रत्येक शब्द से टपक रही थी। "सब ठीक है बहुरानी, लेकिन अचानक ये सब क्या हो रहा है? कुछ समझ नहीं आ रहा?" मुंशी जी भी परेशान थे, उनकी आवाज़ में भी अनिश्चितता थी। "कन्हैया की लीला को आज तक विरले ही समझ पाए हैं। मैं जाती हूँ, कुछ भी हो, मुझे बता दीजिएगा।" तमन्ना ने कहा, उसकी आवाज़ में अब एक अजीब-सी दृढ़ता थी, जैसे उसने स्वयं को किसी आने वाली चुनौती के लिए तैयार कर लिया हो। "ठीक है बहुरानी।" मुंशी जी ने एक अनकही सहमति जताई।

जावेद और शोएब हाँफते हुए आए। जावेद की आँखों में भय था, उसकी आवाज़ रुंध गई थी, "सब ठीक तो हो जाएगी न? कोई ख़तरा तो नहीं है?" जावेद के इस दर्द को देख, तमन्ना की आँखें भी नम हो गईं। "कन्हैया सब ठीक कर देंगे। आप लोग बैठिए।" "हाय अल्लाह! ये क्या मुसीबत आ गई," जावेद ने कहते हुए आगे कदम बढ़ाए और शोएब ने उन्हें सहारा देकर कुर्सी पर बिठाया। तमन्ना अस्पताल के गलियारे में लगातार टहल रही थी। राका और रंजीत ने कई बार उससे बैठने का आग्रह किया, पर वह टस से मस नहीं हुई। "तुम दोनों भी जाओ, साहब का ध्यान रखना।" "फिर आप यहाँ अकेली रहेंगी? साहब नाराज़ होंगे," राका ने अपनी भारी आवाज़ में विनय किया। "ज़रूरत तो यहाँ मेरी भी नहीं है। इन्हें बस एक व्यक्ति चाहिए जो धन उपलब्ध कराता रहे। अब्बू और भैया तो हैं ही। एक महिला की आवश्यकता है, इसलिए मैं भी यहाँ रुकी हूँ।" तमन्ना ने झुंझलाते हुए कहा, उसके स्वर में एक अजीब-सी कड़वाहट थी। राका और रंजीत ने तमन्ना का यह अप्रत्याशित रूप पहले कभी नहीं देखा था। दोनों ने एक-दूसरे का चेहरा देखा और बिना कुछ कहे, चुपचाप चले गए। थोड़ी दूर जाने के बाद रंजीत ने पूछा, "भाभी जी आज सुबह से ही अजीब व्यवहार कर रही हैं।" "छोड़ न, इन बड़े लोगों का मिज़ाज कब बदल जाए कोई नहीं बता सकता। अपने को क्या है, जो कहा जाए चुपचाप करो," राका ने अपने बेफ़िक्र अंदाज़ में जवाब दिया।

जयेश गुस्से में कक्ष में इधर-उधर टहल रहा था। उसका मन अशांत था। एक सेवक पास आकर पूछता है, "साहब, भोजन करेंगे?" "मुझे भूख नहीं है," जयेश ने संक्षिप्त उत्तर दिया। तभी तमन्ना का फ़ोन आता है। जयेश एक क्षण के लिए फ़ोन को देखता है, कुछ सोचता है, और फिर उसे वापस अपनी जेब में रख लेता है। ठीक उसी पल, मुंशी जी हाँफते हुए घर के

अंदर प्रवेश करते हैं। "साहेब! ऑफिस में आग लग गई है!" "कैसे? कब?" जयेश चिल्लाया, उसकी आवाज़ में एक तीखी घबराहट थी। "मुझे अभी-अभी ऑफिस से सूचना मिली। मैंने अग्निशमन दल को बुलाने के लिए एक व्यक्ति भेज दिया है।" "चलिए, चलकर देखते हैं कि कितना नुकसान हुआ है।" जयेश तुरंत घर से बाहर निकलने लगता है। "परन्तु बहुरानी ने आपको घर में ही रहने को कहा था," मुंशी जी ने विनम्रता से आग्रह किया। "फैक्ट्री बंद हो चुका है, अब यह ऑफिस भी बंद हो जाएगा तो फिर आप लोग क्या करेंगे?" जयेश चिल्लाया, उसकी हताशा स्पष्ट थी। फिर वह रुका और सोचने लगा। "आप यहीं रुकिए, मैं कुछ देर में वापस आ जाऊंगा।" जयेश ने स्वयं को शांत करने का प्रयास किया और घर से निकल गया। बाहर उसे राका और रंजीत दिखाई देते हैं। "तुम दोनों यहाँ क्या कर रहे हो? तुम्हें तो अस्पताल में होना चाहिए था," जयेश ने राका से प्रश्न किया। रंजीत तुरंत गाड़ी लाने चला जाता है। "भाभी जी ने कहा कि हम आपके साथ रहें, वहाँ हमारी कोई आवश्यकता नहीं है।" रंजीत गाड़ी लेकर आता है और तभी तमन्ना का कॉल फिर आता है। जयेश फ़ोन देखता है, पर बात किए बिना, गाड़ी में बैठकर चला जाता है। तमन्ना मुंशी जी को फ़ोन करती है। "जयेश कहाँ हैं? मेरी उनसे बात नहीं हो पा रही है।" "ऑफिस में आग लग गई थी, वही देखने अभी-अभी गए हैं।" "आप और बाकी अंगरक्षक कहाँ हैं?" "हम लोग तो यहीं हैं। राका और रंजीत साथ गए हैं।" "आप उन्हें फ़ोन कीजिए कि जहाँ हैं वहीं रुकें। मैं भी आ रही हूँ, फिर साथ चलेंगे और आप भी बाकी लोगों को लेकर उनके पीछे शीघ्रता से जाइए।" मुंशी जी जयेश को फ़ोन लगाते हैं। "आप जहाँ हैं वहीं रुक जाइए, बहू भी आ रही हैं, आपके साथ ही जाएंगी।" "मुंशी जी, मुझे अब ये बकवास और नहीं सुनना। फ़ोन रखिए।" जयेश फ़ोन रख देता है। तभी तमन्ना का फ़ोन फिर आता है और जयेश इस बार भी बात नहीं करता। मुंशी जी सभी अंगरक्षकों को लेकर जयेश के पीछे जाते हैं।

डॉक्टर और नर्स कमरे में दाखिल हुए। "ऑपरेशन सफल रहा," डॉक्टर ने घोषणा की। "बहुत-बहुत धन्यवाद डॉक्टर। मुझे कुछ आवश्यक कार्य हैं, मैं कुछ देर में आती हूँ।" "कुछ कागजी कार्यवाही करनी है, यदि आप वो पूरी कर लेतीं तो बेहतर होता," डॉक्टर ने मुस्कुराते हुए कहा। "कागजी कार्यवाही आप मेरे पिता और भाई से करवा लें, मुझे जाना होगा।" तमन्ना के स्वर में आग्रह था। "लीगल गार्डियन के रूप में आप का सिग्नेचर है, इसलिए आपको ही यह प्रक्रिया पूरी करनी होगी," नर्स ने शांत भाव से कहा। "ठीक है, चलिए," तमन्ना ने अनिच्छा से सहमति दी और नर्स के साथ चल पड़ी। दोनों लिफ्ट के पास पहुँचे। नर्स लिफ्ट के अंदर चली गई, लेकिन तमन्ना भीतर नहीं चढ़ी। नर्स ने चिल्लाकर बुलाया, पर लिफ्ट का दरवाज़ा बंद हो गया। तमन्ना तेज़ी से अस्पताल से निकली और एक टैक्सी में जा बैठी। "सिटी सेंटर चलो," उसने ड्राइवर को निर्देश दिया। ड्राइवर ने तुरंत गाड़ी आगे बढ़ा दी।

मुंशी जी भी अंगरक्षकों के साथ आगे बढ़ रहे थे, पर उनकी गाड़ी लाल बत्ती के कारण रुकी हुई थी। "आज तक लाल बत्ती इतनी लंबी कभी नहीं लगी," उन्होंने झुंझलाहट में कहा। तभी हरी बत्ती जली और गाड़ी चल पड़ी। कुछ देर बाद, शहर से बाहर खुली सड़क आ गई,

जिसके दोनों ओर सघन जंगल था। वहाँ गाड़ियाँ धीमी गति से चल रही थीं। "गाड़ी धीरे क्यों चला रहे हो?" मुंशी जी ने पूछा। "लगता है दुर्घटना हुई होगी, तभी मार्ग अवरुद्ध है," आगे बैठे अंगरक्षक ने बताया।

"तेज़ चलाओ भैया," तमन्ना ने टैक्सी ड्राइवर से कहा। "एक बार शहर से बाहर निकल कर हाईवे पर पहुँचेंगे, तभी तेज़ चला पाऊँगा। तब तक कुछ नहीं कर सकता," ड्राइवर ने विनम्रतापूर्वक उत्तर दिया।

अचानक एक पलटी हुई गाड़ी दिखाई पड़ती है। "ये तो साहेब वाली ही गाड़ी लगती है," ड्राइवर ने कहा। "एक ही मॉडल होगा, ज़रा नंबर देखना," मुंशी जी ने अपनी कार से सिर निकालकर पलटी हुई गाड़ी का नंबर प्लेट देखा। नंबर देखते ही मुंशी जी चीख पड़े, "गाड़ी साइड करो! गाड़ी साइड करो!" मुंशी जी और सभी अंगरक्षक भागकर पलटी हुई कार के पास पहुँचे। "ये दुर्घटना नहीं है, ये तो जानलेवा हमला किया गया है," गाड़ी के हालात सच बयां कर रहे थे। तभी तमन्ना का फ़ोन आता है। "आप जयेश के साथ हैं?" मुंशी जी फूट-फूटकर रोने लगे। तमन्ना बिल्कुल स्तब्ध रह गई, उसके हाथ काँपने लगे। उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़क रहा था और उसकी आशंका सच हो गई थी। "क्या हुआ?" तमन्ना ने काँपती हुई आवाज़ में पूछा। "साहेब नहीं रहे, किसी ने उन्हें मार दिया।"

कुछ देर बाद, तमन्ना भी टैक्सी से उतरकर वहाँ पहुँच जाती है। मुंशी जी तमन्ना को देखकर बिलख पड़ते हैं, "मुझे माफ़ कर दीजिए।" तमन्ना का चेहरा सफ़ेद पड़ गया था। अभी पुलिस वहाँ नहीं पहुँची थी। तमन्ना को एक बार फिर इस असहनीय दुःख से गुज़रना होगा। वह जयेश के सिर को अपनी गोद में लेकर सड़क पर बैठ जाती है। इस बार कोई चीख-पुकार नहीं थी, चीख थी भी तो वह भीतर दब गई थी। इस बार जयेश को खोने के दुःख के साथ इस बात का भी अफ़सोस था कि वह असफल हो गई थी। तमन्ना एक मूर्ति की तरह वहीं जमी बैठी थी – शांत, चुपचाप। बस उसका हृदय पिघलकर आँखों के किनारे से आँसुओं के रूप में बह रहा था। पास ही मुंशी जी भी सड़क पर बैठे-बैठे सिसक रहे थे। रह-रहकर आस-पास से गाड़ियाँ गुज़र रही थीं, पर सभी इस हृदय विदारक दृश्य को देख अफ़सोस ज़ाहिर करके आगे बढ़ जाते। कोई भी आपके दुःख का भागीदार नहीं बनना चाहता। गलती किसी की नहीं थी, शायद तमन्ना भी यही करती। कुछ देर बाद पुलिस वहाँ पहुँच जाती है और आगे की कार्यवाही शुरू करती है।

तमन्ना सफ़ेद साड़ी में अकेले कमरे में बैठी थी। उसका अस्तित्व, असफलता के तीखे दंश से उत्पन्न आत्मग्लानि की प्रज्वलित अग्नि में भस्म हो रहा था। उसे यह भी समझ नहीं आ रहा था कि आखिर उसने ऐसा कौन सा अक्षम्य पाप किया था, जिसका उसे इतना कठोर प्रायश्चित्त भुगतना पड़ रहा था। किस अपराध की यह इतनी भीषण, अंतहीन सज़ा मिल रही थी, और इस दंड-चक्र से मुक्ति पाने का मार्ग क्या था? शेष जीवन अकेले काटने का भयंकर एकाकीपन उसे भीतर तक कचोट रहा था। अपनी यह मर्मांतक पीड़ा वह किसी से साझा भी नहीं कर सकती थी, जिससे उसके दुःख का भार किंचित कम हो पाता। कुछ हद तक

पश्चात्ताप करना उचित होता है, तभी भविष्य में अपनी भूल को सुधारकर व्यक्ति उस कृत्य को पुनः नहीं दोहराता, परन्तु दो बार की अभूतपूर्व विफलता ने तमन्ना के मनोबल को खंड-खंड कर दिया था। पहले तो केवल जयेश के वियोग की असहनीय पीड़ा थी, परन्तु अब अपनी करारी हार का दुःख, माँ के स्वास्थ्य की विकराल चिंता, और जले हुए कार्यालय को राख से फिर खड़ा करने की असंभव चुनौती भी साथ-साथ आ खड़ी हुई थी। तमन्ना अब अपनी माँ की दारुण स्थिति के लिए खुद को ही दोषी मान रही थी। कार्यालय के भस्म होने का दोष भी वह स्वयं पर ही मढ़ रही थी – "जब यही नियति थी, तो फिर पहली बार मैं ही इसे स्वीकार क्यों नहीं कर लिया?" ईश्वर का आशीर्वाद अब उसे शाप सा प्रतीत होने लगा था। तमन्ना अब इस विचार में डूबी थी कि यदि वह किसी को सब कुछ बता दे, तो शायद वापस उस क्षण में पहुँच जाए जहाँ वह पहली बार श्रीकृष्ण भगवान से मिली थी; कम से कम माँ तो स्वस्थ रहतीं। तमन्ना ने स्वयं को आत्मग्लानि की तपती भट्टी में झोंक दिया था। "हर बार मैं जिस दलदल से बाहर निकलने का प्रयास करती थी, हर बार मैं उसी दलदल में और गहरे धँसती गई।" अब तो तमन्ना की आत्मा में इतनी शक्ति भी शेष नहीं थी कि वह ईश्वर से एक और अवसर की याचना करे। उसे भय था कि पता नहीं इस बार और कितनी अकल्पनीय विपदाओं का सामना करना पड़ेगा। प्रत्येक अवसर में दाँव अनवरत बढ़ता ही चला गया था। अब तो प्रभु का सामना करने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी, परन्तु इसके अतिरिक्त और कोई मार्ग भी कहाँ था?

आत्मग्लानि को स्वयं पर हावी न होने दें, अन्यथा यह स्थायी नैराश्य और निराशा का रूप धारण कर लेगी, जो स्वाभाविक मानसिक दुर्बलता को जन्म देगी। हम प्रत्येक घटना को अपने पक्ष में ही घटित होने की कामना करते हैं; घटनाओं को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की संकीर्ण दृष्टि से देखते हैं, अपने सीमित मापदण्डों से मापते हैं। यदि ये घटनाएँ हमारी अपेक्षा के अनुरूप घटित नहीं होतीं, तो हम विचलित हो जाते हैं, क्रोध से भरकर ईर्ष्या अथवा प्रतिशोध की अग्नि में जलने लगते हैं। यह सत्य है कि हम अपना रोष स्पष्टतः प्रकट नहीं करते, किन्तु भीतर ही भीतर यह हमें खोखला करता रहता है। दूसरों पर तो इसका कुछ प्रभाव पड़ता नहीं, उल्टे हमारी ही हानि हो जाती है। फिर हम क्यों अपनी आशाओं को आकाश तक चढ़ाएँ? फिर कल्पना के भव्य महल क्यों खड़े करते रहें? फिर चारों ओर से टकराकर क्यों आत्मग्लानि के शिकार बनें! वास्तव में, हम में से पूर्ण निश्छल, पावन, दोष-मुक्त कोई भी व्यक्ति नहीं है, किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि हम अपने पापों, अपनी त्रुटियों को लेकर दिन-रात पछताते रहें।

इन सारी घटनाओं से तमन्ना क्या सीख सकती है और इस सीख का तमन्ना की बची ज़िंदगी में क्या मायने हैं? इन अनगिनत सवालों ने उसे भीतर तक झकझोर दिया था। "क्या वह अपने पति की मौत को स्वीकार करके प्रभु से प्रश्न करना छोड़ दे? क्या वह यह मान ले कि उसकी भक्ति में ही खोट था? और अगर सब कुछ मान भी ले तो क्या इस विकराल संकट की पीड़ा कम हो पाएगी?" इन्हीं अनसुलझे प्रश्नों के भंवर में वह उलझ चुकी थी। "भगवान ने उसके साथ छल तो नहीं किया है? नहीं! नहीं! कन्हैया ऐसा क्यों करेंगे!" भविष्य की चिंता ने

उसे अधीर कर दिया था। जब पीड़ा की लहरें असहनीय हो गईं, तो वह उठकर चल दी। रात के गहन अँधेरे में उसे इस तरह बाहर जाता देख घर के सेवक उसे रोकने दौड़े, किन्तु वह कहाँ रुकने वाली थी? एक अदृश्य शक्ति उसे किसी अनजाने मार्ग पर खींच रही थी।

तमन्ना उसी विशाल वृक्ष के नीचे जाकर बैठ गई, जहाँ उसे पहली बार श्रीकृष्ण के दर्शन हुए थे। उसकी आत्मा बिलख उठी, "हे कन्हैया! मुझे दर्शन दीजिये, मुझे इस दुःख, इस मर्मांतक पीड़ा से मुक्ति दे दीजिये! मैं इस तरह जीवित नहीं रह सकती! अब तो मेरी हिम्मत आत्महत्या करने की भी नहीं है!" तमन्ना कलप-कलपकर रो रही थी, उसकी देह भीतर तक काँप रही थी। क्या आप उस इंसान के दुःख की कल्पना कर सकते हैं, जिसके पास आत्महत्या का भी विकल्प न हो? दुःख की चरम सीमा हम आत्महत्या मानते हैं, और वह अंतिम मुक्ति का मार्ग भी तमन्ना से छीन लिया गया था। उसके पास न तो अब कुछ करने को बचा था, न ही कुछ कहने को। वह किसी अँधेरे, असीमित कक्ष में कैद थी, जिसकी दीवारों में न कोई द्वार था, न ही कोई रोशनदान। बस एक सूक्ष्म छिद्र था, जिससे जीवनदायिनी हवा आती-जाती रहती थी, ताकि वह जीवित रहे। क्या इस तरह जीवित रहने का कोई अर्थ था? शायद नहीं। पर यहाँ कोई साधन भी तो नहीं था, जिससे आत्महत्या की जा सके। दीवारों पर कब तक कोई सर पटकेगा? और अगर दीवारों पर भी मुलायम फोम की परत चढ़ी हो, तब क्या करेंगे? तमन्ना का जीवन भी तो भौतिक सुख-सुविधाओं की परत से ही घिरा था। यह दर्द भीतर का था, जिसे बाहर से कोई न तो देख सकता था और न ही महसूस कर सकता था। उस दर्द को समझने के लिए, आपको उसी कक्ष में प्रवेश करना होगा। क्या उस कक्ष में जाने का साहस या चुनाव हम कर सकते हैं? कभी नहीं! इंसान सुखों के पीछे भागता है, वह क्यों दुःख का विकल्प चुनेगा? तमन्ना ने भी तो सुख का ही विकल्प चुना था। यह तो नियति थी, जिसने उसे इस बिंदु पर पहुँचा दिया था।

श्रीकृष्ण नहीं आए। घंटों बीत गए, पर भगवान नहीं आए। "बहुरानी! आप यहाँ अकेली क्या कर रही हैं?" मुंशी जी की आवाज़ सुनकर तमन्ना चौंक उठी। "आपको यहाँ का पता किसने बताया?" "आपके घर में काम करने वालों ने ही बताया। वे आपका पीछा कर रहे थे, लेकिन आप इस हाल में, इस जगह? आखिर क्यों?" तमन्ना अपने आँसू पोंछते हुए मुंशी जी के पास आई। "घर चलिए।"

पिछली बार की ही तरह इस बार भी पुलिस पर अत्यधिक दबाव था कि वे जल्द से जल्द कातिलों को ढूँढ़ निकालें। सूरज और उसके दोस्तों को पकड़कर बेतहाशा पीटा जा रहा था, ताकि वे अपना गुनाह कबूल कर लें।

तमन्ना अस्पताल में अपनी माँ के पास बैठी थी। उसके पिता जावेद और भाई शोएब कमरे में आए। "आज तुम्हारी अम्मी तुम्हारी वजह से इस हालत में हैं!" जावेद आते ही तमन्ना पर तीखे आरोपों की बौछार कर पड़े। "मुझे पता है, और ये भी पता है कि आप लोग क्या चाहते हैं। अब मुझसे ये सब बर्दाश्त नहीं होता!" तमन्ना ऐसा कहकर कमरे से बाहर निकल गई। सबा अपनी कमज़ोर हथेली से रुकने का इशारा करती रही, पर तमन्ना नहीं रुकी।

तमन्ना आज रात फिर उसी विशाल वृक्ष के नीचे बैठकर सिसक रही थी। क्या त्रुटि थी, यह जाने बिना भी वह पश्चाताप की प्रज्वलित अग्नि में भस्म हो रही थी। कहते हैं मन का दुःख कहने से कम हो जाता है, पर वह प्रभु से क्या कहे? उन्हें तो सर्वविदित था। तमन्ना उस वृक्ष तले, हाथ जोड़े, आँखें बंद किए, लीन होकर प्रभु का ध्यान लगा रही थी ताकि उसके अंतर्मन की पीड़ा सीधे उन तक पहुँच सके। मध्यरात्रि भी गुजर गई, पर प्रभु नहीं आए। उसकी प्रार्थना का कोई प्रत्युत्तर नहीं मिला। प्रभु अचानक उससे इतने निष्ठुर कैसे हो गए थे? तमन्ना के मन में एक विचार कौंधा। उसने आँखें खोलीं और असहजता से खड़ी हो गई। उसने जितना हाथ-पाँव मारे थे, उतना ही वह इस दलदल में अपने नाक तक धँसती चली गई थी। उसे इस दलदल से बस इतना निकलना था, ताकि वह किसी तरह जीवन का निर्वाह कर सके। उसके मन की अशांत व्याकुलता अब क्रोध को जन्म दे रही थी – वह क्रोध, जो पश्चाताप पर समाप्त होता है, पर जिसका आरंभ मूर्खता से होता है। तमन्ना के क्रोध का मूल कारण उसकी विकराल निराशा थी, वह अनचाहा परिणाम जिसे वह स्वीकार करने से विमुख थी। "मैं आज सब कुछ बता दूँगी, ताकि मैं अपनी असफलता के अपराध बोध से तो बच सकूँगी!" तमन्ना वृक्ष के सामने चीख उठी।

वृक्ष से कोई प्रतिध्वनि नहीं आई। तमन्ना अपने आपको ही असह्य पीड़ा में थप्पड़ मारने लगी। वह चीख रही थी, विलाप कर रही थी। "बहुरानी! आप ये क्या कर रही हैं? रुक जाइये!" पीछे से मुंशी जी की आवाज़ आई। तमन्ना भागकर मुंशी जी के पास गई। "आपने पूछा था न कि मैं ये सब क्यों कर रही हूँ? आज मैं बताती हूँ। मुझे पूर्व से ही ज्ञात था कि जयेश की हत्या होने वाली है। श्रीकृष्ण ने मुझे दर्शन दिए और जयेश को बचाने का दो स्वर्णिम अवसर दिया, और मैं दोनों बार बुरी तरह असफल हो गई!" ऐसा कहकर तमन्ना चारों तरफ देखने लगी, पर कुछ भी नहीं बदला। सबकुछ बताने के बाद भी वह समय में वापस नहीं गई। "ये क्या बोल रही हैं, बहुरानी? आपकी तबियत ठीक नहीं है, आप घर चलिए।" मुंशी जी ने कातर भाव से आग्रह किया। "नहीं, ये नहीं हो सकता! ज़रूर कोई बात है! मुझे समय में वापस चले जाना चाहिए था।" तमन्ना के मन में भय की यह अनुभूति इतनी तीव्र थी कि तर्कपूर्ण सोच कहीं पीछे छूट गई। उसे लगा क्या वह इसी समय में फँस गई है? उसके पास एक अवसर था अपने दुखों को कुछ कम करने का, समय में थोड़ा वापस जाने का, वह भी उसके हाथ से फिसल गया था। वह अपने आप को पूर्णतः असहाय महसूस करने लगी। "मैं पागल हो जाऊँगी!" तमन्ना चिल्लाई। "आपको ये क्या हो गया है? आप घर चलिए।" मुंशी जी ने पुनः आग्रह करते हुए कहा। "मुंशी जी, आपको कैसे पता चला कि आज भी मैं यहीं हूँ, जबकि मैंने घर पर बताया था कि मैं अस्पताल जा रही हूँ?" मुंशी जी मुस्कुराने लगे, और तमन्ना उनके चरणों में लुढ़क गई। "प्रभु! इतनी कठिन परीक्षा मत लीजिये कि भक्त टूट के बिखर ही जाए!"

मुंशी जी का रूप बदल जाता है और साक्षात् श्रीकृष्ण भगवान प्रकट हो जाते हैं। "उठो! अपने आपको इतना कमज़ोर मत समझो। भक्त के वश में भगवान होते हैं, फिर भक्त कमज़ोर कैसे हो सकता है!" तमन्ना आँसू पोंछते हुए खड़ी होती है। "प्रभु, मेरी भक्ति में कहाँ कमी रह गई

थी जो मैं असफल हो गई?" "तुम्हारे हाथ में तो सिर्फ कर्म था, परिणाम तो तुम्हारे हाथ में था ही नहीं।" "अगर मैं इतनी ही बुरी हूँ तो मुझे भी मरने के लिए छोड़ देते, कम से कम इतनी पीड़ा तो नहीं सहनी पड़ती!" "भक्त बिना भगवान कहाँ? अगर तुम नहीं रहोगी तो फिर मैं कहाँ हूँ? अपने भक्तों की रक्षा करना तो मेरा कर्तव्य है।" "इतनी दुःख भरी ज़िंदगी को बचा कर तो आप मुझे और कष्ट पहुँचा रहे हैं। इससे अच्छा अपने साथ मुझे वैकुण्ठ ले चलिए।" "अगर तुम्हारा कर्मफल अच्छा रहा तो तुम ज़रूर वैकुण्ठ जाओगी, परन्तु तुम्हारे यहाँ होने का कुछ औचित्य है।" "क्या मैं पतिव्रता नहीं हूँ? मैंने क्या पाप किया जो आपने मुझे विधवा बना दिया?" "तुम पतिव्रता हो, और तुम्हें इस बात का अहंकार भी है। अपने अहंकार को मारो। मैं बहुत बड़ी पतिव्रता हूँ, मैं बहुत बड़ी भक्त हूँ – हाँ तो तुम, तभी मैं भी मजबूर हूँ बार-बार तुम्हारी मदद करने को, परन्तु तुम्हारा अहंकार तुम्हें सफल होने नहीं दिया, और काल ने हर बार अपना काम कर दिया। तुम रेत से तेल निकाल रही थी, तुमसे नहीं निकला। इसमें रेत की कोई गलती नहीं है, तुम्हारी गलती है। तिल से तेल निकालो। तुम दीवार से निकलने की कोशिश कर रही थी, जबकि तुम दरवाज़े से निकल सकती थी। 'दरवाज़ा नहीं है' – ऐसा तो तुम तभी कहना जब तुमने जीवन के सभी संभावित कदम उठा लिए हों। जिन्होंने सही कदम उठाया उन्हें दरवाज़ा मिला है। इस जीवन में बड़ी संपदा है। सनातन संपदा है। मगर ठीक दिशा में खुदाई करनी चाहिए। कभी-कभी ऐसा हो जाता है कि दिशा गलत होती है, कभी-कभी दिशा भी ठीक होती मगर तुम खोदते नहीं। कभी दिशा भी ठीक होती है तो तुम उस सीमा तक नहीं जाते। कभी जाते भी हो तो आखिर-आखिर में चूक जाते हो। एक हाथ के फासले पर आदमी लौट आता है। इतनी जल्दी निर्णय मत लो कि जीवन व्यर्थ है। तुम्हें जीना है, बहुत सारे काम करने हैं। अपनी सारी ऊर्जा को खुदाई में लगा दो और कभी निराश मत होना।" "मैं कुछ समझी नहीं। क्या मेरी दिशा गलत थी? या मेरा लक्ष्य गलत था? या मैं ही गलत थी?" "जिसे हम बुरा कहते हैं, वो सिर्फ हमारी अस्वीकृति है। अगर हम बुराई में भी गहरे देख पाएँ तो पाएँगे कि बुरे में भी भला छिपा होता है, दुःख में भी गहरे देख पाएँ तो पाएँगे कि सुख छिपा होता है। अभिशाप में भी गहरे देख पाएँ तो पाएँगे कि वरदान छिपा है। बुरा और भला एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। शैतान के खिलाफ़ जो भगवान है, उसे मैं अज्ञात नहीं कह रहा। मैं अज्ञात उसे कह रहा हूँ जो हम सबकी जीवन भूमि है, जो अस्तित्व का आधार है। उसी अस्तित्व के आधार से ही रावण निकलते हैं, उसी से राम भी निकलते हैं, प्रकाश भी निकलता है, अंधकार भी निकलता है। हमें अंधकार में डर लगता है तो लगता है अंधकार शैतान पैदा करता होगा। हमें रोशनी अच्छी लगती है तो लगता है रोशनी भगवान पैदा करता होगा। लेकिन अंधकार में कुछ भी बुरा नहीं है, रोशनी में कुछ भी भला नहीं है। जो अस्तित्व से प्रेम करता है वो अंधकार में भी मुझे पाएगा और वो प्रकाश में भी मुझे पाएगा। सच तो ये है कि डर के कारण हम कभी भी उसके सौंदर्य को जान ही नहीं पाते – उसके रस को, उसके रहस्य को। तुम्हारा भय मनुष्य निर्मित विचार है। जंगली कंदराओं से आ रहे हो। रात डराती थी। खतरनाक जंगली जानवर हमला कर देते थे, इसलिए जब अग्नि पहली दफा प्रकट हो सकी तो तुमने उसे भगवान बनाया। रात निश्चित हो गई। आग जलाकर तुम निर्भय हुए। अँधेरा हमारे अनुभव में भय से जुड़ गया। रोशनी हमारे हृदय में अभय से जुड़ गई है, लेकिन अँधेरे का अपना रहस्य है, रोशनी का अपना रहस्य है,

और इस जीवन में जो भी घटित होता है वो अँधेरे और रोशनी के सहयोग से घटित होता है। बीज गाड़ते हैं अँधेरे में और फूल आता है रोशनी में। जड़ें फैलती हैं ज़मीन के अँधेरे में। रोशनी में रखना, फिर फूल कभी नहीं आएगा। एक फूल को अँधेरे में रखना, फिर बीज कभी नहीं आएगा। एक बच्चा पैदा होता है माँ के पेट के गहन अंधकार में, जब बड़ा होता है तब आता है प्रकाश में। अँधेरा और प्रकाश एक ही जीवन शक्ति के लिए आधार हैं। जीवन में विभाजन, विरोध मनुष्य का है। धर्म ने दो हिस्से तोड़ रखे हैं, एक शैतान है तो एक भगवान है – वो आदमी के ही हिस्से हैं। धार्मिक व्यक्ति शैतान को देखने में असमर्थ है, वो भी मेरा ही रूप है। अचेतन, जहाँ से धार्मिक और वैज्ञानिक सत्य को पाता है, वो परमात्मा का द्वार है। धीरे-धीरे तुम उसके गहराई में उतरोगे तो ख्याल में निश्चित ही आ सकता है।" "प्रभु, मेरे पति की मृत्यु में कैसा प्रकाश? इस कष्ट भरे जीवन में कौन सा प्रकाश है?" "इसका निर्णय तो समय ही कर सकता है, और इसलिए इस बार मैं तुम्हें तीन महीने का समय दे रहा हूँ। ताकि तुम्हें किस दिशा में खोदना है वो जान सको। आज के अंधकार को समझ सको। आज तक तुमने सिर्फ परिणाम को ही देखा है, अब उसके कारणों को भी देख सको।" "अगर ऐसा हो सकता है तो मुझपर आपकी असीम कृपा होगी," तमन्ना ने सर झुका कर विनीत स्वर में कहा। "इस बार निर्णय तुम्हारे हाथ में होगा अगर तुम बचाना चाहो तो जयेश बच जाएगा, इसलिए धैर्य से काम लेना, तुम्हारे पास पर्याप्त समय है। तथास्तु।" ऐसा कहकर श्रीकृष्ण अंतर्धान हो गए।

४. अध्याय - एक सूत्र, एक उम्मीद

आज रात तमन्ना फिर जागी। कैलेंडर पर तारीख 10 अप्रैल थी – जयेश की हत्या से ठीक तीन महीने पहले। यह नया अवसर था। तमन्ना ने पूरी श्रद्धा से पूजा की। तीन महीने का नन्हा रोहन, जिसका खयाल सबा रख रही थीं, पास ही था। दिनचर्या के अनुसार, जयेश, मुंशी जी और चंदन से मिलकर काम पर निकल गए। चन्दन एक गठीले बदन का नौजवान था। लम्बाई औसत से थोड़ा ज्यादा था। बाज़ुओं की मांसपेशियाँ रस्सी की तरह बल खाती थीं, और सीना किसी ढाल सा उभरा हुआ था। उसकी चाल में एक अदम्य आत्मविश्वास था, हर कदम ज़मीन पर अपनी पकड़ मज़बूती से जमाता हुआ। धूप में तपी उसकी त्वचा और तीखी, पैनी आँखें बताती थीं कि वह सिर्फ शरीर से ही नहीं, बल्कि मन से भी मज़बूत है, जैसे किसी भी चुनौती का सामना करने को तत्पर। सबके जाने के बाद, तमन्ना ने खुद को कमरे में बंद कर लिया। उसके मन में एक अजीब-सी बेचैनी थी, एक नया संकल्प। उसने अपना कांटेक्ट लिस्ट खंगाला और एक नंबर डायल किया। पहली बार में जवाब आया कि "यह नंबर अब मौजूद नहीं है।" उसने उसी नाम के दूसरे नंबर पर फ़ोन लगाया। "हैलो, ग्रेस?" तमन्ना ने पूछा। "हैलो, बोलिए आप कौन?" उधर से आवाज़ आई। "मैं तमन्ना बोल रही हूँ।" "कौन तमन्ना?" "आपकी क्लासमेट। आप कौन हैं?" "मैं ब्यूटी पार्लर में काम करती हूँ।" "रॉग नंबर।" तमन्ना ने फ़ोन रख दिया, उसके माथे पर शिकन थी। शादी के बाद से उसने बहुत

कम लोगों से संपर्क रखा था, इसलिए उसके पास गिने-चुने ही नंबर थे। वह किसी बैच ग्रुप में भी नहीं थी। अचानक तमन्ना फिर से कांटेक्ट लिस्ट में नाम ढूँढने लगी। "ग्रेस" का कांटेक्ट "चुगलखोर" नाम से सेव किया गया था। यह देखकर तमन्ना के चेहरे पर एक हल्की मुस्कराहट फैल गई, एक पल के लिए बीते दिनों की याद ताज़ा हो गई। उसने फ़ोन मिलाया, "हैलो ग्रेस, कैसी हो?" "मैं ठीक हूँ, तू सुना। यूँ अचानक से फ़ोन, कुछ बात है क्या?" ग्रेस की आवाज़ में आश्चर्य था। "बात तो है," तमन्ना ने धीमी आवाज़ में कहा। "हाँ तो बोल ना, घबरा क्यों रही है?" "मुझे नवीन का नंबर चाहिए," तमन्ना ने झिझकते हुए कहा। "हा-हा-हा!" ग्रेस ठहाका मार कर हँसने लगी, उसकी हँसी में शरारत थी। "इतना हँस क्यों रही है?" तमन्ना ने शर्मते हुए कहा। "क्या बात है, आज पुराने प्यार की याद कैसे आ गई? जयेश से मन भर गया क्या?" ग्रेस ने चिढ़ाते हुए पूछा। "क्या बकवास कर रही है! वो जर्नलिस्ट है न? मुझे कुछ पता करना है।" तमन्ना ने बात बदली। "नंबर तो मिल जाएगा, पर इसके बदले मुझे क्या मिलेगा?" ग्रेस ने शर्त रखी। "ठीक है, मेरी तरफ से एक पार्टी।" "वो सब तो ठीक है, पर तुम मेरा एक ग्रुप क्यों नहीं जॉइन कर लेती? उसमें सारे ताज़े गरमा-गरम खबर मिलते रहेंगे।" तभी दरवाज़े पर सबा ने दस्तक दी। "बेटी, रोहन रो रहा है, इसे संभालो!" सबा ने चिल्ला कर कहा। "बाबू रो रहा है, तू मुझे नंबर भेज, मैं तुझसे फिर बात करती हूँ, ठीक है, बाया।" तमन्ना ने झटपट फ़ोन रखकर दरवाज़े की तरफ लपक कर दरवाज़ा खोला और रोहन को गोद में ले लिया। "दरवाज़ा क्यों बंद था?" सबा ने शंका व्यक्त की। "कुछ नहीं, कुछ काम था।" तमन्ना ने बात टालते हुए रोहन को लेकर कमरे के अंदर आकर उसे दूध पिलाना शुरू कर दिया। उसकी आँखों में एक नई चमक थी।

सूरज और उसके साथी मुन्ना और राहुल, जिला कबड्डी प्रतियोगिता के फाइनल में अपने गाँव का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। सूरज के अप्रतिम प्रदर्शन के बल पर उसकी टीम ने विजय हासिल की। सूरज एक मज़बूत कदकाठी का युवक था; कबड्डी खेलने से उसमें शक्ति और फुर्ती का अभाव नहीं था। लगभग छह फुट लंबा, चौड़ा सीना और गठीला बदन, जिसमें मांसपेशियों की स्पष्ट झलक देखी जा सकती थी। उसकी टीम को पुरस्कार स्वरूप दस हज़ार रुपये मिले, जो जिले के डीएम साहब के हाथों से दिए गए। कार्यक्रम समाप्त होते ही, सूरज तेज़ी से डीएम साहब की ओर भागा। अंगरक्षकों ने उसे रोका, और उनके बीच धक्का-मुक्की शुरू हो गई। शोरगुल सुनकर डीएम साहब अपनी कार से बाहर निकले। सूरज ने ललचाई आँखों से डीएम साहब को देखा। उसकी आँखों में एक विनती थी, एक आशा थी। डीएम ने अंगरक्षकों को रुकने का इशारा किया। सूरज भागकर उनके पास पहुँचा। "तुम उसी टीम के कप्तान हो न, जिसने यह प्रतियोगिता जीती है?" "जी सर, आपने मुझे पहचान लिया," सूरज ने उत्साह से कहा। "बताओ क्या बात है?" डीएम ने पूछा। "सर, मैंने सुना है कि स्पोर्ट्स कोटे से सरकारी नौकरी मिलती है। मेरी टीम पिछले तीन साल से जिले में कबड्डी की प्रतियोगिता

जीत रही है। अगर चपरासी की नौकरी कहीं मिल जाती तो बहुत कृपा होती," सूरज ने विनम्रता से कहा। "बात तो तुम्हारी सही है, पर उसके लिए खेल के क्षेत्र में और अच्छा प्रदर्शन करना होगा – राज्य के स्तर पर, देश के स्तर पर और पूरे जिले में पचास तरह के खेल होते हैं, अब हर एक विजेता को सरकारी नौकरी तो नहीं मिल सकती," डीएम ने समझाया। "सर, अगर आप चाहेंगे तो ये संभव है, मैं जानता हूँ," सूरज हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा। डीएम कुछ देर सोचते रहे। "ठीक है, बुधवार को ऑफिस आकर आवेदन पत्र दे दो, फिर देखते हैं क्या कर सकता हूँ। ठीक है?" "जी सर, बहुत-बहुत धन्यवाद," सूरज ने कहा। डीएम अपने काफिले के साथ आगे बढ़ गए। ऐसा लगा जैसे डूबते को तिनके का सहारा मिल गया हो। सूरज की आँखें डबडबा गईं, उसकी उम्मीदों को एक नई किरण मिल गई थी।

खारिनसी नदी के तट पर, बाँस की पतली टहनी-सी लहराती हुई सुधा, हाथों में ट्रॉफी थामे, हवा से बातें करती भाग रही थी, और सूरज एक भूखे शिकारी-सा उसका पीछा कर रहा था। वह दुबली-पतली, लंबी-सी, साधारण-सी लड़की थी, जिसका साँवला-सलोना आकर्षक चेहरा ऐसा प्रतीत होता था, मानो कुम्हार के पास मिट्टी कम पड़ गई हो, पर उसकी आँखों में एक अलग ही चमक थी। उसकी हँसी में अनखिले फूलों-सा भोलापन और एक शरारती चमक थी। "रुक जा सुधा!" सूरज की आवाज़ हवा में गूँजी। सुधा थककर हाँफती हुई रुक गई, उसके फेफड़े जैसे जल रहे थे, पर होंठों पर अभी भी विजयी ठहाका था। सूरज भी उसके पास आ पहुँचा, उसकी साँसें भी तेज़ चल रही थीं। सुधा को ज़रा भी आराम नहीं था, वह फिर से भागने को तैयार थी। "तुम्हारी चिढ़ाने की ये आदत मैं आज हमेशा के लिए छुड़ा दूँगा!" सूरज ने दहाड़ते हुए कहा, उसके स्वर में एक अघोषित चुनौती थी। सुधा खिलखिलाकर हँस पड़ी, उसकी हँसी नदी की लहरों में घुल गई, और उसने अपनी पूरी शक्ति झोंक दी। पर सूरज जैसा बलशाली एथलीट! सुधा कितनी भी तेज़ भागती, सूरज ने एक पल में उसे दबोच लिया। इस आपाधापी में, सूरज और सुधा दोनों संतुलन खोकर गिर पड़े, ट्रॉफी भी सुधा के हाथ से छूटकर पास की झाड़ियों में जा गिरी। सूरज ने उसे अपनी बांहों में भर लिया, दोनों की साँसें एक-दूसरे में घुल-मिल रही थीं। सुधा शरम से लाल हो गई। "अब बताओ कौन है बेवकूफ?" सूरज ने हाँफते हुए, अपनी जीत का अहसास कराते हुए पूछा। "मुझे नहीं पता?" सुधा ने फुसफुसाते हुए कहा। "क्यों, अब क्या हुआ? कुछ देर पहले तो मुझे चिढ़ाने में बड़ा मज़ा आ रहा था?" सूरज ने अपनी विजय पर अहंकार से इठलाते हुए कहा। "छोड़ो मुझे," सुधा ने अचानक गंभीर होते हुए कहा, उसकी आवाज़ में एक अजीब-सी दृढ़ता आ गई थी। सूरज ने उसके सर को हल्के से चूमा, जैसे कोई अनमोल चीज़ हो। "छोड़ो मुझे!" सुधा ने सूरज को झिड़कते हुए दूर धकेला, उसकी आँखों में गुस्सा उतर आया था। "सच में बेवकूफ ही हो तुम," सुधा ने खड़े होते हुए तंज़ कसा। "नाराज़ क्यों हो रही हो?" सूरज भी उसे मनाने के लिए

खड़ा हुआ, उसके चेहरे पर भोलापन था। "कोई देख लेगा तो? कभी कुछ सोचते भी हो? किससे पूछकर चूमा मुझे?" सुधा अब क्रोध से भरी थी, उसकी आवाज़ में कड़वाहट थी। "ऐसा लग रहा है जैसे पहली बार चूमा है," सूरज ने उसे समझाने की नाकाम कोशिश की। सुधा ने सूरज को एक ज़ोरदार धक्का दिया; सूरज अनियंत्रित होकर धड़ाम से गिर पड़ा। "तुम हो बेवकूफ। एक डाँट से ही चेहरे का रंग उतर गया!" सुधा ने अंगूठा दिखाकर, एक अंतिम विजय मुस्कान के साथ फिर भागना शुरू कर दिया। सूरज अपनी ट्रॉफी उठाकर उसका पीछा करता है, पर उसके पकड़ने से पहले ही सुधा सड़क पर पहुँच जाती है। सूरज ठिठककर रुक जाता है, जैसे किसी अदृश्य दीवार से टकरा गया हो। सुधा दूर से ही अपना चेहरा बनाकर उसे चिढ़ाती है और आगे बढ़ जाती है, उसकी हँसी ने ढलते सूरज के सारे रंगों को समेट लिया था, एक सुनहरी आभा बिखेरते हुए। सूरज ढलते हुए सूर्य को देखकर मुस्कुराता है और अपने बालों को सँवारते हुए, सुधा को एक दिन सबक सिखाने का दृढ़ निश्चय करता है। सूरज अपनी जीत की ट्रॉफी को गर्व से थामे घर के लिए निकल पड़ता है, उसके मन में एक मीठी चुनौती और एक अनोखी जीत का अहसास था।

चाय की दुकान पर चार लोग पहले से ही सूरज का इंतज़ार कर रहे थे। सूरज को देखते ही सभी उसके पास आकर उसे घेर लेते हैं। "सूरज भैया, मेरा आधार कार्ड बन गया क्या?" एक आदमी ने पूछा। "तुम्हारे बाएँ हाथ में दो उँगलियाँ हैं ही नहीं, इसलिए समय लग रहा है। दोबारा आवेदन करवाया है, देखते हैं कब तक आता है," सूरज ने चलते-चलते कहा। बाकी लोग उसके साथ चल रहे थे। "भैया, मेरे बेटे का जन्म प्रमाण पत्र कब तक आएगा? एक महीना हो गया," दूसरे आदमी ने पूछा। "वो जल्दी ही आ जाएगा। अब आप लोग जाइए, माँ-बाबूजी नाराज़ होंगे। जैसे ही काम हो जाएगा, मैं खुद पहुँचा दूँगा," घर के नज़दीक आने के बाद सूरज ने कहा। खेल जगत में अच्छा करने से उसकी जान-पहचान सरकारी विभागों में कुछ लोगों से हो गई थी, जिसकी वजह से वह गाँव के लोगों के ये सारे काम करवाने लगा था। इन सब कामों से सूरज को कुछ कमाई हो जाती थी। सूरज अपने घर पहुँचता है, जहाँ उसकी बीमार माँ (माला) और पिता (अवधेश) उसका इंतज़ार कर रहे हैं। घर के अंदर प्रवेश करते ही सवालियों की बौछार हो जाती है। "सात बज गए। कहाँ थे तुम अब तक?" अवधेश ने खाँसते हुए पूछा। "सब्ज़ी लाने गया था और कहाँ जाऊँगा," सूरज ने सब्ज़ी के थैले को पटकते हुए कहा। पटकने से थैले में रखा ट्रॉफी बाहर निकल जाता है। "वाह बेटा! मुझे यकीन था कि तुम ही ट्रॉफी जीतोगे," माला ने बिस्तर पर पड़े-पड़े सूरज का उत्साह बढ़ाया। सूरज चुपचाप ट्रॉफी को उठाकर उस रैक पर रख देता है जहाँ पहले से कुछ और ट्रॉफी रखी थीं। "जल्दी से पानी उबालो और छान कर रखो! तुम्हारी माँ कब से प्यासी बैठी हैं। आज बाल-बाल बचीं हैं बिना उबला पानी पीने वाली थी, मैं पड़ोस से पानी माँग कर लाया।" अवधेश ने नाराज़ होते हुए कहा। "अब और खेलने का फायदा नहीं। राज्य स्तर की टीम में खेलने के लिए पैसे

माँगते हैं और जब तक राज्य स्तर पर नहीं खेला नौकरी नहीं मिलेगी," सूरज ने निराशा व्यक्त की। "मुझे तो पहले से पता है, इस देश में खेल-कूद कर लोग अपनी ज़िंदगी ख़राब करते हैं। अभी भी समय है, पुलिस भर्ती की तैयारी शुरू कर दे। कबड्डी खेलकर शरीर तो मज़बूत हो ही गया है, और ये गाँव वालों का काम करवाने में अपना समय ख़राब मत कर," अवधेश ने अपनी दुनियादारी की समझ सूरज के सामने रखी। "अब तो मुझे आपकी बात भी सही लगने लगी है।" सूरज के इस कटाक्ष पर माला खाँसते हुए हँसने लगीं। "समय सब सिखा देता है, समझ गए न। अब ये बताओ कि आंदोलन कैसा चल रहा है?" अवधेश ने चिढ़ते हुए पूछा। "सब अपना समय बर्बाद कर रहे हैं, कुछ नहीं होगा इस आंदोलन से।" "उस फैक्ट्री की वजह से पूरा गाँव बीमार है, मैं बीमार हूँ, तेरी माँ बीमार है, और तू कहता है ये आंदोलन समय की बर्बादी है!" अवधेश ने जोर देते हुए कहा, जिससे वे फिर खाँसने लगे। सूरज ने अवधेश को पीने का पानी दिया। "आप क्यों इसे परेशान कर रहे हैं? जा बेटा, आराम से खाना बना ले। इन्हें दिन भर बात करने को कोई मिलता नहीं, तो तुम्हारा ही सर खाना शुरू कर दिए," माला ने बीच-बचाव किया। "योगेंद्र जी ने कहा है कि वो कोर्ट से हर किसी को मुआवज़ा दिलवाएँगे। अमेरिका में एक कंपनी के खिलाफ़ ऐसा हो चुका है," अवधेश ने बहुत उम्मीद से यह बात कही, जैसे यही मुआवज़ा उनकी आखिरी उम्मीद हो। "हम लोग अमेरिका में नहीं हैं, इसलिए कुछ नहीं मिलने वाला," सूरज ने घर में बने छोटे से रसोईघर से कहा। "किसी को मेरी बातों की परवाह ही नहीं है," अवधेश ने झुंझलाते हुए कहा और घर से बाहर निकल गए।

सुधा गाँव के ठीक बीच में बने श्रीकृष्ण भगवान के प्राचीन मंदिर में पहुँची। यह चौदह सौ साल पुराना मंदिर अद्भुत सुंदरता और कला का संगम था। इसकी दीवारों पर पत्थरों को तराशकर बनाई गई जटिल मूर्तियाँ, देवी-देवताओं और पौराणिक कथाओं के दृश्यों को जीवंत करती थीं। यह मंदिर न केवल पूजा का पवित्र स्थान था, बल्कि प्राचीन शिल्पकारों की अद्भुत रचनात्मकता और असीम धैर्य का प्रतीक भी था। इसकी वास्तुकला, चाहे वह नागर शैली हो, द्रविड़ शैली हो या कोई और, अपने आप में एक कहानी कहती थी और उस समय की संस्कृति तथा आस्था से हमें गहराई से जोड़ती थी। वहाँ उसके पिता, मुरारी जी, और भाई, गिरधर, दोनों श्रीकृष्ण भगवान को भोग लगा रहे थे। सुधा भी वहीं हाथ जोड़कर बैठ गई। भगवान को भोग लगाने के बाद, मुरारी जी और गिरधर मंदिर को बंद करके मंदिर परिसर में ही बने अपने आवास की ओर चल पड़े। "खाना बन गया बेटा?" मुरारी जी ने मुस्कराते हुए प्यार से पूछा। "हाँ बाबू जी, एक बात पूछूँ?" सुधा ने अपनी मीठी आवाज़ में कहा। "हाँ, पूछो?" "क्या फैक्ट्री सच में बंद हो जाएगी?" सुधा के स्वर में एक हल्की चिंता थी। "मुझे नहीं पता, परन्तु पूरे इलाके का पानी इस फैक्ट्री की वजह से दूषित हो चुका है। गाँव के लोग बीमार पड़कर मर रहे हैं और सरकार सोई हुई है," मुरारी जी ने चलते हुए

गंभीरता से कहा, उनके चेहरे पर एक गहरी निराशा थी। "फिर उन लोगों का क्या होगा जो उसमें नौकरी करते हैं? गाँव के उन नौजवानों का क्या होगा जो इस फैक्ट्री में नौकरी करने का सपना संजोये हुए हैं?" सुधा की आवाज़ में निराशा की झलक स्पष्ट थी। "तू क्यों इतनी चिंता कर रही है? ऐसे भी जान से बढ़कर नौकरी तो है नहीं। अनजाने बीमारी से तिल-तिल कर मरने से अच्छा है मज़दूरी करके दो वक्त की रोटी हासिल की जाए," पिता की इस बात पर सुधा मुस्कुराकर उनकी फिक्र को दूर करने का प्रयास करती है। "लगता है सूरज फैक्ट्री में नौकरी का प्रयास कर रहा था," गिरधर ने उसे छेड़ते हुए कहा। "मुझे छेड़ने का प्रयास मत कीजिये भैया," सुधा ने मुँह मटकाकर नाराज़ होने का नाटक किया। "बेटी, सूरज से दोस्ती ठीक है, परन्तु बात आगे बढ़ाने से पहले सोच लेना, हम उससे अच्छा लड़का तुम्हारे लिए ढूँढ सकते हैं," मुरारी जी ने सलाह दी। "वक्त आने पर मैं आपको बता दूँगी," सुधा ने कहा। बात करते-करते तीनों घर पहुँच जाते हैं।

पूरा गाँव फसल की कटाई में जुटा था। सूरज और उसके साथी, हँसिया चलाकर फसल काटने के साथ-साथ, पास काम कर रही लड़कियों पर भी तीखी नज़रें गड़ाए हुए थे। लड़कियाँ कटी हुई फसल को करीने से एक जगह इकट्ठा कर रही थीं। "किरण तो अच्छे से काम कर रही है, गोलू" राहुल ने मज़ाक किया। "करना ही चाहिए! आखिर मेरे जैसा पति मिलने वाला है, फिर भी पिंकी से तो कुछ काम ही नहीं हो पा रहा है। धूप में लग रहा है अब गिरी की तब गिरी," गोलू ने भी मज़ाक करते हुए कहा। उसकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि पिंकी चक्कर खाकर गिर पड़ी। राहुल तेज़ी से दौड़कर पिंकी के पास पहुँचा। पिंकी के माता-पिता भी घबराकर भागे चले आए। एक आदमी तुरंत पानी लेकर आया। "पिंकी! पिंकी! क्या हो गया तुम्हें?" राहुल ने घबराहट में पूछा। यह देखकर पिंकी के पिता को गुस्सा आ गया, "पिंकी! पिंकी! क्या कर रहे हो जाकर फसल काटो, हमलोग हैं न!" पिंकी के पिता की बात को अनसुना कर, राहुल ढीठ की तरह वहीं जमा रहा। पानी की बूँदें पिंकी के चेहरे पर पड़ते ही उसे होश आ गया। पिंकी और राहुल ने एक-दूसरे को देखकर हल्की मुस्कान बिखेरी। "क्या चल रहा है यहाँ? पिंकी तुम सीधा घर जाओ!" पिंकी के पिता ने गरजकर कहा। पिंकी उठकर घर की ओर जाने लगी। "आप कहें तो मैं छोड़ आऊँ?" राहुल ने मुस्कुराते हुए पूछा। पिंकी के पिता ने एक छड़ी उठाई। "ठीक से खिलाया करिए!" इतना कहकर राहुल तेज़ी से भागा। राहुल वापस अपने दोस्तों के साथ काम पर लग गया। "क्या हुआ, ससुर जी ने स्वागत नहीं किया?" सूरज ने फसल काटते हुए पूछा। "छोड़ न ससुर को! अच्छा हुआ पिंकी घर चली गई, धूप में काली हो जाती," राहुल ने चिंता जताते हुए कहा। "सूरज के लिए अच्छा है, सुधा मंदिर में काम करती है इसलिए धूप से बची रहती है," गोलू ने चुटकी ली। "देख-देख सुधा इधर ही आ रही है, लगता है सूरज के लिए खाना लाई है," मुन्ना ने चौंकते हुए कहा। "अब तो सुधा भी धूप में निकल गई, अब तो तसल्ली है न तुझे?" सूरज ने हँसिया को ज़मीन पर

रखकर प्रणाम किया और खेत की आड़ में रखी पानी की बोतल से हाथ-मुँह धोने लगा। "तुम सबके लिए खाना लाई हूँ, चलो हाथ-मुँह धो लो," सुधा ने पास आकर कहा। "तुम्हें इतनी तकलीफ़ करने की ज़रूरत नहीं है। इन भुक्खड़ों का पेट भरना तुम्हारे बस का नहीं है," सूरज ने आते ही कहा। "अच्छा! सुधा के हाथों का खाना हमें भी मिल रहा है तो तुम्हारे पेट में दर्द हो रहा है? चलो हाथ-मुँह धोकर टूट पड़ते हैं!" राहुल ने उत्साह से कहा। "तकलीफ़ की कोई बात नहीं है। पिताजी ने कहा है कि फसल अच्छी नहीं हो पा रही है इसलिए यह मंदिर की ज़िम्मेदारी है कि सभी का ख्याल रखा जाए," सुधा जितनी पतली थी, उसकी आवाज़ भी उतनी ही पतली और मीठी थी। "कितनी प्यारी आवाज़ है!" गोलू ने चौंकते हुए कहा "लार मत टपका, हाथ-मुँह धोकर आ," सूरज ने गोलू के सर पर एक थप्पड़ मारते हुए कहा। "अब फसल अच्छी नहीं हुई है तो गुस्सा मेरे ऊपर क्यों निकाल रहे हो?" गोलू भी हाथ धोने चला गया, राहुल भी उसके पीछे-पीछे जा रहा था। "शांत हो जा भाई, किसी की गलती नहीं है। उस फ़ैक्टरी ने ज़मीन के नीचे का पानी इतना प्रदूषित कर दिया है कि उसमें फसल पनप ही नहीं पाती। पता नहीं कब तक ये चलेगा," राहुल ने बीच-बचाव करने के इरादे से कहा।

सभी ने भोजन समाप्त किया। सुधा ने स्नेहपूर्वक सूरज को हाथ धुलाए। "कुछ बचा है सुधा?" गोलू ने ललचाई आँखों से पूछा। "उठ जा भुक्खड़, बहुत काम बाकी है, त्योहार की भी तैयारी करनी है," सूरज ने डाँटते हुए कहा। "कैसा त्योहार! कंगाली में आटा गीला," गोलू ने निराशा से कहा। "इतना निराश होने की ज़रूरत नहीं है। प्रभु सब ठीक कर देंगे," सुधा ने ऐसा कहकर वापस जाना शुरू किया। सूरज फिर से खेत में काम में जुट गया। गाँव वाले अपनी-अपनी क्षमतानुसार मंदिर के प्रांगण में अनाज की बोरियाँ रख रहे थे। सूरज और उसके साथी भी एक-एक बोरी अनाज अपनी साइकिल से उतारकर मंदिर के प्रांगण में जमा कर रहे थे। सूरज और उसके साथी मुरारी जी पंडित के पास गए। "पंडित जी, हमारे गाँव पर कौन सी काली छाया पड़ गई है? न फसल अच्छी होती है, न लोग स्वस्थ हैं," सूरज ने चिंतित स्वर में पूछा। "बेटा, मैं तो रोज़ प्रार्थना करता हूँ, परंतु कर्म तो हमें ही करना होगा। प्रभु तो सिर्फ़ रास्ता दिखा सकते हैं, चलना तो हमें ही पड़ेगा। धूप में छाता लेकर खड़े हो जाओगे और कहोगे कि प्रभु छाया दीजिए तो कैसे होगा? छाता तुम्हें ही खोलना होगा," पंडित जी ने मुस्कराते हुए कहा। "फ़ैक्टरी के खिलाफ़ प्रदर्शन तो शुरू हो गया है, पर मुझे नहीं पता ये सही है या गलत। गाँव के कुछ परिवार तो उससे पल ही रहे थे।" "प्रभु की कृपा से पल तो हम तब भी रहे थे जब ये फ़ैक्टरी नहीं थी, और आगे भी पल ही लेंगे। परंतु इसने तो पानी दूषित कर दिया। वो तो भला हो एनजीओ का जिसने हमें ये सब बताया, नहीं तो हम कभी जान भी नहीं पाते।" "अब वही होगा जो प्रभु चाहेंगे," सूरज ने गंभीरता से कहा। "अच्छा, छोड़ो ये सब, कल के त्योहार की क्या तैयारी है?" पंडित जी ने माहौल बदलने का प्रयास किया। "सारी तैयारियाँ हो चुकी हैं। इस साल तो हमने फ़ैक्टरी से चंदा भी नहीं लिया है।

फिर भी कोई दिक्कत नहीं हुई। "प्रभु की कृपा है, उनका पर्व है तो वही पूरा करेंगे।" यह मंदिर 1400 साल पुराना था। गाँव के लोगों की इसमें गहरी आस्था थी। पूरा मंदिर परिसर भगवा झंडों से सजा दिया गया था। बच्चों के लिए झूले की व्यवस्था थी। लड़कियाँ गोलगप्पे और चाट का मज़ा ले रही थीं। सूरज के दोस्त छिपकर शराब पी रहे थे। "सूरज, आज तुम भी पी ही लो," गोलू ने पीते हुए कहा। "इन सब चीज़ों को मुझसे दूर ही रखना," सूरज ने गुस्से से कहा। "देखो उधर पिंकी और सुधा आ रही हैं!" सूरज ने आवाज़ लगाई। सभी पीना छोड़कर "कहाँ है? कहाँ है?" पूछने लगे। "क्या बात है बेवड़ों, लड़की का नाम सुनते ही पीना बंद!" सूरज ने हँसते हुए कहा। "चलो अपनी ये दुकान बंद करो, कार्यक्रम शुरू होने वाला है," सूरज ने गोलू के सिर के पीछे थपकी देते हुए कहा। सभी फटाफट उठकर मंदिर की ओर जाने लगे।

वहाँ पहले से ही सुधा, पिंकी और उनकी अन्य सहेलियाँ सज-धज कर मौजूद थीं, उनकी सुंदरता पर सबकी निगाहें ठहर रही थीं। "मेरी वाली तो पहचान में ही नहीं आ रही है," गोलू ने आश्चर्य से फुसफुसाया। सूरज ने उसे डाँटते हुए कहा, "मुँह बंद रख घोंचू, सबका यही हाल है।" मंच पर दो नृत्यांगनाएँ आई, जिन्होंने रंग-बिरंगी पारंपरिक सिल्क की साड़ियाँ पहन रखी थीं। उनके शरीर पर चाँदी के विशेष आभूषण जैसे शीरसी (मुकुट), कर्णफूल (कान के झुमके), मेखला (कमरबंद) और पैरों में घुँघरू सजे थे, जो उनकी हर चाल पर झनझनाते। हाथों और पैरों पर लगा अलता और आँखों में गहरा काजल उनकी सुंदरता को और भी आकर्षक बना रहा था। उन्होंने ओडिसी नृत्य के माध्यम से राधा और कृष्ण के जीवन और उनके दिव्य प्रेम को बेहद खूबसूरती और भावनात्मक गहराई से दर्शाना शुरू किया। ओडिसी नृत्य अपनी कोमलता, सुंदरता और त्रिभंग मुद्रा के लिए जाना जाता है, जहाँ शरीर को तीन हिस्सों (सिर, धड़ और पैर) से मोड़कर मूर्तिकला जैसी भंगिमाएँ बनाई जाती हैं। इसे "मोबाइल मूर्तिकला" भी कहा जाता है। इस नृत्य में लास्य (कोमल) और तांडव (उग्र), दोनों पहलुओं का अद्भुत समावेश था, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर रहा था। मंदिर में जयदेव का गीतगोविंद ओडिसी संगीत की शैली में गाया जा रहा था, जिसकी धुनें वातावरण में घुल रही थीं। ऐसा मनोरम माहौल बन गया था जैसे आँखों और कानों से रिस कर भक्ति रस सीधा मन तक पहुँच रहा हो। हर कोई आह्लादित होकर इस क्षण का आनंद ले रहा था। लेकिन गोलू का ध्यान कहीं और ही था। वह सूरज के पास से खिसकते-खिसकते किरण के पीछे जा पहुँचा। किरण भी उसे अपने पीछे खड़ा देखकर शरमा गई। गोलू ने उसे एक फूल दिया, जिसे किरण ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। गोलू की खुशी का ठिकाना नहीं था, उसके चेहरे पर एक अलग ही चमक थी। तभी सूरज और गोलू की नज़रें मिलीं। सूरज ने उसे वापस आने का इशारा किया और गोलू तुरंत अपने साथियों के पास लौट आया और फिर से नृत्य का आनंद लेने लगा। सूरज ने एक बार फिर गोलू के सिर के पीछे थपकी मारी, जैसे कह रहा

हो, "सुधर जा।" नृत्य समाप्त होते ही, एनजीओ के प्रमुख योगेंद्र मंच पर आए और गाँव वालों को संबोधित किया। उनके शब्दों में एक अग्नि थी, एक पुकार थी। "बहुत हुआ! बहुत हुआ अत्याचार! अब करना है ऐसा प्रहार, तोड़ देनी है सारी दीवार। कल के लिए हो जाओ तैयार!" योगेंद्र के इस ओजस्वी आवाहन पर पूरा गाँव जय श्रीकृष्ण के गगनभेदी हुंकार से गूँज उठा। वातावरण में एक नई ऊर्जा, एक नया संकल्प भर गया था।

तमन्ना, जयेश का इंतज़ार कर रही थी जब उसके फोन की घंटी बजी। "हैलो तमन्ना, मैं आज देर से आऊँगा," जयेश ने कहा। "क्यों? आज कुछ ज़्यादा काम है क्या?" तमन्ना का सवाल सुनकर जयेश एक पल को चौंका, क्योंकि इससे पहले तमन्ना इतनी पूछताछ नहीं करती थी। "हाँ, आज काम कुछ ज़्यादा है, तुम सो जाना," उसने संक्षिप्त उत्तर दिया। "ठीक है," तमन्ना ने कहा। जयेश अपने ऑफिस में व्यस्त था तभी राका भागता हुआ आया। "साहब, कल फ़ैक्टरी के बाहर ज़बरदस्त विरोध की योजना चल रही है। गाँव में जो मेरा खबरी है, उसने मुझे अभी-अभी बताया," राका ने साँस लेते हुए कहा। "जल्दी से गाड़ी निकालो!" जयेश ने तुरंत आदेश दिया।

जयेश एक मंत्री, जवाहर सिंह से मिलने पहुँचा। घर के बाहर इंस्पेक्टर प्रबल मुस्तैदी से बैठा था, जो जयेश को देखते ही खड़ा हो गया और झुक कर प्रणाम किया। जयेश ने उसका अभिवादन स्वीकार किया और आगे बढ़ गया। जवाहर सिंह कभी छोटा-मोटा नेता हुआ करता था, जो वार्ड का चुनाव लड़ता था। जयेश ने ही उसे फंडिंग देकर मंत्री तक बनवाया था।

तमतमाए हुए चेहरे के साथ जयेश घर के अंदर दाखिल हुआ। उसके साथ राका और रंजीत भी थे। बैठक के कमरे में जवाहर पहले से ही जयेश का इंतज़ार कर रहा था। "आइए-आइए, आपका ही इंतज़ार कर रहा था। आइए बैठिए," जवाहर ने अपने चेहरे पर अधिकतम हँसी लाकर जयेश का स्वागत किया। **जवाहर एक दुबला-पतला, औसत कद का व्यक्ति था। उसका चेहरा लंबा, त्वचा का रंग गोरा और नैन-नक्श तीखे थे। बढ़ती उम्र के साथ उसके सिर के बाल कम हो गए थे, जिसे वह अक्सर अपनी प्रतिष्ठित गांधी टोपी से ढँक कर रखता था। उसकी चाल-ढाल और चेहरे के हाव-भाव में एक तरह का घमंड और दूसरों को कम आँकने का भाव स्पष्ट रूप से झलकता था। सफ़ेद कुरता पायजामा उसके रंगीन मिजाज के साथ मेल नहीं खाता था।** "मेरी फ़ैक्टरी के खिलाफ़ आंदोलन कब बंद होगा?" जयेश ने सीधा सवाल किया। "आपकी फ़ैक्टरी तो चल रही है न, फिर क्यों चिंता करते हैं? भौंकने दीजिए कुत्तों को," जवाहर ने उदासीनता से कहा। "मामला बड़ा होते देर नहीं लगती," जयेश ने पलटवार किया। "आपने बात करने की बजाय अपने गुंडों को भेजकर गाँव वालों को पिटवा दिया, तभी से ये आंदोलन शुरू हो गया। कुछ पैसे दे देते तो काम बन जाता," जवाहर ने शांत भाव से

कहा। "अच्छा! अब तुम मुझे सिखाओगे कि क्या करना चाहिए? इन गँवारों को इस फ़ैक्टरी की अहमियत पता भी है? इस फ़ैक्टरी की वजह से देश कॉपर का निर्यात कर पाता है। अगर फ़ैक्टरी बंद हो गई तो बाहर से मँगवाना पड़ेगा," जयेश भड़क उठा। "आप तो बुरा मान गए, मैं देखता हूँ," जवाहर ने नरमी दिखाने की कोशिश की। "देखने से काम नहीं चलेगा। कल आंदोलन तेज़ होने वाला है और कल ही इसे कुचलवा दो। दो-चार मरते हैं तो मरने दो, मुझे फ़र्क नहीं पड़ता," जयेश की आवाज़ में रूखापन था।

"ऐसा मत कहिए, सब शांति से हो जाएगा," जवाहर ने समझाने का प्रयास किया। "पंद्रह करोड़ खर्च किया हूँ तब जाकर तुम मंत्री बने हो। मेरे एहसान को चुकाने का यही समय है जवाहर," जयेश ने कड़े शब्दों में कहा। "गाँव वाले कहीं और जाने के लिए पच्चीस करोड़ माँग रहे हैं। मैंने ऊपर बात की है, उन्होंने पाँच करोड़ पार्टी फंड में जमा कराने को कहा है," जवाहर ने बताया। "वाह जवाहर! अब तुम पार्टी के लिए काम करने लगे? मेरे पैसों की कोई कीमत नहीं है?" जयेश ने व्यंग्य किया। "आप नाराज़ बहुत जल्दी हो जाते हैं। मैं आपके काम में ही लगा रहता हूँ," जवाहर ने आत्मविश्वास से कहा। जवाहर की इस बात पर जयेश विचार करने लगा। "ठीक है, मैं पाँच करोड़ पार्टी फंड में दूँगा, पर इन गँवारों को धक्के मारकर निकालो वहाँ से," उसने सहमति जताई। "समझिए काम हो गया। इंस्पेक्टर प्रबल आपका काम करवा देगा। प्रबल को बुलाओ," जवाहर ने राका से कहा। राका कमरे से बाहर गया और प्रबल को साथ ले आया। "देखो इंस्पेक्टर, मुझे पता है कि गाँव वाले मानने को तैयार नहीं हैं, परंतु कुछ भी करके इस आंदोलन को बंद करवाओ," जवाहर ने गंभीरता से निर्देश दिया। कमरे में गाँव का मुखिया पवन दाखिल हुआ। "आओ-आओ पवन, बताओ क्या ख़बर है?" जवाहर ने पूछा। "इसे कुछ नहीं पता होगा, गाँव वाले अब इसकी सुनते कहाँ हैं," जयेश ने कटाक्ष किया। पवन हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। "साहेब, मैंने तो गाँव वालों को बहुत समझाया कि फ़ैक्टरी में गाँव के लगभग दस घर के लोग काम करते हैं। अगर ये बंद हो गया तो उनकी रोज़ी-रोटी का क्या होगा? सारा गड़बड़ उस एनजीओ वाले योगेंद्र का किया हुआ है। उसी के बहकावे में आकर गाँव वाले इतना बड़ा आंदोलन खड़ा कर पाए," पवन ने विनीत स्वर में सफ़ाई देने का प्रयास किया। "तुम्हारा बेटा भी है न फ़ैक्टरी में?" जयेश ने पूछा। "जी साहेब," पवन ने कहा। "योगेंद्र का सादा कुर्ता, गमछा और चप्पल देखकर गाँव वाले धोखा खा गए। देश के सारे गद्दारों की पैरवी करता फिरता है। विपक्षी पार्टी का दलाल है। वो अकेला नहीं है, पूरा विपक्ष और उनके समर्थक मीडिया उनके साथ हैं। हमें पूरी ख़बर है," जयेश ने योगेंद्र पर तीखा प्रहार किया। योगेंद्र का नाम सुनते ही जवाहर क्रोधित हो गया और एक ही झटके में शराब का पूरा ग्लास खाली कर दिया। "रात बहुत हो चुकी है, चलता हूँ, तुम भी सो जाओ," जयेश ने जवाहर को पीने के लिए अकेला छोड़ना ही बेहतर समझा। जयेश के साथ-साथ बाकी लोग भी जवाहर का अभिवादन करके कमरे से निकल गए।

जवाहर का असिस्टेंट नरेश उसके पास आया। "सर, ये जयेश तो आपको कुछ समझता ही नहीं है," नरेश ने दाँत निपोरते हुए कहा। "दूसरों की ताकत का इस्तेमाल तब तक करो जब तक खुद ताकतवर न बन जाओ और अपनी शक्तियों को छुपा कर समय का इंतज़ार करना चाहिए, जब तुम्हारी गर्दन किसी और के हाथ में हो तो चुप रहने में ही भलाई है," जवाहर की इस बात पर नरेश दुविधा में पड़ गया। "नहीं समझे? वक्त आने पर समझ जाओगे," जवाहर के चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान आ गई, जो आने वाले समय में कुछ बड़े उलटफेर का संकेत दे रही थी।

रात के ग्यारह बजे, जयेश ने घर में कदम रखा, और सामने तमन्ना को देख वह हक्का-बक्का रह गया। यह देखकर वह इसलिए भी अचंभित था, क्योंकि तमन्ना आमतौर पर रात नौ बजे तक सो जाती थी, ताकि वह सुबह जल्दी उठकर पूजा कर सके। "तमन्ना, तुम अब तक सोई क्यों नहीं?" जयेश ने आश्चर्य से पूछा। तमन्ना की आँखों में हल्की चमक थी। "बस, आपका इंतज़ार कर रही थी," उसने कोमलता से कहा। जयेश को याद आया कि तमन्ना पहले कितनी जल्दी सो जाती थी। "पर तुम तो हमेशा जल्दी सो जाती थी," उसने कहा। तमन्ना ने तुरंत पलटकर पूछा, "मेरा इंतज़ार करना आपको अच्छा नहीं लगा?" जयेश ने पलक झपकते ही जवाब दिया, "नहीं! नहीं! यह मुझे बहुत अच्छा लगा।" उसके चेहरे पर एक गहरी मुस्कान फैल गई। "खाना लगा दूँ?" तमन्ना ने पूछा। "मैं बाहर से खा कर आया हूँ। चलो, अब सोया जाए," जयेश ने कहा, और प्यार से तमन्ना के कंधे पर हाथ रखा। दोनों एक-दूसरे को देख मुस्कराए। तमन्ना ने अपना सिर जयेश के कंधे पर रखा, और वे खामोशी से बेडरूम की ओर बढ़ गए, उनके बीच शब्दों से कहीं गहरा एक अटूट रिश्ता था।

सुधा सुबह जल्दी उठकर अपने पिता मुरारी जी के साथ मंदिर के कार्यों में लग जाती थी। गाँव के लोग सूर्योदय होते ही मंदिर आना शुरू कर देते, इसलिए मुरारी जी उससे पहले ही प्रभु की पूजा-अर्चना और भोग का काम संपन्न कर लेते थे। सुधा की उम्र महज सात साल थी जब एक रहस्यमयी बीमारी ने उसकी माँ को लील लिया। नन्हीं, दुबली-पतली, चंद्रकिरण-सी सुधा को गाँव की महिलाओं ने ही अपने दुलार की छाँव में बड़ा किया, पर इस प्यार ने उसे बिगाड़ भी दिया था। मुरारी जी ने ही सुधा का परिचय सूरज से कराया और सूरज को स्कूल में सुधा पर नज़र रखने को कहा, क्योंकि स्कूल से ढेर सारी शिकायतें आने लगी थीं। सूरज शुरुआत से ही एक अनुशासित छात्र था। मुरारी जी और गिरधर मंदिर के कार्यों में व्यस्त रहते और सुधा दिन भर कभी किसी चाची के यहाँ तो कभी किसी काकी के यहाँ और कभी किसी मौसी के यहाँ रहती। स्कूल जाने के नाम पर उसे मानो बुखार आ जाता था। अगर मुरारी जी कभी नाराज़ हो जाते तो सुधा रो-रोकर अपना बुरा हाल कर लेती और फिर पूरे गाँव को उसे मनाना पड़ता था। कभी माली फूल लाने में देर करता तो वह उसकी

साइकिल से हवा निकाल देती थी। लाड़-प्यार ने उसे पूरी तरह जंगली बना दिया था। सुधा एक अल्हड़ पुरवाई और किसी झंझावात की तरह तोड़-फोड़ मचाती रहती। कुछ वर्षों तक उसका यह उपद्रव चलता रहा। गाँव की औरतें आए दिन पिता और पुत्री के बीच-बचाव किया करती थीं। सूरज ने स्कूल में जब से उस पर नज़र रखना शुरू किया था, तब से उसने सूरज के इशारों का मौन अनुशासन स्वीकार करना शुरू कर दिया था। ये सब इतने स्वाभाविक ढंग से हुआ कि दोनों इस बंधन से अनजान थे। दोनों का एक-दूसरे के प्रति अधिकार और आकर्षण इतना सहज था कि सीधे मन की गहराइयों में उतर गया। समय के साथ सुधा ढीठ भी हो गई थी। उसकी सारी चंचलता, उग्रता, लड़ाई-झगड़ा सभी से हटकर सूरज पर केंद्रित हो गया था। सूरज से लड़ना, झगड़ना, उसे चिढ़ाना बस इतना ही उसे भाता था। जब भी वह घर में गुमसुम बैठी रहती तो मुरारी जी समझ जाते कि ज़रूर सूरज से बातचीत बंद है। अब वह शांत और सुशील हो गई थी, पर सूरज को देखते ही उसका बचपना लौट आता था। जब तक सूरज को चिढ़ा न ले, उसका खाना नहीं पचता था। धीरे-धीरे उसे दुनियादारी की समझ आने लगी थी। वह अपने-पराए का अंतर समझने लगी थी। भावनाओं का कद्र कौन कर सकता है, इसका एहसास मन में उतरने लगा था। इसीलिए तो अब वह अपने पिता और भाई के खाने में पसंद-नापसंद का पूरा ख्याल रखती थी। अपने पिता से जो भी स्नेह भरा फटकार या उपदेश मिलता, वह सूरज को सुनाकर मन हल्का कर लेती थी। अपने घर के साथ-साथ सूरज के माता-पिता का भी वह पूरा ख्याल रखती थी। अगर सूरज नहीं होता तो उनके भोजन की जिम्मेदारी सुधा की ही थी।

जयेश अपने घर के ऑफिस में अकेला ही काम कर रहा था। तभी तमन्ना पूजा की थाल लिए अंदर आती है। जयेश अपनी कुर्सी पर बैठा है, और तमन्ना टेबल के सामने खड़ी। अचानक उसे आज के दिन का "पूर्वानुभव" होता है और वह उन्हीं बातों को दोहराने लगती है। "क्या बात है, आज न चंदन है और न ही मुंशी जी?" तमन्ना पूछती है। "आज उन्हें यहाँ आने की जरूरत नहीं है, सीधा काम के लिए जाना है," जयेश जवाब देता है। "आपसे कुछ बात करनी है?" तमन्ना थोड़ा हिचकते हुए पूछती है। "हाँ, बोलो?" जयेश कहता है। "पिछले कुछ महीनों से आपका वजन कम होता जा रहा है। किसी अच्छे डॉक्टर से दिखाते क्यों नहीं?" तमन्ना अपनी चिंता व्यक्त करती है। "तुम्हारे कहने पर मैंने पिछले महीने भी डॉक्टर को दिखाया था, क्या निकला? कुछ नहीं, बेकार में समय और पैसे बर्बाद," जयेश चिड़चिड़ा उठता है। "पिछले एक महीने में भी तो कुछ वजन कम हुआ है, इसे रोकना ही होगा, नहीं तो ये कब तक चलेगा?" तमन्ना हार नहीं मानती। "मुझे फर्क नहीं पड़ता," जयेश बेपरवाही से कहता है। "एक बार मेरे लिए, फिर से डॉक्टर से दिखा लीजिए," तमन्ना के आग्रह में इतनी वेदना थी कि जयेश सोचते हुए खड़ा होता है और अपना कोट पहनकर तमन्ना के सामने आ जाता है। "ठीक है। मैं दूसरे डॉक्टर से दिखा लूँगा," जयेश कहता है। तमन्ना मुस्कराते हुए तिलक

लगाकर जयेश को विदा करती है। जयेश चला जाता है। गाड़ी में बैठते ही वह रुमाल से तिलक पोंछ लेता है। तमन्ना को नहीं पता कि भविष्य में क्या होगा। वह ऑफिस में जयेश की कुर्सी पर बैठकर रोने लगती है, और उसकी नज़र टेबल पर रखे उन दोनों की तस्वीर पर पड़ती है। तमन्ना अपने आँसुओं को पोंछते हुए ऑफिस से निकलकर अपने कमरे में जाती है। अपने कमरे में जाकर उसने अपना फ़ोन देखा। फ़ोन देखकर तमन्ना के चेहरे पर मुस्कराहट आ गई। ग्रेस ने नवीन का नंबर भेजा था। कॉलेज में नवीन भी तमन्ना का मित्र था, किन्तु जयेश के प्यार में नवीन कब और कैसे खो गया, तमन्ना को अब याद भी नहीं। बस नवीन की वो ललचाई आँखें याद थीं जिससे वह बार-बार तमन्ना को देखा करता था, पर वह कभी मन की बात बोल नहीं पाया।

"हैलो नवीन," तमन्ना ने कहा। "आप कौन बोल रही हैं?" दूसरी तरफ से आवाज़ आई। "मैं तमन्ना बोल रही हूँ। हैलो! हैलो!" तमन्ना ने ज़ोर देकर कहा। "हाँ तमन्ना, बोलो, कैसे याद किया?" नवीन ने अचंभित होते हुए पूछा। "कहीं व्यस्त तो नहीं हो?" तमन्ना ने पूछा। "व्यस्त तो हूँ," नवीन ने कठोरता से जवाब दिया। "मैं ज़्यादा समय नहीं लूँगी," तमन्ना ने कहा। "मैं तो मज़ाक कर रहा था, मैं तुम्हारे लिए कभी व्यस्त नहीं रहा। आराम से बताओ क्या बात है," नवीन ने बातचीत को अनौपचारिक बनाते हुए कहा। तमन्ना के चेहरे पर युवा मुस्कान आ गई, मानो कॉलेज के दिनों की सारी बातें एक क्षण में याद आ गई हों। "दरअसल काम ये है कि मैं जयेश के काम के बारे में ज़्यादा कुछ नहीं जानती। तुम पत्रकार हो, क्या तुम पता कर सकते हो?" तमन्ना ने हिचकते हुए कहा। "ये काम तो तुम्हें शादी से पहले करना चाहिए था," नवीन ने कटाक्ष किया, मानो एक टीस उभर गई हो। "क्या पुरानी बातों में समय बर्बाद करने का कोई फायदा है?" तमन्ना ने शांत स्वर में कहा, जैसे कि अपनी आवाज़ से मरहम लगाने का प्रयास कर रही हो। नवीन कुछ देर चुप रहा। अपनी भावनाओं को समेट कर उसने कहा, "क्या जानना है?" "बस यही कि क्या काम करते हैं। इनकी पहचान कैसी है। लोग इनके बारे में क्या सोचते हैं।" तमन्ना ने हिचकिचाते हुए कहा, क्योंकि एक पत्नी के लिए अपने पति का सम्मान उसके सम्मान से बढ़कर होता है। उसे डर था कि कहीं उसे वह सब न सुनना पड़े जो वह कभी सुनना नहीं चाहती। "तुम्हें तो पता ही है कि मैं जयेश को पसंद नहीं करता, इसलिए मुझे उसके बारे में ज़्यादा कुछ नहीं पता, किन्तु संयोग देखो, अभी तुम्हारे पति के फैक्ट्री के बाहर से ही रिपोर्टिंग कर रहा हूँ," नवीन ने बताया। "क्यों? वहाँ क्या कर रहे हो?" तमन्ना ने बड़े ही हैरानी से पूछा। "तुम्हें नहीं पता! इस फैक्ट्री को बंद करवाने के लिए गाँव वाले आंदोलन कर रहे हैं," नवीन ने खुलासा किया। "लोग इस फैक्ट्री को बंद क्यों करवाना चाहते हैं?" तमन्ना ने पूछा। "इस फैक्ट्री की वजह से ग्राउंड वॉटर पूरी तरह से दूषित हो गया है, जिसे पी कर गाँव वाले बीमार पड़कर मर रहे हैं। उन्हें कोई मुआवज़ा भी नहीं मिलता," नवीन ने बताया। "कब से चल रहा है ये सब?" तमन्ना ने पूछा। "ये सब तो बरसों से चल रहा है, पर अब ग्राउंड वॉटर इतना गंदा हो चुका है कि लोग सिर्फ नदी के पानी पर निर्भर हैं और गर्मी में वहाँ भी पानी सूख जाता है," नवीन ने बताया। "इससे बचने का उपाय क्या है?" तमन्ना ने पूछा। "या तो पूरे फैक्ट्री को यहाँ से हटाकर समुद्र किनारे ले

जाया जाए, या पूरे गाँव वालों को यहाँ से हटाया जाए," नवीन की इस बात पर तमन्ना कुछ सोचने लगती है। "ठीक है नवीन, जैसा भी होगा मुझे बताते रहना और मुझे अपने पति के बारे में सब कुछ जानना है। पैसों की चिंता मत करना," तमन्ना ने कहा। "मुझे पता है पैसों की चिंता मुझे नहीं करनी पड़ेगी, पर अचानक तुम्हें अपने प्यारे जयेश के बारे में सब कुछ क्यों जानना है?" नवीन ने पूछा। "प्लीज नवीन, सवाल मत पूछो। अगर तुम मेरी मदद नहीं कर सकते तो बता दो," तमन्ना की आवाज़ की गंभीरता का मतलब नवीन समझ गया। "चिंता मत करो, मैं सब पता करके बता दूँगा हो सकता है इस बार तुम्हारी आँख खुल जाये," नवीन ने आश्वासन दिया। तमन्ना ने नवीन के इस कटाक्ष का कुछ जवाब नहीं दिया और फोन रख दिया।

नवीन ने एक राज्य-स्तरीय चैनल की नींव रखी, जिसकी पहुँच केबल टीवी से लेकर सोशल मीडिया तक थी। भीड़ में गुम हो जाने का डर उसे हमेशा ग्राउंड रिपोर्टिंग के लिए प्रेरित करता था। शुरुआती दौर में आमदनी कम थी, इसलिए वह कम-से-कम कर्मचारियों के साथ ही काम चला रहा था, हर चुनौती का सामना अकेले कर रहा था। तमन्ना से बात करने के बाद, उसने अपना माइक अपने असिस्टेंट को थमाया और खुद को कार की सीट पर धकेल दिया। उसे कुछ पल का एकांत चाहिए था। एक गहरी पीड़ा, एक पुराना घाव फिर से रिसने लगा था। उसकी आँखों के सामने अतीत के पन्ने खुलने लगे। कॉलेज का वो दिन... नवीन और उसके दोस्त रिजल्ट देखने के लिए भीड़ में धक्का-मुक्की कर रहे थे। कुछ दूरी पर, जयेश अपने बिगडैल साथियों के साथ खड़े होकर यह सब देख रहा था। नवीन पढ़ाई में हमेशा अव्वल था, पर उसकी आर्थिक स्थिति कमजोर थी। यह कड़वी सच्चाई उसके हौसले को कहीं-न-कहीं कमजोर कर देती थी। उसका सपना पत्रकार बनने का था, इसलिए इंजीनियरिंग की डिग्री होने के बावजूद उसने अपने जुनून को चुना। जैसे ही नवीन रिजल्ट देखकर पीछे मुड़ा, जयेश ने जान-बूझकर टाँग अड़ा दी। नवीन बुरी तरह गिर पड़ा। जयेश और उसके साथी ठहाके लगाकर उसका मज़ाक उड़ाने लगे। नवीन ने पलटकर कुछ नहीं कहा। उसने चुपचाप अपने कपड़े झाड़े और खामोशी से आगे बढ़ गया, जैसे उसने उस अपमान को अपनी ताकत बना लिया हो। उस दिन की चोट उसके दिल में एक टीस बनकर रह गई, जिसने उसे आज यहाँ तक पहुँचाया था।

कॉलेज के गलियारे में तमन्ना नवीन के पास आई। उसकी मुस्कान में एक सहजता थी, "नवीन, मुझे तुम्हारे नोट्स चाहिए, फोटोकॉपी करवा के वापस दे दूँगी। तुम्हें कोई परेशानी तो नहीं?" "नहीं, बिल्कुल नहीं," नवीन ने अपने बैग से नोट्स निकालते हुए कहा। "बस, इन्हें खोना मत।" ठीक उसी पल, जयेश की एंट्री हुई। उसके चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान थी। "क्या चल रहा है, तमन्ना?" तमन्ना थोड़ी हिचकिचाई, "बस, नवीन से नोट्स ले रही हूँ।" "अरे! तुम उसे क्यों परेशान कर रही हो? मैं तुम्हें सबसे बढ़िया नोट्स दिलाता हूँ।" जयेश ने उत्साह के साथ कहा। नवीन ने नोट्स निकाल लिए थे, और अब वह तमन्ना की तरफ देख रहा था। जयेश ने जोर देकर कहा, "सोच क्या रही हो? मेरे साथ चलो।" तमन्ना के चेहरे पर उदासी की एक लहर दौड़ गई। "नोट्स की ज़रूरत हुई तो मैं फिर कभी ले लूँगी," उसने धीरे

से कहा। नवीन ने चुपचाप नोट्स वापस बैग में रख लिए। "तो चले?" जयेश के सवाल पर तमन्ना ने बेमन से सिर हिलाया। वे दोनों चले गए और नवीन उन्हें तब तक देखता रहा, जब तक वे आँखों से ओझल नहीं हो गए। कुछ क्षण पहले जो खुशी का ज्वार उसके मन में उठा था, वह शांत हो चुका था। उसकी जगह एक गहरी टीस ने ले ली थी। आज भी नवीन को उस पल का अफ़सोस था। वह सोचता रहा, "उस दिन मैंने कुछ कहा क्यों नहीं? मैंने नोट्स तमन्ना के हाथों में क्यों नहीं रख दिए और कहता कि रख लो, अगर ज़रूरत पड़े तो देख लेना। मैं जयेश को जवाब क्यों नहीं दे पाया कि मेरे नोट्स इस साल के सिलेबस के हिसाब से हैं?" अगर मैंने कुछ किया होता, तो शायद बात आगे बढ़ सकती थी। जयेश के उस व्यवहार से तमन्ना समझ गई थी कि उनका मिलना जयेश को पसंद नहीं है। धीरे-धीरे, उसने नवीन से दूरी बना ली। नवीन इन्हीं चुभन भरी यादों में खोया था कि अचानक कार का शीशा ज़ोर से थपथपाया गया। उसका सहयोगी अंजना चिल्ला रही थी, "सर, जल्दी चलिए, हम लोग लेट हो रहे हैं!" अंजना के चेहरे की गंभीरता को देखकर नवीन तुरंत गाड़ी से बाहर निकला और रिपोर्टिंग की जगह, फैक्ट्री की ओर भागा।

सूरज अपने माता-पिता को खाना खिला रहा था। भोजन समाप्त कर अवधेश हाथ-मुँह धोकर बाहर जाने के लिए कपड़े पहनने लगे। सूरज बर्तन धोने बैठा था, पर अपने पिता को तैयार होते देख उसने बर्तन पटके और गुस्से में उनके सामने आ खड़ा हुआ। "आप इस हालत में कहाँ जा रहे हैं?" सूरज की आवाज़ में क्रोध और चिंता दोनों थी। उसे अंदाज़ा था कि उसके पिता कहाँ जा रहे हैं। अवधेश ने धीमे से कहा, "मुफ़्त में मरने से अच्छा है, लड़ते-लड़ते मरूँ।" उनकी आवाज़ में एक अजीब-सी शांति थी, जैसे वह जानते हों कि सूरज का गुस्सा उनके प्रति उसके गहरे प्रेम को छुपा रहा है। "मैं दिन-रात आपकी सेवा कर रहा हूँ ताकि आप स्वस्थ रहें, और आपको आंदोलन की पड़ी है! अगर आपकी तबीयत बिगड़ गई तो क्या ये आंदोलन वाले आपकी सेवा करेंगे?" सूरज चिढ़कर बोला। "यह आंदोलन मेरी, तुम्हारी, बल्कि हम सबकी ज़िंदगी से बढ़कर है। यह अगली पीढ़ी को बचाने की लड़ाई है, इसलिए हर किसी को इसमें बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए।" अवधेश ने अपने बेटे को समझाने की कोशिश की। "यही एक फैक्ट्री थी जिसके भरोसे मैं बैठा था कि मुझे काम मिल जाएगा, और अब पूरा गाँव इसे बंद करवाने पर तुला है," सूरज के शब्दों में निराशा झलक रही थी। "बेटा, इसने तो पूरे गाँव को बीमार कर दिया है। पानी, खेत सब ज़हरीले हो गए हैं, यह तुम्हें नहीं दिख रहा?" "सब दिख रहा है, पर सरकार कहीं और बसने के लिए ज़मीन तो दे रही है!" सूरज ने अपनी झुंझलाहट ज़ाहिर की। "कल को वहाँ भी यही समस्या हुई, तब क्या करोगे? भागना समाधान नहीं है, समस्या की जड़ को समझो। वे अपने कचरे को साफ़ करने को तैयार नहीं हैं, न ही फैक्ट्री को कहीं और ले जाने को। हमारे यहाँ से चले जाने से यहाँ का प्रदूषण कम नहीं होगा। यहाँ के पशु-पक्षी, पेड़-पौधे एक दिन मर जाएँगे, और यह जगह एक मरुस्थल बन जाएगी।" अवधेश ने धैर्य से समझाया। "ठीक है, आपको जो सही लगे वो कीजिए," कहकर सूरज वापस बर्तन धोने चला गया। उसके चेहरे पर निराशा की परछाई थी। पास ही बिस्तर पर पड़ी माला यह सब सुन रही थी। उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उसका शरीर जीर्ण-शीर्ण हो चुका था, हड्डियाँ इतनी कमज़ोर थीं कि ज़रा-सी चोट से टूट

सकती थीं। वह कुछ नहीं बोली। एक तरफ वह अपने पति की बात से सहमत थी, तो दूसरी तरफ उसे अपने बेटे के भविष्य की चिंता खाए जा रही थी।

जैसे ही अवधेश घर से निकले, कुछ और गाँव वाले उनके साथ हो लिए। थोड़ी दूर चलने पर उनका सामना गाँव के मुखिया पवन से हुआ। पवन अपने आदमियों के साथ गाँव वालों को आंदोलन वाली जगह पर जाने से रोक रहा था। सूरज के साथी भी वहीं फँसे हुए थे। "बाबू जी, आप ही बात कीजिए, नहीं तो आज फिर मार-पीट हो जाएगी," राहुल ने अवधेश से कहा। अवधेश गाँव वालों के बीच से आगे बढ़े। "रुक जाइए बाबू जी, कहाँ जा रहे हैं?" पवन ने धमकाते हुए कहा। अवधेश ने शांत भाव से समझाया, "बात को समझो, हमें पता है कि तुम्हारा बेटा उसी फैक्ट्री में काम करता है, पर गाँव में हर साल चार-पाँच लोग बीमार होकर मर जाते हैं। गाँव में लोग हमेशा बीमार रहते हैं। नौकरी तो कहीं और मिल जाएगी, पर अगर स्वास्थ्य चला गया तो कुछ नहीं बचेगा।" पवन को अवधेश की बातों से कोई फ़र्क नहीं पड़ा। "पीछे हटिए, घर जाइए! अरे, कोई आगे बढ़े तो लाठी से कूट दो!" पवन ने एक-दो आदमियों को धक्का देते हुए आदेश दिया। तभी गाड़ियों की आवाज़ सुनकर पवन ने पीछे देखा। मीडिया के कुछ वैन तेज़ी से उनकी तरफ आ रहे थे। मीडिया वैन को आता देख गाँव वाले ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे, जिससे पवन घबरा गया। मीडियाकर्मी वैन से उतरे और पवन की ओर भागे। "कैमरा चालू करो!" एक महिला पत्रकार चिल्लाई। "आप गाँव वालों को प्रदर्शन करने से क्यों रोक रहे हैं? पूरा देश आपको देख रहा है, जल्दी बताइए," नवीन ने पवन से सवाल किया। पवन अचानक इतने सारे पत्रकारों को देखकर हक्का-बक्का रह गया। "हम किसी को नहीं रोक रहे हैं, चलो यहाँ से!" वह अपने साथियों के साथ वहाँ से भाग गया। गाँव वाले जोश में भर गए और उन्होंने हुंकार भरी। वे खुशी से मीडियाकर्मियों के गले लग गए।

फैक्ट्री के पास बने मंच से एनजीओ 'पर्यावरण रक्षा दल' के अध्यक्ष योगेंद्र अपनी ओजस्वी आवाज़ से लोगों में जोश भर रहे थे। "आज या तो यह फैक्ट्री बंद होगी, या हम वापस नहीं जाएँगे! क्या आप लोग मेरे साथ हैं?" योगेंद्र के सवाल पर भीड़ ने ज़ोरदार समर्थन किया। आज गाँव वाले आर-पार की लड़ाई के तेवर में लाठियाँ लेकर आए थे। अवधेश भी गाँव वालों के साथ पंडाल में पहुँचे। "भाइयों! अपने सर पर कफ़न बाँध लो! सरकार आज और इसी वक्त फैक्ट्री बंद करे, या हम खुद इसे बंद कर देंगे!" भीड़ की गर्जना से पूरा इलाका गूँज उठा।

हर आंदोलन की तरह, यह भी अपने मूल उद्देश्य से भटकने लगा था। जो आंदोलन गाँव वालों ने अपने स्वास्थ्य और स्वच्छ जीवन के लिए शुरू किया था, वह धीरे-धीरे राजनीतिक अखाड़ा बन गया। विपक्षी पार्टियों ने गाँव वालों के भेष में इसमें खुलकर हिस्सा लिया, जिसकी वजह से सत्ताधारी दल ने इस आंदोलन से मुँह मोड़ लिया। आज आलम यह था कि गाँव वालों से ज़्यादा संख्या विपक्षी दल के कार्यकर्ताओं की थी। जयेश की सत्ता पक्ष से करीबी ने विपक्ष को इसमें शामिल होने के लिए उकसाया। उन्हें लगा कि अगर जयेश को

नुकसान होगा, तो सत्ता पक्ष को भी झटका लगेगा। गाँव के सीधे-सादे लोग इस राजनीतिक जालसाज़ी को समझ नहीं पाए और अपने सच्चे प्रयास को राजनीति का मोहरा बनने दिया। उन्हें तो बस दूषित पानी से छुटकारा और एक स्वस्थ जीवन चाहिए था। एक आम इंसान की ज़िंदगी हमेशा ऐसे ही मकड़जाल में उलझी रहती है। उसकी उड़ान में ऊँचाई नहीं होती, क्योंकि अगर वह ज़्यादा ऊँचा उड़ा, तो कोई बाज़ झपट्टा मारकर उसे गिरा देगा। योगेंद्र के भड़काऊ भाषण ने भीड़ में मानो पंख लगा दिए थे। उनके पास ऊर्जा तो थी, पर कोई रणनीति नहीं थी। भीड़ बेतरतीब ढंग से फैक्ट्री की तरफ बढ़ने लगी। वहाँ तैनात पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की, पर भीड़ ने बैरिकेड तोड़ना शुरू कर दिया। पुलिस ने बैक-अप के लिए कंट्रोल सेंटर को फ़ोन किया। अपने ऑफ़िस में काम करते हुए, जयेश को मुंशी जी का फ़ोन आया। "साहब, भीड़ बेकाबू हो रही है। वे फैक्ट्री में घुसना चाहते हैं। आप कुछ कीजिए!" "ठीक है, मैं कुछ करता हूँ," कहकर जयेश ने फ़ोन रखा। मुंशी जी हालात का जायज़ा लेने के लिए फैक्ट्री से बाहर निकले।

जयेश ने तुरंत मंत्री जवाहर को फ़ोन लगाया। "आज भीड़ बेकाबू हो गई है। कुछ करोगे या यूँ ही हाथ पर हाथ धरे बैठे रहोगे? या मैं अपने आदमियों को भेजूँ?"

"आप कुछ मत कीजिए। मैं पुलिस फ़ोर्स भेज रहा हूँ। इंस्पेक्टर प्रबल सब संभाल लेगा। आप दिमाग शांत रखिए," मंत्री ने कहा। "सोच लेना, अगर फैक्ट्री बंद हुई तो मैं तुम्हें कहीं का नहीं छोड़ूँगा।" "आप बहुत जल्दी गुस्सा हो जाते हैं।" जयेश ने गुस्से में फ़ोन रख दिया। फिर उसने राका को फ़ोन किया। "हैलो, राका?" "जी साहब, बोलिए।" "अगर कोई भी उपद्रवी फैक्ट्री के अंदर घुसने की कोशिश करता है, तो गोली चला देना। अपने सारे आदमियों को तैनात कर दो।" "मैं किसी को अंदर घुसने नहीं दूँगा। आप निश्चित रहिए।" जयेश ने फ़ोन रखा और कुर्सी पर बैठकर कुछ सोचने लगा। उसके चेहरे पर एक गहरी और खतरनाक चुप्पी थी।

भीड़ अब हिंसक ज्वाला बन चुकी थी। हर चेहरा, हर मुट्ठी मौत और मार-पीट पर उतारू थी। पुलिस के लगाए बैरिकेड्स को उखाड़कर फेंक दिया गया। पत्थर ऐसे बरस रहे थे जैसे आसमान से ओले गिर रहे हों, और पुलिस को पीछे हटना पड़ा। तभी, इंस्पेक्टर प्रबल अपनी बैक-अप टीम के साथ तूफ़ान की तरह पहुँचे। प्रबल लगभग छह फुट लंबा था, और उसकी चौड़ी छाती उसकी अद्भुत शारीरिक शक्ति को और भी उजागर करती थी। जब वह अपनी वर्दी पहनता, तो वह उसके मज़बूत कंधों और सुदृढ़ छाती पर एकदम सटीक बैठती, उसकी फौलादी भुजाएँ किसी भी चुनौती का सामना करने को तैयार दिखती थीं। उसकी चाल में शासन और अधिकार का अटूट आत्मविश्वास झलकता था, मानो हर कदम ज़मीन पर अपनी धाक जमा रहा हो। पुलिस की संख्या बढ़ते ही, उन्होंने भी एकजुट होकर पत्थरों से जवाब देना शुरू किया। भीड़ का एक हिस्सा फैक्ट्री की तरफ़ चीखते हुए बढ़ा। पुलिस ने उन्हें रोकने की कोशिश की, पर भीड़ का दूसरा हिस्सा उन पर भूखे भेड़ियों की तरह टूट पड़ा। भीड़ ने फैक्ट्री के दरवाज़े पर हमला बोल दिया। हथौड़ों की आवाज़ें गूँजने लगीं, जैसे वे लोहे के

दरवाज़े नहीं, बल्कि अपनी किस्मत का दरवाज़ा तोड़ रहे हों। प्रबल ने पुलिस को आगे बढ़ने का हुक्म दिया, लेकिन पुलिस टीम उस तूफ़ानी भीड़ के आगे बेबस खड़ी थी। लोग चींटियों की तरह गेट पर चढ़ गए, और चहारदीवारी का एक हिस्सा ढहा दिया गया। जैसे ही भीड़ अंदर घुसी, फैक्ट्री के कर्मचारी दहशत से काँप उठे। काम छोड़कर वे जान बचाने के लिए इधर-उधर छिपने लगे। यह देखकर प्रबल का खून खौल उठा। उसने हवाई फायरिंग का आदेश दिया। गोलियों की आवाज़ ने उस शोरगुल में एक पल की खामोशी ला दी। तभी, भीड़ में छिपे राका के आदमियों ने एक पुलिस कांस्टेबल को निशाना बनाया और उसकी छाती में गोली उतार दी। कांस्टेबल वहीं ढेर हो गया। फैक्ट्री के गेट पर चढ़े लोग और चहारदीवारी तोड़कर अंदर आए लोग वापस भागने लगे। राका इसी क्षण का इंतज़ार कर रहा था। जैसे ही पुलिस की हवाई फायरिंग थमी, राका और उसके आदमियों ने भागती हुई भीड़ पर ताबड़तोड़ गोलियाँ बरसानी शुरू कर दीं। भागती हुई भीड़ के पैरों तले अवधेश आ गए और गिर पड़े। लोग जान बचाने के लिए उनके शरीर पर से रौंदते हुए निकल गए। राका की गोलियों ने कई जिंदगियाँ छीन लीं। उधर, कांस्टेबल की मौत से भड़के प्रबल ने भी भागती हुई भीड़ पर निशाना साध दिया। भीड़ में आगे चल रहा सुधा का भाई गिरधर अचानक प्रबल के सामने आया। जैसे ही वह भागने के लिए मुड़ा, प्रबल ने उसकी पीठ पर सीधी गोली मार दी। गिरधर ज़मीन पर गिर पड़ा। पुलिस पीछे से गोली चलाती रही। भीड़ पागलों की तरह भाग रही थी, जिसे जो रास्ता मिला, वह उसी पर दौड़ पड़ा। कुछ ही मिनटों में राका अपने आदमियों के साथ वापस फैक्ट्री के अंदर चला गया। पूरा इलाका मौत के सन्नाटे में डूब गया। "रुक जाओ!" भीड़ के गायब होने के बाद प्रबल की आवाज़ उस खाली जगह में गूँजी। सभी पुलिसकर्मी एक-दूसरे को रोकने के लिए चिल्ला रहे थे। जब प्रबल अपने दल के साथ घटनास्थल पर वापस आए, तो वे सकते में थे। चारों तरफ लाशों का ढेर था।

प्रबल के पास उसका मुँहबोला हवलदार रघु आता है। "सर, क्या यह रायता कुछ ज़्यादा ही नहीं फैल गया?" हवलदार रघु ने आवाज़ धीमी करते हुए पूछा। प्रबल ने उसकी तरफ देखा, उसकी नज़रें किसी नुकीली छुरी की तरह थीं। "रायता? रघु, यह खून है। और इसे साफ़ करना मेरा काम है।" उसकी आवाज़ में कोई झिझक नहीं थी, केवल एक बेबाक आदेश था। "जाओ, सारी लाशों को गाड़ी में रखो।" प्रबल ने अपना हाथ उठाया, जैसे बातचीत ख़त्म हो चुकी हो, और अपनी गाड़ी की तरफ बढ़ गया। जहाँ कुछ देर पहले जोश, शोर और हिम्मत थी, वहाँ अब सिर्फ धूल, खून और मौत थी। लोगों से भरा मंच खाली था। पंडाल, जहाँ तालियाँ गूँजती थीं, अब वहाँ सिर्फ हवा में हिलते कपड़ों की सरसराहट की आवाज़ थी। मौत से सनी ये सरसराहट किसी के भी रौंगटे खड़े कर सकती थी। एक संघर्ष, जिसका अंत जीत या हार से होना था, वह अब सिर्फ लाशों की गिनती पर खत्म हो गया था।

जवाहर के घर में सन्नाटा था—एक ऐसा सन्नाटा जो आने वाले तूफ़ान से पहले की खामोशी से भी ज़्यादा भयावह था। जयेश, प्रबल और राका, तीनों के चेहरे पर शिकन की गहरी लकीरें थीं। तभी जवाहर ने रिमोट पर उंगली रखी और टीवी ऑन कर दिया। एंकर की आवाज़, जो किसी चाकू की तरह उस तनाव में घुस रही थी, घोषणा कर रही थी: "काँपर फैक्ट्री के बाहर हुए प्रदर्शन पर पुलिस की गोलीबारी में तेईस लोगों की मौत हो गई है।

सरकार ने गाँव वालों की सभी माँगें मानते हुए फैक्ट्री को तत्काल बंद करने का आदेश दे दिया है। विपक्षी दलों ने इस क्रूरता के खिलाफ़ राज्य भर में आंदोलन छेड़ने का ऐलान किया है। सरकार ने हर मृतक के परिवार को दस लाख और घायलों को पाँच लाख का मुआवज़ा देने की घोषणा की है।" जवाहर ने बेरुखी से टीवी बंद कर दिया। कमरे की हवा और भी ज़्यादा बोझिल हो गई। "क्या ज़रूरत थी अपने आदमियों से गोली चलवाने की?" जवाहर ने अपनी आवाज़ में एक अजीब-सी ठंडक घोलते हुए कहा, ताकि जयेश का गुस्सा भड़के नहीं। जयेश का चेहरा सुर्ख हो गया। उसकी मुट्टियाँ मेज़ पर कस गईं, जैसे वह किसी अदृश्य दुश्मन को कुचल रहा हो। "मैं उन गाँव वालों को नहीं छोड़ूँगा!" वह दहाड़ा। "उन्होंने मेरी फैक्ट्री बंद करवाई है। मैं उनका जीना हराम कर दूँगा!" जवाहर और प्रबल ने एक-दूसरे को देखा— एक शातिर, मौन समझौता। प्रबल ने जयेश को शांत करने की कोशिश की, "हम सब आपके साथ हैं, साहेब। इन गाँव वालों की हेकड़ी तो हम भी निकालेंगे, लेकिन अभी कुछ दिन आप शांत रहिए।" राका, जो पास ही एक परछाई की तरह खड़ा था, सारी गतिविधियों पर नज़र जमाए हुए था। जवाहर ने उसकी तरफ़ झल्लाकर देखा, "और तू राका! तुझे गोली चलाने का इतना शौक है? तू साहेब को समझा नहीं सकता था?" राका की आँखों में कोई अफ़सोस नहीं था, सिर्फ़ एक ठंडी, बेजान नज़र। "मैं वही करता हूँ जो साहेब का आदेश होता है," उसने कहा, जैसे वह एक मशीन हो। जवाहर के होंठों पर एक कुटिल मुस्कान उभरी। "बहुत बढ़िया! अब पोस्टमार्टम रिपोर्ट में सब साफ़ हो जाएगा कि कितनी लाशें पुलिस की गोलियों से गिरी हैं और कितनी तुम्हारी!" जयेश गुस्से से काँप उठा। "तुम कुछ करोगे भी? पाँच करोड़ का चंदा पार्टी फंड में लिया है और पच्चीस करोड़ तुम्हें मिनिस्टर बनाने में खर्च हुए हैं!" "मैं सब कुछ कर रहा हूँ," जवाहर ने राका की तरह ही शांत, पर ज़्यादा ज़हरीले अंदाज़ में जवाब दिया। "सारा इल्ज़ाम गाँव वालों पर ही डाला जाएगा। एक पुलिसवाला भी मारा गया है और प्रबल से कहकर हमने तीन को खुद घायल कर दिया है। पुलिस ने सिर्फ़ आत्मरक्षा में गोली चलाई, यही रिपोर्ट बनेगी। और तेईस नहीं, सिर्फ़ सत्रह मौतों का ही ऐलान हुआ है। अब और आपके लिए क्या करूँ?" जयेश ने अपनी जलती हुई आँखें जवाहर की आँखों में डालीं। "मैंने तुम पर पैसे सिर्फ़ नेता बनने के लिए नहीं लगाया था तुम अपने आप में एक सिस्टम बनो मुझे सिर्फ़ पावर नहीं चाहिए मुझे पूरा राजनितिक संरचना चाहिए, तुम सिर्फ़ प्लेयर मत बनो तुम नियम बनाने वाले बनो और जब तुम नियम बनाने वाले बनोगे तो तुम्हारे दुश्मन भी उसे मानेंगे," उसने धीरे से कहा, लेकिन हर शब्द एक आदेश था। "मेरी समझ में इतनी बड़ी बड़ी बातें कहाँ आती हैं।" जवाहर जल्द से जल्द इस बातचीत को खत्म करना चाहता था। "मैं इन गाँव वालों की अकड़ तोड़ने का इंतज़ाम करता हूँ। मैं अपना नाम ऐसा बना दूँगा कि सिर्फ़ मेरा नाम ही चेतावनी बन जाएगा। लोग मेरे खिलाफ़ बोलने से भी डरेंगे। मुझे समर्थक नहीं चाहिए, न ही प्रशंसा मुझे एक नयी परंपरा बनानी है।

"कुल तेईस लोग मारे गए थे—नौ गाँव के लोग और चौदह विपक्षी कार्यकर्ताओं के शव। गाँव वालों की सही संख्या घोषित हुई, लेकिन जिन कार्यकर्ताओं के शवों पर किसी ने दावा नहीं किया, उन्हें गिनती में शामिल ही नहीं किया गया। सरकार ने सिर्फ़ सत्रह लोगों के मारे

जाने की जानकारी दी। राजनीतिक नुक़सान के डर से विपक्षी पार्टियों ने अपने ही कार्यकर्ताओं के होने से इनकार कर दिया। जिन कार्यकर्ताओं ने अपने नेताओं के एक इशारे पर जान दाँव पर लगा दी थी, आज उनके नेता उन्हें पहचानने से भी इनकार कर रहे थे। ये वही कार्यकर्ता थे जिन्हें कभी कोई नेता नज़दीक आने पर थप्पड़ मार देता है, कोई मंच से धक्के देकर उतार देता है, और कोई 'गाड़ी चढ़ा दो' तक कह देता है—लेकिन फिर भी उनकी आँखों पर बंधी पट्टी नहीं खुलती। पूरे गाँव में सिर्फ़ चीख-पुकार और मातम की आवाज़ें गूँज रही थीं। आज किसी के घर में चूल्हा नहीं जला था। सुधा का भाई गिरधर और सूरज के पिता अवधेश, दोनों अब इस दुनिया में नहीं थे। नौ चिताएँ एक साथ जल रही थीं, उनकी आग में पूरा गाँव आक्रोश और दुख से जल रहा था। सूरज अपनी कमज़ोर माँ को थामे खड़ा था, जबकि सुधा अपने पिता से लिपटकर रो रही थी। पुलिस ने इन सबके अंतिम संस्कार की व्यवस्था की थी और पूरे गाँव को छावनी में बदल दिया गया था ताकि कोई और अप्रिय घटना न हो। घर वापस आते-आते अँधेरा छा गया। सुधा के पिता मुरारी जी अपने बेटे की हत्या से सदमे में थे। उनकी जुबान पर ताला लग गया था, बस आँखों से आँसू बह रहे थे। सूरज अपनी माँ की गोद में सिर रखकर रो रहा था। ऐसा लग रहा था मानो गाँव की सारी खुशियाँ एक ही दिन में ख़त्म हो गई हों। वह रात बहुत लंबी थी, और पूरा गाँव शोक में डूबा था। अगले दिन सूरज और उसके साथी गाँव के चौक पर बैठे थे। तभी, मुखिया पवन का बेटा राजू अपने साथियों के साथ वहाँ आया। उसने चार चाय का ऑर्डर दिया और सभी का उदास चेहरा देखकर समझाने के अंदाज़ में बोला, "मेरे पिताजी सबको रोक रहे थे, पर उनकी सुनता कौन है? सबको नेता बनना है, अब जोश ठंडा हो गया न?" राजू की यह बात सुनते ही राहुल और गोलू भड़क उठे, क्योंकि उन्हें भी पवन ने रोका था। "फैक्ट्री की दलाली मत कर! तेरा बाप फैक्ट्री मालिक का कुत्ता है!" राहुल चिल्लाया। गोलू, मुन्ना, और सुनील भी राहुल के साथ खड़े हो गए। "तेरी इतनी औकात कि तू मेरे बाप को कुत्ता बोले?" राजू गुस्से से तमतमा गया। "मारो सालों को!" राहुल और गोलू एक साथ राजू पर टूट पड़े। राजू के आदमियों ने उन्हें बचाने के लिए लाठियाँ उठाई और राहुल-गोलू को पीटने लगे। अपने दोस्तों को बचाने के लिए सूरज, मुन्ना और सुनील भी राजू के आदमियों पर हमलावर हो गए। राजू और उसके आदमियों को जमकर पीटा गया। अपना पलड़ा हल्का पड़ता देख राजू और उसके साथी दुम दबाकर वहाँ से भाग खड़े होते हैं। इस छोटी-सी झड़प ने एक बार फिर गाँव में दबे हुए गुस्से की चिंगारी को हवा दे दी थी।

पवन अपने घर के आँगन में बैठा अखबार पढ़ रहा था, उसके चेहरे पर एक कुटिल मुस्कान थी। "साहेब ने गाँव वालों का जोश ठंडा कर दिया," उसने इतराते हुए कहा। तभी राजू हाँफता हुआ आया। उसके साथ आए लड़कों के कपड़े फटे थे और उनके चेहरे पर चोट के निशान थे। पवन ने अखबार एक तरफ़ फेंका और घबराकर राजू की तरफ़ बढ़ा। "अरे! तुम सबकी ऐसी हालत किसने कर दी?" राजू हिचकिचाया, "सूरज और उसके साथियों के साथ बहस हो गई थी।"

"बहुत बढ़िया!" पवन का चेहरा गुस्से से लाल हो गया। "अपने बाप का नाम और डुबा दिया!" वह राजू के साथियों की तरफ बढ़ा और उन्हें पीटना शुरू कर दिया। "सालों, खा-खाकर भैंस हो गए हो और कुछ लौंडों से पिटकर आ गए?" पवन वापस अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गया। उसकी आँखों में बदले की आग जल रही थी। "सूरज और उसके साथियों का ऐसा इलाज करूँगा कि गाँव वालों की पुश्तें याद रखेंगी।" फिर उसने सोचा, "लेकिन अभी चुपचाप बैठना होगा, क्योंकि मीडिया की सहानुभूति उनके साथ है।" तभी एक नौकर पानी का गिलास लेकर आया। पवन ने एक घूँट पिया और तुरंत थूक दिया। "यह चापाकल का पानी है न?" उसकी आवाज़ में एक तेज़ गुस्सा था। "माफ़ करना मालिक, गलती हो गई। मुझे ध्यान ही नहीं रहा," नौकर गिड़गिड़ाया। पवन ने गुस्से में एक ज़ोरदार थप्पड़ रसीद कर दिया। "मैं जो पानी शहर से मंगवाता हूँ वो तू पिएगा और मुझे यहाँ का ज़हरीला पानी पिलाकर मार डालेगा? जा, जाकर दूसरा गिलास लेकर आ!" नौकर डर से काँपते हुए भागा। पवन झुंझलाकर अपनी कुर्सी पर वापस बैठ गया। "ये सब मिलकर मुझे पागल कर देंगे!" उसकी झुंझलाहट में अपनी हार का दर्द भी छिपा था।

नवीन ने तमन्ना को फोन मिलाया। "हैलो," तमन्ना की आवाज़ आई। "हैलो तमन्ना!" "क्या बात है?" "तुम्हें नहीं पता? तुम खबरें नहीं सुनती हो?" नवीन ने एक ही साँस में पूछा। "नहीं, मुझे पूजा-पाठ से ही फुर्सत नहीं मिलती। और जो थोड़ा-बहुत समय मिलता है, वो रोहन और घर के कामों में चला जाता है।" "रोहन कौन है?" नवीन की आवाज़ में एक अजीब-सी चुप्पी थी। "रोहन मेरा बेटा है, तीन महीने का है।" तमन्ना ने गर्व से कहा। नवीन कुछ पल के लिए चुप हो गया। फिर उसने एक ही साँस में पूरी बात कह डाली, जैसे कोई बोझ उतार रहा हो। "खबर सुनो। जयेश ने गाँव वालों को फैक्ट्री में घुसने से रोकने के लिए गोली चलवा दी, तेईस लोग मारे गए हैं। सरकार ने फैक्ट्री बंद करवा दी है।" "क्या कह रहे हो? मुझे यकीन नहीं हो रहा," तमन्ना की आवाज़ काँप गई। "यूट्यूब पर कोई लाइव न्यूज़ चैनल खोलकर देख लो। मुझे जाना होगा, इस घटना की वजह से काम बहुत बढ़ गया है। अगर कुछ और पता चला तो बताता हूँ।" "ठीक है, बाया।" "बाया।" नवीन ने फोन रखा और तमन्ना ने तुरंत यूट्यूब पर लाइव हिंदी न्यूज़ चैनल सर्च करना शुरू कर दिया। हर चैनल पर वही भयानक खबर चल रही थी। उसने अपना मुँह अपने पल्लू से दबा लिया और रोने लगी। "हे भगवान, ये क्या अनर्थ हो गया!" तभी दरवाज़े की घंटी बजी और जयेश घर आया। तमन्ना ने जल्दी से चेहरा धोया और उसके पास गई। "क्या बात है, तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ लग रहा है?" जयेश ने एक चौड़ी मुस्कान के साथ पूछा, जैसे आज उसके लिए सबसे खुशी का दिन हो। "कुछ नहीं, आज दिन में सो गई थी, तभी से ऐसा लग रहा है," तमन्ना ने बहाना बनाया। जयेश ने जेब से एक लिफ़ाफ़ा निकाला और उसे थमा दिया। "यह क्या है?" तमन्ना ने आश्चर्य से पूछा। "मेडिकल रिपोर्ट है। देख लो, कोई प्रॉब्लम नहीं है। शहर के सबसे बड़े हॉस्पिटल में पूरे शरीर का चेक-अप करवाया है। अब तो खुश हो?" जयेश ने इतराते हुए कहा। तमन्ना ने लिफ़ाफ़ा खोला और रिपोर्ट देखने लगी। जयेश चुपचाप खड़ा उसे गौर से देख रहा था। तमन्ना इस बात से अनजान, एक-एक पेज पलटकर देख रही थी। "कल भी देख सकती हो, तुम्हारे पास ही रहेगा," जयेश की आवाज़ सुनकर तमन्ना का ध्यान टूटा। "ओह, सॉरी!

चलिए, खाना खा लीजिए। आपका पसंदीदा खाना बना है।" उसने घबराकर कहा। तभी सबा रोहन को लेकर वहाँ आई। रोहन को देखकर जयेश बहुत खुश हुआ। "अले-अले, मेरा बेटा! दिनभर नानी को परेशान तो नहीं किया?" "बच्चों को पालने में कैसी परेशानी! मुझे तो इसके साथ बहुत सुकून मिलता है," सबा ने गर्व से कहा। "माँ जी, यह तो आपका बड़प्पन है।" "आप खाना खा लीजिए, फिर रोहन के साथ खेलना भी तो है।" तमन्ना के कहने पर सबा रोहन को अपनी गोद में ले लेती है और तमन्ना किचन की ओर चली जाती है। जयेश अपने कमरे में चला जाता है। किचन में पहुँचकर तमन्ना ने फिर से यूट्यूब चैनल खोला। उसने मोबाइल की आवाज़ बंद कर दी थी। स्क्रीन पर उसे एक साथ जलती हुई सामूहिक चिताएँ दिख रही थीं, जिनकी लपटें उसके मन में एक भयानक आग लगा रही थीं।

रात जयेश गहरी नींद में था, मानो दुनिया से बेखबर हो, पर तमन्ना की आँखों में नींद का नामोनिशान तक नहीं था। वह जयेश को देखती रही और उसका मन सवालियों से घिर गया—आखिर उसे इतनी शांति से नींद कैसे आ सकती है? रात भर वह करवटें बदलती रही, और देखते-देखते रात का एक-एक पल सुबह में ढल गया। तड़के तीन बजे, तमन्ना ने स्नान किया और सीधे पूजा घर में प्रवेश किया, जहाँ उसने पूरे भाव और श्रद्धा से श्रीकृष्ण की पूजा की, फिर माला लेकर जाप करने लगी। जैसे ही सूर्योदय हुआ, पूरा घर रोहन की चीखों से गूँज उठा। उस करुण क्रंदन को सुनकर तमन्ना भीतर तक हिल गई। सबा रोहन को गोद में लिए मंदिर के पास आई, और उसकी आवाज़ में एक उम्मीद थी, "लगता है, यह तुमसे ही चुप होगा।" तमन्ना ने कोई शब्द नहीं कहा, बस एक इशारा किया—एक ऐसा इशारा जो सबा को रोहन को बाहर ले जाने के लिए मजबूर कर गया। रोहन के रोने की आवाज़ सुनकर रसोई से नौकर भी दौड़कर आ गए। सबा नौकरों के साथ रोहन को लेकर बाहर चली गई। बाहर हर संभव कोशिश के बावजूद रोहन की चीखें शांत नहीं हुईं। हारकर सबा उसे वापस ले आई। रोहन की आवाज़ ने तमन्ना के मन को फिर से झकझोर दिया। उसने माला रखी, भगवान के सामने झुककर कहा, "हे प्रभु, मुझे माफ़ कर दीजिएगा।" वह तुरंत सबा के पास गई, रोहन को अपनी गोद में लिया और उसे लेकर सबा के कमरे में चली गई, जहाँ उसने उसे दूध पिलाना शुरू किया। सबा वहीं खड़ी देखती रही। दूध पीने के बाद भी रोहन की चीखें बंद नहीं हुईं, बल्कि और तेज हो गईं। "इसे डॉक्टर के पास ले चलते हैं, ज़रूर कोई बड़ी समस्या है," सबा ने चिंतित और घबराए हुए स्वर में कहा। तभी जयेश कमरे में दाखिल हुआ, और उसके मुँह से सवालियों की बौछार हो गई, "क्या हुआ? रोहन इतना क्यों रो रहा है?" "पता नहीं क्यों चुप नहीं हो रहा। कहीं पेट दर्द तो नहीं?" तमन्ना ने अपनी गहरी चिंता जताई। सबा के चेहरे पर निराशा और आश्चर्य था। उसने कहा, "मुझे नहीं लगता है पेट में दर्द है, मैं पेट को ठीक रखने के लिए सब कुछ कर रही हूँ।" जयेश ने घबराकर कहा, "अब देर मत करो, डॉक्टर के पास चलो।" "इतनी सुबह डॉक्टर कहाँ मिलेंगे?" तमन्ना की आवाज़ में भी घबराहट थी। "उनके घर पर चलते हैं!" जयेश ने रोहन को गोद में लिया और घर से बाहर निकल गया। तमन्ना और सबा भी बिना एक पल रुके उसके पीछे-पीछे चल दीं।

डॉक्टर अपने घर के कपड़ों में ही आराम से बैठे थे, और उनके सामने रोहन खुशी से खेल रहा था। "आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! अगर आप न होते तो हम कभी नहीं जान पाते कि इसके कान में दर्द है," जयेश ने कृतज्ञता से भरे स्वर में कहा। "बच्चा बार-बार अपने कान के पास हाथ ले जा रहा था, मुझे उसी से शक हुआ," डॉक्टर ने समझाते हुए कहा। "ठीक है, अब हम चलते हैं।" जयेश खड़ा हो गया। सब ने खेल रहे रोहन को गोद में उठा लिया। तमन्ना ने भी हाथ जोड़कर डॉक्टर का अभिवादन किया, और वे सब वहाँ से निकल गए।

सूरज और सुधा एक दूसरे से मिले। एक-दूसरे की आँखों में देखते ही उनकी दुनिया थम सी गई। "लगता है फैक्ट्री के साथ-साथ हमारी साँसें भी बंद हो गई हैं। पिताजी में तो अब प्राण ही नहीं रहे। वो बस जिए जा रहे हैं। भैया के जाने के बाद से वो पूजा पर भी ध्यान नहीं दे पाते," सुधा ने दर्द भरी आवाज़ में कहा, उसकी आँखें नम थीं। "माँ का भी यही हाल है। पिताजी के जाने के बाद से उन्होंने जीने की आस ही छोड़ दी है। खाना-पीना भी नहीं चाहती। इस हालात में वो कब तक बचेगी," सूरज की भी आँखें भरी थीं और आवाज़ में दर्द था। सुधा, सूरज से लिपटकर जोर-जोर से रोने लगी। दोनों कम उम्र में ही अपनों को खोने का दर्द झेल रहे थे। दर्द के साथ-साथ जिम्मेदारियों का बोझ भी दोनों के कंधों पर आ गया था। अपने भाई की जगह अब सुधा मंदिर के कामों में अपने पिता का हाथ बटाती है।

जयेश के लिए यह सुबह भी किसी आम दिन जैसी थी। उसने मुंशी जी और चंदन को काम समझाकर विदा किया। हमेशा की तरह तमन्ना उसे तिलक लगाने आई। जयेश के चेहरे पर एक बनावटी गंभीरता थी—एक ऐसा नक्राब जिसे तमन्ना अब पहचान चुकी थी। "एक बुरी खबर है," जयेश ने कहा। "क्या हो गया?" तमन्ना ने शांत भाव से पूछा, जैसे वह जयेश के अगले झूठ का इंतज़ार कर रही हो। "केंद्र सरकार ने हमारी फैक्ट्री बंद करवा दी है," जयेश ने मायूस होते हुए कहा, उसकी आवाज़ में झूठी निराशा थी। "लेकिन क्यों?" तमन्ना ने सीधे सवाल किया, उसकी आवाज़ में कोई भाव नहीं था। "ये सब विपक्षी दलों की साज़िश है। पर मैं रुकने वाला नहीं। मैं पूरी कोशिश करूँगा कि फैक्ट्री दोबारा चालू हो," जयेश ने दृढ़ता का झूठा प्रदर्शन किया। "घबराइए नहीं, आप ज़रूर सफल होंगे। मैं प्रभु से प्रार्थना करूँगी," तमन्ना ने जवाब दिया, उसके शब्दों में अब पहले जैसी भावना नहीं थी। "तुम क्यों चिंता करती हो? फैक्ट्री तो मेरे बिज़नेस का सिर्फ 20% है," जयेश ने माहौल हल्का करने की कोशिश की, जैसे यह कोई छोटी बात हो। "चलो, अब मुझे देर हो रही है।" उसने घड़ी देखी और जाने लगा। तमन्ना ने जयेश को तिलक लगाकर विदा किया। जैसे ही वह गाड़ी में बैठा, उसने तुरंत तिलक पोंछ दिया। जयेश को लगा कि तमन्ना को उसके झूठ की भनक तक नहीं लगी है, लेकिन उसे यह एहसास नहीं था कि तमन्ना की नज़रों में उसका पतन शुरू हो चुका था। तमन्ना इस सच्चाई के साथ जीने को मजबूर थी—एक ऐसी सच्चाई जहाँ पति-पत्नी के रिश्ते की डोर ढीली पड़ चुकी थी। जिस विश्वास की डोर को तमन्ना ने इतने प्यार से थाम रखा था, अब उस पर उसकी पकड़ कमज़ोर पड़ने लगी थी। जयेश के जाने के बाद, तमन्ना दरवाजे पर ही खड़ी रही। उसकी आँखें सड़क पर दूर होती गाड़ी को देखती रहीं, पर उसका मन कहीं और था। उसके अंदर एक तूफान उमड़ रहा था। जयेश ने जो झूठ बोला था, वह

सिर्फ एक फैक्ट्री के बंद होने का झूठ नहीं था, बल्कि उनके रिश्ते की नींव के पत्थर को एक नया आकार देने के लिए समय ने छेनी और हथौड़े से पहला प्रहार किया था। समय इस पत्थर को क्या आकर देगा ये तो समय ही बता सकता है।

रात की खामोशी में, सूरज और उसके साथी, राहुल, मुन्ना, सुनील और गोलू, निराशा के बोझ तले दबे बैठे थे। "इसका ज़िम्मेदार सिर्फ वो फैक्ट्री मालिक है," गोलू की आवाज़ में एक कड़वाहट थी। "क्या किसी ने उसे कभी देखा भी है?" राहुल ने उदास आँखों से पूछा। "अब हमें उसे ढूँढना ही होगा," मुन्ना ने अपनी आवाज़ में विश्वास भरते हुए कहा। "अपनी जान भी देनी पड़े तो भी मैं पीछे नहीं हटूंगा," सुनील ने एक सख्त लहजे में कहा। "सूरज, तुम खामोश क्यों हो?" राहुल ने आश्चर्य से पूछा। सूरज ने धीरे से कहा, "मैं यह सोच रहा हूँ कि इस लड़ाई को कहाँ से शुरू किया जाए? फैक्ट्री से? पुलिस से? उस मालिक से? या सरकार से?" "तुम करना क्या चाहते हो?" गोलू ने उत्सुकता से पूछा। सूरज अपनी जगह से उठा, उसकी आँखों में एक गहरी प्रतिज्ञा थी। "मैं उन्हें भी उसी पीड़ा का एहसास दिलाना चाहता हूँ जिससे हमारा गाँव गुज़र रहा है। और इसकी शुरुआत उस फैक्ट्री के विनाश से होगी। हम उसे राख कर देंगे।" राहुल ने धीरे से सूरज के पास आकर कहा, "फैक्ट्री और गाँव के हर रास्ते पर पुलिस का कड़ा पहरा है। तुम यह कैसे करोगे?" सूरज ने दूर देखते हुए कहा, "हम सही समय का इंतज़ार करेंगे। जैसे ही कोई छोटी-सी भी खिड़की खुलेगी... हम उस मौके का पूरा फायदा उठाएंगे।" उसकी आँखों में एक गुप्त योजना की चमक थी।

जवाहर का सरकारी बंगला। रात गहरा रही थी और लॉन में शराब का दौर चल रहा था। जयेश और जवाहर अपनी अकड़ में डूबे हुए थे कि तभी प्रबल आ धमका। "आओ, आओ! क्या खबर लाए हो?" जवाहर ने प्रबल को देखते ही ज़हरीली मुस्कान के साथ कहा। "जाँच रिपोर्ट आ गई है," प्रबल ने सीना फुलाते हुए कहा। "सारा इल्ज़ाम गाँववालों पर डाल दिया गया है। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट भी अपने हिसाब से बनवा ली है। अब कोई चिंता की बात नहीं।" उसकी आवाज़ में जीत का घमंड था। "अब तो खुश हो?" जवाहर ने जयेश की तरफ़ देखकर पूछा, जैसे किसी कठपुतली से बात कर रहा हो। जयेश ने अपना ग्लास ज़मीन पर पटका और कहा, "खुशी? मैं तब खुश होऊंगा जब इन भिखारियों को मिट्टी में मिला दूँगा। इनकी इतनी हिम्मत कैसे हुई कि हमसे आँखें मिलाएँ!" उसकी आँखों में एक पागलपन था। "दस दिन हो गए हैं। कोई न्यूज़ चैनल बात नहीं कर रहा, लोग भी भूलने लगे हैं," प्रबल ने मेज से नमकीन उठाते हुए कहा, जैसे यह कोई मामूली बात हो। "तो अब मौका है इनकी अकड़ तोड़ने का," जयेश ने कहा, उसके चेहरे पर एक क्रूर मुस्कान थी। "मैंने एक प्लान बनाया है। कल से उस पर काम शुरू करूँगा," प्रबल ने आत्मविश्वास से कहा। "हाँ, करो! इनकी वजह से मेरा नाम भी खराब हुआ है," जवाहर ने एक ही झटके में ग्लास खाली किया और मुँह बिगाड़ते हुए कहा।

जवाहर जैसे भ्रष्ट नेताओं को भी हम ही चुनते हैं। क्या हमेशा नेता ही दोषी होते हैं? क्या आम आदमी सही निर्णय लेने में सक्षम है? लोकतंत्र की वास्तविक चतुराई सत्ता के बंटवारे में नहीं, बल्कि उसे छुपाने में निहित है। तानाशाहों की तुलना में लोकतंत्र कहीं अधिक नरम, मानवीय और न्यायपूर्ण प्रतीत होता है, परंतु यही

वह सबसे बड़ा छलावा है जो सबसे बड़ा खतरा बनकर उभरता है। लोकतंत्र में नियंत्रण का आभास तक नहीं होता, और जो नियंत्रण अदृश्य हो, वही सर्वाधिक प्रभावी होता है। जनता के असंतोष को चुनाव याचिकाओं, विरोध प्रदर्शनों जैसे औपचारिक कार्यों की ओर मोड़ दिया जाता है, जो हमें भावनात्मक राहत प्रदान करते हैं। हमें लगता है कि हमारी बात सुनी गई, हम इसमें शामिल हैं, किंतु व्यवस्था यथावत बनी रहती है। लोकतंत्र वस्तुतः एक प्रतिस्पर्धी तानाशाही है। आपको लगता है कि आप व्यवस्था से संघर्ष कर रहे हैं, यदि आप किसी नेता को पराजित करते हैं, परंतु वास्तव में आप उसी व्यवस्था को सुदृढ़ कर रहे होते हैं—अपने विकल्पों को सीमित करके। लोकतंत्र आपको स्वयं पर शासन करने और सामूहिक निर्णय लेने का भ्रम देता है। आप अपने मन को यह सोचकर बहलाते हैं कि आपने ही नेता का चुनाव किया था। मानव मस्तिष्क इतनी जटिलताओं को पसंद नहीं करता; उसे सादगी और निश्चितता चाहिए, और यहीं से लोकतंत्र अपना प्रभाव खोने लगता है। लोकतंत्र आपको अत्यधिक विकल्प, ढेर सारी जानकारी और अनगिनत निर्णय देता है, जिससे व्यक्ति भ्रमित हो जाता है। उसे सच्चाई नहीं, बल्कि स्पष्ट उत्तर चाहिए होते हैं, और यहीं से मैदान में आता है वह जननायक, जो अपनी आस्तीनें समेटकर यह दावा करता है कि वह चुटकी बजाते ही आपकी सारी समस्याएँ दूर कर देगा। वह आपको बताएगा कि दोष किसका है। वह कहेगा, "आप मत सोचिए, आपकी जगह मैं सोचूंगा।" हम सोचने के बजाय प्रतिक्रिया देने लगते हैं, और जो भी हमें इस मानसिक थकावट से राहत देता है, हम उसकी ओर खिंचे चले जाते हैं। वेनेजुएला इसका नवीनतम उदाहरण है। ह्यूगो चावेज़ ने कहा कि वह सभी जटिलताओं का हल निकालेंगे, और जनता उनसे मानसिक रूप से जुड़ गई। वहाँ की जनता ने उन्हें भारी बहुमत से सत्ता सौंपी। जब तक जनता को यह समझ आया कि उन्होंने क्या खो दिया है, तब तक बहुत देर हो चुकी थी; वापसी असंभव थी। आज एक अमेरिकी डॉलर 1 करोड़ वेनेजुएला बोलिवर के बराबर है। वेनेजुएला के लोग अपना देश छोड़कर भाग रहे हैं और दुनिया भर में मजदूरी कर रहे हैं। लोकतंत्र को कोई बंदूक से समाप्त नहीं कर रहा है; लोग स्वयं अपने वोटों से, आरामदायक झूठ सुनते हुए, इसे समाप्त कर रहे हैं। जननायक के पास चुनाव जीतने के सभी दांव-पेच होते हैं, परंतु वे शासन चलाने में अक्षम होते हैं। चुनाव जीतने के गुण हैं आत्मविश्वास, आसान भाषा और भावनात्मक जुड़ाव, किंतु अच्छा शासन चलाने के लिए गहराई, संतुलन और जटिल समझ चाहिए, जो इन गुणों के विपरीत होती है। यह सच है कि राजनीति में आत्मविश्वास अक्सर ज्ञान से ऊपर निकल जाता है। विशेषज्ञ कभी भी किसी चीज़ को लेकर पूरी तरह से आश्वस्त नहीं होते, क्योंकि वे हर पहलू पर विचार करते हैं। लेकिन हमारा दिमाग अस्पष्टता पसंद नहीं करता। हमें सीधा और स्पष्ट जवाब चाहिए होता है, और यही कारण है कि हम उन "जननायकों" को चुन लेते हैं जो आत्मविश्वास से भरे दिखते हैं, भले ही उनके पास ठोस समाधान न हों। यह सिस्टम की गलती नहीं है; यही सिस्टम है। जो चीज़ सत्ता के लिए अच्छा हो इंसानों के लिए भी अच्छा हो। प्रजा को आज्ञादी से नहीं बल्कि व्यवस्था और उद्देश्य का दिखावा करके संतुष्ट रखा जाए। कमजोर नेता अपने से भी कमजोर लोगों को साथ रखते हैं। अयोग्यता पूरी संस्था में फैल जाती है। मौन सहमति स्वतंत्र सोच से आगे निकल जाती है। वफादारी योग्यता पर भारी पड़ जाती है। लोगों को सच्चाई नहीं चाहिए वो चाहिए जो सच्चा महसूस हो। सत्ता अपने आप में कुछ नहीं है ये कैसे इस्तेमाल की जाती है वो इसकी कीमत तय करता है। सम्मान पद को नहीं बल्कि उस व्यक्ति को मिलता है जो उसके भार के योग्य होता है। आज आपको वही दिखाया जाता है जो आप देखना चाहते हैं। हर इंसान की अपनी अलग सच्चाई होती है। आपको लग सकता है कि आप बहुत जागरूक हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि आपको पहले से कहीं ज़्यादा चालाकी से नियंत्रित किया जा रहा है। जो लोग चिंतित थे, उन्हें डरावनी बातें परोसी गईं; जो गर्व से भरे थे, उन्हें प्रशंसा मिली; और जो अकेले थे, उन्हें किसी समूह का हिस्सा होने का एहसास कराया गया। हर पक्ष अधूरे सच पर आधारित अपने अलग-अलग तथ्य देखता है। आपको लगता है कि आप ख़ास हैं, इसलिए तथ्य आपकी सोच को नहीं बदलते। सच्चाई शोर के नीचे दब गई है। जब अराजकता फैलती है, तो लोग उन्हें चुनते हैं जो कहते हैं, "मैं सब संभाल लूँगा" और हर चीज़ का वादा कर देते हैं। चुने हुए नेता संस्कृति और पहचान की बहसों में उलझे रहते हैं, लेकिन असली फ़ैसले उन अनचुने संस्थानों द्वारा लिए जाते हैं जहाँ तक आपकी कोई पहुँच नहीं है। आपको लगता है कि इस बार कुछ बदलेगा, और यही सिस्टम की चालाकी है। यह आपको यकीन दिला देती है कि आपकी गुलामी ही आपकी

आज़ादी है, और आज़ापालन ही आत्मनिर्णय है। तो समाधान क्या है? हमें बुद्धिमान और चरित्रवान नेता चुनने चाहिए। लेकिन यह कौन तय करेगा कि कौन बुद्धिमान है? क्या सत्ता उन्हें भ्रष्ट नहीं कर देगी? क्या वे आम लोगों से कट नहीं जाएंगे? लोकतंत्र हमें मानसिक आराम देता है, असली शक्ति नहीं। राजनीति से भागो मत, जागो और इसमें हिस्सा लो। लोकतंत्र से उम्मीद करना छोड़ दो, तभी इसका सही इस्तेमाल हो सकता है। जिन ताकतों ने वेनेजुएला को बर्बाद किया, वे हर देश में सक्रिय हैं। जननायक सच छिपाकर आपको लोकलुभावन वादे करके भ्रमित करेगा, लेकिन आपको सवाल पूछना है, सच जानना है। क्या ये स्थाई समाधान है? यह लड़ाई निराशा और उम्मीद की नहीं है; यह लड़ाई बेहोशी और जागरूकता के बीच

उधर, मंदिर के बाहर गाँव के लोग जमा थे। हर चेहरे पर दुःख और गुस्सा साफ़ दिख रहा था। सूरज और उसके साथी एक कोने में खड़े थे, उनकी मुट्ठियाँ भींची हुई थीं। सभी किसी का इंतज़ार कर रहे थे। तभी पवन अपने आदमियों के साथ डीएम को लेकर आया। "आइए सर, देखिए, सभी गाँववाले आ गए हैं," पवन ने चापलूसी करते हुए कहा। डीएम गाँववालों के पास गए। "मैं जानता हूँ कि पैसे से आपका दर्द कम नहीं हो सकता, लेकिन यह सरकार की तरफ से एक मदद है," उन्होंने दिखावटी सहानुभूति दिखाते हुए कहा। भीड़ के बीच से मुरारी जी हाथ जोड़कर आगे बढ़े। "आपका बहुत धन्यवाद, सर, पर हम यह मुआवज़ा नहीं लेंगे। हमें पैसा नहीं, इंसान चाहिए। जो जाँच हुई है, उससे किसी को सज़ा नहीं मिलेगी।" मुरारी जी की आवाज़ शांत थी, लेकिन उसमें चट्टान जैसा अटल इरादा था। "मैं आपका दर्द समझ सकता हूँ। मैं आपकी बात रिपोर्ट में लिख दूँगा," डीएम ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और जाने लगे। पवन और उसके आदमी पीछे-पीछे चले। "इन गाँववालों की गर्मी अभी शांत नहीं हुई है," पवन ने दांत निपोरते हुए डीएम से कहा। डीएम ने उसे घूरकर देखा। पवन की हँसी गायब हो गई और वह चुप हो गया। "अरे सूरज, तुम इसी से मिले थे न नौकरी के लिए?" राहुल ने अचानक सूरज से पूछा। "हाँ, आवेदन तो दिया था। पर कोई जवाब नहीं आया। लगता है राज्य या देश के लिए खेले बिना हमारी कोई पहचान नहीं," सूरज ने गहरी निराशा के साथ कहा, उसकी आँखों में दूर कहीं खोए हुए सपने थे।

आधी रात का सन्नाटा चीरते हुए, सूरज और उसके चार साथी फैक्ट्री के पिछले हिस्से की ओर बढ़ रहे थे। उनके चेहरे नकाबों में छिपे थे, लेकिन आँखों में एक ही जुनून जल रहा था। सूरज के हाथ में बुझी हुई मशाल थी, जबकि बाकी सभी ने 10-10 लीटर डीज़ल के कंटेनर संभाल रखे थे। "आवाज़ नहीं! आगे पुलिस है!" सूरज ने फुसफुसाकर कहा, उसकी आवाज़ हवा में एक कमान की तरह तनी हुई थी। चुपचाप, वे फैक्ट्री की विशाल चहारदीवारी के पास पहुँचे। "तुम सब यहीं रुको। मैं अंदर का जायज़ा लेकर आता हूँ," सूरज ने कानाफूसी की। बाकी सबने बस सिर हिलाकर उसकी बात मानी। सूरज ने अपने मजबूत जूते गोलू की पीठ पर रखे—उस गोलू की, जिसका 110 किलो का वजन शरीर ही उसे इतना सहारा दे सकता था। एक ही झटके में सूरज दीवार के ऊपर पहुँच गया। उसने एक डंडे से कंटीली तार को हटाया और एक परछाई की तरह अंदर कूद गया। वह दबे पाँव, घुटनों के बल आगे बढ़ा, उसकी साँसें भी शांत थीं। कुछ दूर उसे दो पुलिसवाले गश्त लगाते दिखे। सूरज तुरंत ज़मीन पर गिरकर घास में छिप गया, जैसे कोई शिकारी अपने शिकार का इंतज़ार कर रहा हो। जैसे ही वे पुलिसवाले आगे बढ़े, सूरज पेट के बल रेंगता हुआ आगे बढ़ा। ऊपर मचान पर बैठा एक

पुलिसवाला सर्चलाइट घुमा रहा था। सूरज उस रोशनी से बचते हुए आगे बढ़ता रहा, उसकी हर हरकत में एक खतरनाक चालाकी थी। किसी तरह वह फैक्ट्री की दीवार तक पहुँचा ही था कि दो पुलिसवाले वापस आ गए। उनकी नज़र सूरज पर पड़ी और हवा को चीरती हुई एक ज़ोरदार सीटी बज उठी। चारों तरफ़ से पुलिस फैक्ट्री के पिछले हिस्से की ओर दौड़ी। सूरज बिजली की तेज़ी से पलटा और दीवार की ओर भागा। उसके साथी भी डीज़ल के कंटेनर के साथ भागने लगे। सूरज ने दीवार पर एक पैर रखा और हवा में उछलकर दूसरी ओर कूद गया, जैसे कोई शिकार जाल से बच निकला हो। उसके दोस्त आगे-आगे भाग रहे थे और पुलिसवाले दीवार के पास आकर रुक गए। एक पुलिसवाले ने टूटे हुए तार पर टॉर्च की रोशनी डाली।

सूरज और उसके साथी तब तक भागते रहे जब तक वे एक सुनसान खेत में नहीं पहुँच गए। भाग-भागकर सबकी साँसें उखड़ गई थीं, लेकिन सबसे बुरा हाल गोलू का था—उसका भारी शरीर लंबी दौड़ के लिए नहीं बना था। "रुक जाओ! रुक जाओ!" गोलू हाँफते हुए ज़मीन पर गिर पड़ा। सभी रुक गए। "अब और नहीं... कोई नहीं आ रहा है," उसने ज़मीन पर लेटे हुए कहा। सभी थककर बैठ गए, उनका शरीर पसीने से भीगा था और मन डर से भरा था। "इसका क्या करना है?" मुन्ना ने हाँफते हुए पूछा, जैसे यह कोई बोझ हो। "इसको कहीं छुपा देते हैं।" सूरज ने तुरंत जवाब दिया, उसकी आवाज़ में थोड़ी झुंझलाहट थी। "अब आगे क्या?" गोलू ने पूछा। "सुबह चार बजे तक यहीं इंतज़ार करो। पुलिस की नज़रों से बचकर अपने गुप्त रास्ते से घर जाएँगे। उन्होंने बचपन में बागों से फल चुराए थे, खेतों से सब्ज़ियाँ चुराई थीं, घरों में घुसकर खाना बनाया था—ये सब उनकी शरारतें थीं। लेकिन पुलिस का सामना उन्होंने पहली बार किया था। कोई थककर लेटा था तो कोई बैठा था, लेकिन सभी के मन में भय और अनिश्चितता का एक काला बादल मंडरा रहा था। भविष्य की चिंता में डूबे हुए, वे सब चुपचाप घर जाने के लिए सुबह का इंतज़ार कर रहे थे, अपनी पहली बड़ी असफलता के बोझ तले दबे हुए।

अगली सुबह, सूरज और उसके साथियों ने बगीचे से होते हुए गाँव की ओर कदम बढ़ाए। उनकी चाल में एक बेचैनी थी, एक छिपा हुआ मकसद। जब सड़क पार करने का वक्त आया, तो सामने दो खाकी वर्दी वाले नज़र आए। "रुक," सूरज ने धीमी, सधी हुई आवाज़ में कहा। सभी एक छायादार कोने में छिप गए, पुलिसवालों के जाने का इंतज़ार करने लगे। जैसे ही रास्ता साफ़ हुआ, वे बिजली की तेज़ी से सड़क पार कर गाँव में दाखिल हो गए। घर पहुँचते ही, सूरज का सामना अपनी माँ, माला, के गुस्से से हुआ। "रात भर कहाँ था?" उनकी आवाज़ में एक तीखापन था। "बस आज खेत में ही सो गया था," सूरज ने बात टालने के इरादे से कहा। "तुम्हारे पिता को गए अभी कुछ ही दिन हुए हैं, और तुम बिना बताए गायब हो जाते हो! मेरी हालत के बारे में सोचा है तुमने?" माला का दर्द शब्दों में फूट पड़ा। सूरज के पास इसका कोई जवाब नहीं था। अपनी माँ का दर्द देख, सूरज के भीतर निराशा और दुःख का ऐसा बवंडर उठा जिसे शब्दों में बाँधना नामुमकिन था। वह चुपचाप अपने पिता की खाट पर जाकर बैठ गया। कानून से न्याय की उम्मीद तो कब की दम तोड़ चुकी थी। सूरज ने खुद

ही अपने पिता के कातिलों को सबक सिखाने की ठान ली थी, लेकिन आज की पहली विफलता ने उसे अंदर तक हिला दिया था। "मैं पिता के हत्यारों को नहीं छोड़ूँगा," कहते हुए उसकी आँखों से आँसू की कुछ बूँदें टपक पड़ीं। माला किसी तरह उठीं और सूरज के पास आकर बैठ गई। "इसके बाद या तो तुम जेल में सड़ोगे, या पुलिस तुम्हें भी मार डालेगी। दोनों ही रास्तों पर तुम्हारी ज़िंदगी बर्बाद हो जाएगी। बेटा, जो होना था, हो गया। अब आगे का सोचो। इस गाँव को छोड़ दो, यहाँ की मिट्टी अब बाँझ हो चुकी है। मैं किसी तरह अपनी ज़िंदगी काट लूँगी।" "इस मिट्टी को बाँझ मत कहो माँ," सूरज ने माँ की गोद में सिर रखते हुए कहा। "इस मिट्टी के गुनहगारों को सज़ा मिलनी ही चाहिए।" माला उसके सिर पर हाथ फेरने लगीं। "मैं तुम्हें छोड़कर कहीं नहीं जाऊँगा," सूरज ने लेटे-लेटे ही कहा। "मुझे इसी बात का डर है," माला की आँखों से आँसू सूरज के चेहरे पर गिरे। सूरज ने माँ के आँसू पोंछे और आँखें बंद कर लीं। दोनों के बीच कोई और बात नहीं हुई। वे दोनों अपने-अपने दुःख में इतने डूबे थे कि शब्द खामोश हो गए थे।

गाँव की नदी का किनारा, जहाँ धोबी अपने काम में डूबे थे, अचानक पुलिस की लाठियों से गूँज उठा। "साहेब! हम पर यह कहर क्यों?" एक धोबी ने खुद को बचाते हुए चीखकर पूछा। प्रबल की गर्जना ने माहौल में आतंक भर दिया, "सबको यहाँ इकट्ठा करो!" एक पल में सारे धोबी एक जगह जमा हो गए। प्रबल उनके सामने खड़ा होकर दहाड़ा, "तुम लोग जो यह पाउडर इस्तेमाल करते हो, क्या इसकी इज़ाज़त है?" "नहीं साहेब, हमने तो हमेशा से इसका इस्तेमाल किया है। आज तक कोई दिक्कत नहीं हुई। फिर आज अचानक यह सब क्यों?" एक धोबी ने साहस बटोरकर सवाल किया। प्रबल ने आगे बढ़कर उसे एक ज़ोरदार थप्पड़ मारा। "सवाल पूछता है? इसे पकड़ो और बाकियों को छोड़ दो। आज से कोई नदी को गंदा नहीं करेगा। समझे?" डर से सबने थरथराते हुए सिर हिलाया। "अब भागो!" सभी धोबी अपने कपड़े समेटकर भागे, लेकिन पुलिस ने एक धोबी को दबोच लिया और उसे खींचकर ले गई। जान बचाकर भागे धोबी सीधे सूरज के घर पहुँचे। "सूरज! सूरज!" वे बदहवास होकर चिल्लाए। सूरज बाहर आया। "क्या हुआ? चिल्ला क्यों रहे हो?" धोबियों ने रोते हुए अपनी आपबीती सुनाई। वे इस उम्मीद में आए थे कि कोई तो उनकी सुनेगा। "आप लोग घर जाइए," सूरज ने उन्हें दिलासा दिया, "मैं कुछ करने की कोशिश करता हूँ।" धोबी निराशा में डूबे हुए वहाँ से चले गए।

हमेशा की तरह, तमन्ना ने जयेश के माथे पर तिलक लगाया। जयेश ने तिलक पोंछा और गाड़ी में बैठने ही वाला था कि पवन हाथ जोड़े हुए सामने आ खड़ा हुआ। उसके साथ राका और रंजीत भी थे। "क्या बात है पवन, सुबह-सुबह?" जयेश ने पूछा। "मेरे बेटे राजू के पास कोई काम-धंधा नहीं है। आप तो बहुत लोगों को जानते हैं, उसे कहीं नौकरी दिला देते, तो बड़ी कृपा होती," पवन ने विनती की। जयेश के चेहरे पर गुस्सा साफ झलक रहा था। "मेरी करोड़ों की फैक्ट्री बंद हो गई और तुम्हें अपने बेटे की नौकरी की पड़ी है? तुमसे ये गाँववाले नहीं संभले। अगर शुरुआत में ही इन्हें कुचल दिया होता, तो यह नौबत नहीं आती।" "साहेब, मैंने हमेशा आपकी सेवा की है। मीडियावाले मेरे दरवाज़े तक पहुँच गए थे, मुझे गुनहगार

बनाने लगे। आपको भी पता है कि इसके पीछे क्या खेल हुआ है। मैं आगे भी आपके लिए जान लगा दूँगा, बस मेरे बेटे पर मेहरबानी बनाए रखिए," पवन ने एक बार फिर हाथ जोड़कर कहा। पवन की बात में सच्चाई थी, जिससे जयेश शांत हो गया। उसने कुछ देर सोचा, फिर बोला, "ठीक है, राका तुम्हारा काम करवा देगा।" "बहुत-बहुत शुक्रिया। एक बात और कहनी थी," पवन ने कहा। "हाँ बोलो।" "सूरज और उसके साथियों को ख़त्म करना होगा, नहीं तो वे आगे चलकर बहुत बड़ी परेशानी बन सकते हैं। मुझे तो लगता है कि कल रात फैक्ट्री में घुसने की कोशिश उन्हीं की थी।" "राका, उन सब की हर हरकत पर नज़र रखो। कब क्या करना है, मैं बताऊँगा।" "जैसी आपकी आज्ञा," पवन ने कृतज्ञता से सिर झुकाया। जयेश अपनी गाड़ी में बैठकर वहाँ से निकल गया, पीछे छोड़ गया एक गहरी होती साज़िश।

सूरज और उसके साथी थाने के दरवाजे पर पहुँचे, उनके अंदर एक अजीब सी हिम्मत थी। एक हवलदार ने उन्हें रोकते हुए पूछा, "कहाँ घुसे जा रहे हो?" सूरज ने विनम्रता के साथ कहा, "हम बतिघर गाँव से आए हैं। आपने झुन्ना धोबी को पकड़ा है, हमें उन्हें छोड़ाना है।" "अच्छा! तुम बतिघर से हो? चलो, सीधे फर्श पर बैठो!" हवलदार ने हुक्म दिया, और पाँचों बेबस होकर बैठ गए। इधर गाँव में, सुधा सूरज की माँ माला के पास थी, उनकी देखभाल कर रही थी। माला की चिंता बढ़ती जा रही थी, "बेटा सूरज को गए तीन घंटे हो गए, पता नहीं कब आएगा।" धीरे-धीरे गाँव के लोग सूरज के घर के बाहर जमा होने लगे। सुधा ने बाहर आकर पूछा, "आप सब यहाँ क्यों खड़े हैं?" एक महिला ने दृढ़ता से कहा, "जब तक सूरज नहीं आएगा, हम सब यहीं रहेंगे।" सुधा बेबस होकर वापस अंदर चली गई। उसने बुदबुदाते हुए कहा, "न जाने हमारे गाँव को किसकी नज़र लग गई है।"

थाने के फर्श पर चार घंटे बीत गए। सूरज और उसके साथी भूख प्यास से परेशान हो गए। सूरज से और नहीं रुका गया। वह उठा और हवलदार **रघु** के पास जाकर विनती करने लगा, "सर, हम चार घंटे से बैठे हैं, हमारी कोई सुन नहीं रहा।" तभी एक गूँजती हुई, भारी आवाज़ ने पूछा, "किससे बात करनी है?" सूरज पलटा। सामने प्रबल खड़ा था, और उसके पीछे चार हवलदार हाथों में लाठियाँ लिए खड़े थे। प्रबल ने एक इशारा किया, और हवलदार सूरज के दोस्तों पर कहर बनकर टूट पड़े। पूरा थाना चीखों से भर गया। "साहेब, इन्हें क्यों मार रहे हैं? ये सब बेगुनाह हैं!" सूरज हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा। "तो गुनहगार कौन है? तुम?" प्रबल क्रूरता से मुस्कराया। "अरे, इसे भी लाइन में बिठाओ।" एक हवलदार ने सूरज को कॉलर से पकड़ा और उसे उसके साथियों के साथ ज़मीन पर बिठा दिया। फिर शुरू हुई एक वहशी पिटाई, जो तब तक चलती रही जब तक हवलदार थककर चूर नहीं हो गए। "रुक जाओ!" प्रबल की आवाज़ गूँजी। उसने अपनी जेब से मोबाइल निकालकर एक वीडियो चलाया और सूरज के सामने बैठ गया। "ये तुम पाँचों ही हो न? पेट्रोल पंप पर डीज़ल खरीदने क्यों गए थे? हमें ये फुटेज सीसीटीवी से मिला है।" यह सुनकर पाँचों के चेहरे का रंग उड़ गया। सूरज ने खुद को संभाला, "हम तो मंदिर के जनरेटर के लिए डीज़ल लेने गए थे। गाँव में त्योहार था, इसलिए जनरेटर रात भर चला था।" "रात में फैक्ट्री में घुसने की

कोशिश तुम लोगों ने ही की थी न?" प्रबल ने अपनी रौबदार आवाज़ में पूछा। सूरज ने हैरानी से कहा, "आप यह क्या कह रहे हैं?" प्रबल हँसा, एक डरावनी हँसी। "तुम्हारी किस्मत अच्छी है कि मेरे पास कोई पुख्ता सबूत नहीं है। वैसे भी मैं तुम्हें उठाने वाला था, अच्छा हुआ तुम खुद यहाँ आ गए। अब आए हो तो हमारी मेहमान नवाज़ी का लुत्फ़ उठाओ।" "सर, जब सबूत नहीं है तो हमें क्यों पीट रहे हैं?" सूरज ने सवाल किया। प्रबल फिर ठहाका मारकर हँसा। "सबूत नहीं है, पर शक तो है न? क्या पता इस पिटाई से सच बाहर आ जाए। और अगर नहीं भी निकला, तो आगे कुछ करने से पहले ये दर्द तुम्हें हमेशा याद रहेगा। कूटो सालों को।" यह कहकर प्रबल चला गया, और हवलदार फिर से उन्हें बेरहमी से पीटने लगे। प्रबल के ठीक बगल में खड़ा रघु उसके कान में फुसफुसाया, "कुछ ज़्यादा नहीं हो रहा, सर?" प्रबल ने बिना कुछ कहे, अपनी गर्दन घुमाई और उसकी तरफ़ देखा। वह घूरना नहीं था, वह एक ठंडी और खाली निगाह थी जिसने रघु को तुरंत शांत कर दिया। उस निगाह में एक धमकी छुपी थी कि अगर एक और शब्द निकला, तो इसका अंजाम अच्छा नहीं होगा।

आधी रात को, पुलिस की जीप गाँव में आकर रुकी। उससे पाँच दोस्त लड़खड़ाते हुए उतरे। उनकी हालत देखकर पूरा गाँव सन्न रह गया। वे सब बुरी तरह से पिटे थे। गाँववालों ने उन्हें चारों ओर से घेर लिया। कोई कुछ नहीं बोला, बस एक धोबिन ने हिम्मत करके सूरज से पूछा, "मेरे पति कहाँ हैं?" सूरज ने दर्द से कराहते हुए कहा, "वो किसी को नहीं छोड़ेंगे... और अब हम भी किसी को नहीं छोड़ेंगे। अब छेड़ा है, तो छोड़ेंगे नहीं।" वह लँगड़ाते हुए अपने घर की ओर चला गया। उसकी बात सुनकर धोबिन हतप्रभ खड़ी रही, कुछ समझ नहीं पाई।

हमारे सभी फैसले डर की एक पतली चादर में लिपटे होते हैं। इस रात, सूरज के सामने दो रास्ते थे: या तो वह डर से आज़ाद होकर एक नए सवेरे को जन्म देता, या इसी डर के दलदल में हमेशा के लिए डूब जाता। प्रबल ने जिस पिटाई से इन्हें रोकना चाहा था, उसी ने उन्हें एक नई ताक़त दे दी। इस बर्बर मार ने उनके मन से पुलिस का डर हमेशा के लिए मिटा दिया। डर को मिटाने के लिए उसका सामना करना ज़रूरी होता है। आज तक जो सुना था, वह उन्होंने अपनी आँखों से देख लिया, और डर काफ़ूर हो गया। जन्म से पहले की कोई तकलीफ़ याद नहीं रहती, और मौत के बाद फिर कैसी तकलीफ़? इसे आप उनका नया जन्म कहें या एक नई मौत। अगर यह नया जन्म है, तो पुरानी पीड़ा मिट चुकी है। और अगर यह नई मौत है, तो अब खोने को बचा ही क्या है? हम क्या हैं? यह शरीर? या यह मन? एक नई मौत इसलिए, क्योंकि हम हर रोज़ थोड़ा-थोड़ा मरते हैं, पर हमें इसका एहसास नहीं होता। आज उस मौत का गहरा एहसास उनके मन पर हुआ है। शरीर के ज़ख्मों ने शरीर के मोह को तोड़ दिया। इस विकट परिस्थिति में उनका मन राख हो गया है। अब मन के होने या न होने का कोई फ़र्क़ नहीं बचा। सूरज के मन से शरीर या मन के टूटने का डर जाता रहा। जब कोई डर ही नहीं बचा, तो फ़ैसले से पहले कैसी सोच? कैसा विचार? डर तो इंसान को जड़ बना देता है, लेकिन बिना डर के इंसान सभी बंधनों से आज़ाद हो जाता है - यहाँ तक कि अपने परिवार और प्यार के बंधन से भी। यह अभय की घड़ी है। मृत्यु तो रहेगी, शरीर मरेगा, मन बदलेगा। लेकिन उनके भीतर कुछ छिपा है, जो सनातन है, शाश्वत है। आज उसका स्वाद

चखने का समय आ गया है। अब यह जीवन उनका अपना नहीं रहा। यह जीवन अब समर्पित कर दिया गया है। मगर किसे?

गाँव के खेत धुएँ के गुबार में घिर चुके थे, जहाँ किसान अंधाधुंध पराली जला रहे थे, मानो हर चिंगारी उनके भविष्य की चिंता को दर्शा रही हो। इसी घुटन भरे माहौल में, प्रबल अपने लगभग तीस पुलिसकर्मियों के दल के साथ एक उग्र तूफान की तरह आ धमका। उनकी उपस्थिति ने खेतों में फैले धुएँ से भी गहरा सन्नाटा खींच दिया। पुलिसवालों ने बिजली की तेज़ी से सभी किसानों को एक जगह समेटा, जैसे वे बेबस मोहरे हों। एक किसान ने हाथ जोड़कर, दबी आवाज़ में पूछा, "क्या हुआ साहब, आज सुबह-सुबह आप यहाँ?" प्रबल की आँखें क्रोध से दहक रही थीं, उसने गुराते हुए कहा, "तुम गँवारों को अक्ल नहीं है क्या? पराली जलाना दंडनीय अपराध है! इससे वायुमंडल ज़हर बन रहा है!" उसकी आवाज़ में अधिकार का नशा था।

पुलिस के आने की ख़बर जंगल की आग की तरह पूरे गाँव में फैल गई, हर घर में दहशत का मातम छा गया। ग्रामीणों में अनजान ख़तरे का भय घर कर गया; वे बौखलाहट में खेतों की ओर भागे, यह जानने के लिए कि कौन-सी नई मुसीबत उन्हें निगलने आ गई है। पुलिस ने तेज़ी से पकड़े गए किसानों को एक गाड़ी में ठूस दिया, तभी सूरज के नेतृत्व में गाँव वाले क्रोधित लहर की तरह वहाँ पहुँच गए। सूरज ने अपनी पूरी ताक़त से प्रबल की गाड़ी के बोनट पर एक ज़ोरदार मुक्का जड़ा, लोहे की चादर कराह उठी। यह सिर्फ़ एक बार नहीं, बल्कि विद्रोह की पहली ललकार थी। गाँव वालों ने भी पलक झपकते ही सभी गाड़ियों को घेरा डाल लिया। कुछ लोग अपने साथियों को छुड़ाने के लिए पुलिसवालों से भिड़ गए, माहौल में तनाव का ज़हर घुलने लगा। प्रबल अपनी कार से उतरकर सूरज के सामने सीना ताने खड़ा हो गया। उसकी आँखों में अमिट विश्वास था। "अपने लोगों से कहो कि चुपचाप निकल लें, वरना सबको काल-कोठरी में डाल दूँगा!" प्रबल ने गंभीरता से चेतावनी दी। सूरज ने पूरे ज़ोर से चीखकर जवाब दिया, "गाँव वालों को और मत छेड़ो, क्यों कि अब और छेड़ो तो छोड़ेंगे नहीं!" प्रबल ने भी अपने तेवर दिखाते हुए चिल्लाकर कहा, "पुलिस की पिटाई इतनी जल्दी भूल गए क्या? तुम्हारे साथ-साथ इन सबको उल्टा लटकाकर पीटना होगा, तभी तुम सबकी हेकड़ी निकलेगी!" भीड़ अब नियंत्रण से बाहर होती जा रही थी। एक-दो लोग पुलिस जीप से किसानों को बाहर खींचने लगे, माहौल में विस्फोटक ऊर्जा भर गई। प्रबल ने पिस्तौल निकालने के लिए हाथ बढ़ाया, पर सूरज ने पलक झपकते ही उसका हाथ दबोच लिया। तभी दो हवलदार चीते की फुर्ती से सूरज पर झपट पड़े। सूरज और हवलदारों के बीच ज़बरदस्त धक्का-मुक्की शुरू हो गई, पर प्रबल को हवाई फायरिंग करने का समय मिल ही गया। गोलियों की गगनभेदी आवाज़ से अधिकतर गाँव वाले डरकर भाग खड़े हुए, पर सूरज और उसके साथी चट्टान की तरह डटे रहे। "तुझे क्या मरने का शौक है?" प्रबल के इस सवाल पर सूरज का क्रोध सातवें आसमान पर पहुँच गया, और उसने आवेश में आकर प्रबल पर हमला कर दिया। दोनों में ज़बरदस्त हाथापाई शुरू हो गई, मानो दो शेर आमने-सामने आ गए हों। प्रबल ने बाकी पुलिसवालों को मध्यस्थता करने से रोका, और दोनों ऐसे गुथम-

गुत्था हो गए कि बाकी पुलिसवाले भी घबरा गए। सूरज को हावी होता देख, रघु ने सूरज के सिर पर पीछे से लाठी का वार किया। सूरज एक चीख के साथ ज़मीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। "क्या किया तूने!" प्रबल की आवाज़ एक दहाड़ की तरह गूँजी। उसकी आँखों में ज्वालामुखी फट पड़ा था। उसने पलक झपकते ही रघु के हाथ से लाठी झटकी और उसे एक तरफ फेंक दिया। "कुछ ज़्यादा हो रहा था," रघु ने डरे हुए लहजे में कहा, उसके चेहरे पर दीनता साफ़ झलक रही थी। प्रबल ने एक पल के लिए रघु को घूरा, उसकी आँखों से मानो अंगारे नहीं, बल्कि ज़हर बरस रहा था। उसने मुँह मोड़ा और बिना कुछ कहे अपनी गाड़ी की तरफ बढ़ गया, हर कदम एक तबाही का ऐलान कर रहा था। इसके बाद, पुलिस ने किसानों को घसीटकर गाड़ियों में भरा और वहाँ से निकल गई। पीछे छूट गया एक घायल सूरज, उसकी अधूरी लड़ाई, धुएँ से भरी हवा और अनसुलझे आक्रोश की चिंगारियाँ।

बेहोशी की हालत में सूरज को उसके घर लाया गया। उसके इर्द-गिर्द मित्रों और गाँववालों का एक सन्नाटा पसरा हुआ था। माँ की सिसकियाँ हवा में घुल रही थीं। सुधा उसके निस्तेज चेहरे पर पानी के छींटे मार रही थी। एक लंबी साँस के साथ सूरज ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं। उसकी जुबान पर पहला सवाल था, "पुलिस कहाँ है? कहाँ है पुलिस?" जैसे ही उसे बताया गया कि "वे सबको पकड़ कर ले गए," सूरज की आँखों से आँसुओं की बाढ़ फूट पड़ी। उसके होश में आते ही, गाँववाले एक-एक कर अपने घरों को लौटने लगे। बारह किसानों की गिरफ्तारी से पूरा गाँव शोक और आक्रोश से संतप्त था। सत्ता और व्यवस्था के सामने आम आदमी की बेबसी इस देश की नियति बन चुकी है। यह आज़ादी केवल उन चंद हाथों को नसीब हुई थी, जिन्हें अंग्रेज़ों ने विरासत में सत्ता और संपत्ति सौंपी थी। आम इंसान आज भी उसी भ्रष्ट सिस्टम के जाल में उलझा एक फँसा हुआ पक्षी है, जिसकी आज़ादी सिर्फ कागज़ों तक सीमित है।

दूसरी तरफ, तमन्ना तैयार हो रही थी। तभी, रोहन को गोद में लिए सब कमरे में दाखिल हुई। "कहाँ जा रही हो बेटी?" सब के सवाल में एक छिपी हुई आशंका थी। "रोहन के लिए कुछ कपड़े लेने जा रही हूँ, बस जल्दी लौट आऊँगी," तमन्ना ने रोहन को प्यार से दुलारते हुए कहा और तेज़ी से पर्स उठाकर कमरे से निकल गई। वह खुद गाड़ी चलाकर रवाना हो गई। सब की निगाहें उसे जाती हुई देख रही थीं; उनकी आँखों में अविश्वास की एक गहरी छाया थी, जैसे उन्हें तमन्ना के जवाब पर ज़रा भी यकीन न हो। तमन्ना एक मॉल के फूड प्लाजा में पहुँची, जहाँ नवीन पहले से उसकी राह देख रहा था। "ज़्यादा देर तो नहीं हुई?" तमन्ना ने आते ही सवाल दागा। "देर तो मैंने कर दी थी," नवीन की मुस्कान में एक अजीब सा भाव था। "बीती बातों को कुरेदने से अब क्या हासिल? सीधे मुद्दे पर आओ, फ़ोन पर भी तो बात हो सकती थी?" तमन्ना ने अपने चारों ओर नज़रें घुमाते हुए कहा। "फैक्ट्री बंद तो हो गई, पर पुलिस गाँववालों के पीछे हाथ धोकर पड़ी है। उन्हें पराली जलाने के मामूली इलज़ाम में गिरफ्तार किया गया है। मैं पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हूँ, पर मुझे गहरा शक है कि इसके पीछे जयेश का ही हाथ है," नवीन ने सोचते हुए कहा। "कहीं ये कॉलेज की पुरानी खुन्नस तो नहीं निकाल रहे हो, जो इतना बुरा बोल रहे हो?" तमन्ना ने हल्की-सी मुस्कान के साथ

तीखा वार किया। "मेरे पास खोने के लिए कुछ नहीं है," नवीन ने सपाट लहजे में कहा। "पर तुम्हें बहुत कुछ पाने की उम्मीद है," तमन्ना ने तंज कसा। "तुम मुझे गलत समझ रही हो।" "हो सकता है, पर यह मानना मुश्किल है कि सब कुछ जयेश के इशारे पर हो रहा है," तमन्ना ने अपनी बात पर ज़ोर दिया। "मुझे पता चला है कि मिनिस्टर जवाहर के घर जयेश का रोज़ आना-जाना है और इंस्पेक्टर प्रबल, जिसका इलाका बतिघर गाँव है, वह भी वहाँ अक्सर जाता है।" "संभव है, हो सकता है जयेश अपनी फैक्ट्री फिर से शुरू करवाने की कोशिश कर रहा हो," तमन्ना ने एक और दलील दी। "तो फिर तुम हर बात के लिए उसे कसूरवार क्यों ठहरा रहे हो? मैंने भी यूट्यूब पर देखा है कि विपक्षी पार्टियाँ भी इस आंदोलन का हिस्सा बन गई थीं। शायद इसीलिए जयेश सरकार की मदद चाहता हो।" तमन्ना की इन दलीलों ने नवीन को संतुष्ट तो नहीं किया, पर जब तक कोई ठोस सबूत न मिले, वह अब ज़ोर देना नहीं चाहता था। उसने बात का रुख मोड़ दिया, "घर में जयेश का व्यवहार कैसा है?" "उन्होंने बताया कि केंद्र सरकार ने उनकी फैक्ट्री बंद करवा दी। मुझसे वो काम की बातों का ज़िक्र तक नहीं करते। अगर तुम नहीं बताते, तो मुझे इस सच्चाई का कभी पता ही नहीं चलता।" "यह अच्छी बात है, परिवार को इन मुश्किलों से दूर ही रखना चाहिए। लेकिन तुम तो जयेश से पूछ सकती हो?" "मैंने आज तक नहीं पूछा, अब पूछना सही नहीं होगा। ठीक है, मैं चलती हूँ। आगे कोई भी जानकारी मिले तो बताते रहना।" "तुम चाय तो पी लो," नवीन ने अनुरोध किया। "चाय फिर कभी, मुझे देर हो जाएगी।" तमन्ना चली गई। नवीन उसे जाते हुए देखता रहा। लोग कहते हैं कि सच कभी नहीं बदलता, और यह बिल्कुल सही है। परंतु, सच कौन कह रहा है, यह उसके मायने ज़रूर बदल देता है, और इसकी वजह अक्सर वक्ता का निहित स्वार्थ होता है। नवीन कह तो सच रहा था, लेकिन उसका बीता हुआ कल इस सच की प्रामाणिकता को धूमिल कर रहा था। जिस शिद्दत से तमन्ना जयेश का बचाव कर रही थी, उससे यह स्पष्ट था कि उसे नवीन के इरादों पर शक था। उसे लगा कि यह नवीन की पुरानी ईर्ष्या और द्वेष का नतीजा है, जिससे वह जयेश को बदनाम करने की कोशिश कर रहा है। नवीन ने भी मन ही मन एक प्रण लिया कि अब जब तक कोई अकाट्य सबूत न मिल जाए, वह जयेश पर आरोप नहीं लगाएगा, क्योंकि वह जानता था कि ऐसा करने से तमन्ना की नज़रों में उसकी सारी विश्वसनीयता खत्म हो जाएगी।

तमन्ना गाड़ी चला रही है लेकिन उसके भीतर एक अलग ही अंधेरा उतर रहा था। नवीन की बातें उसके दिमाग में एक चुभती हुई हकीकत बनकर गूँज रही थीं। क्या जयेश सचमुच वैसा है? वही जयेश जिसने उसे कॉलेज में हर मुसीबत से बचाया? क्या नवीन की आँखें ईर्ष्या से भरी थीं, या वह एक ऐसे सच को दिखा रहा था जिसे तमन्ना ने देखना ही नहीं चाहा? सच और झूठ के बीच की रेखा इतनी धुंधली हो गई थी कि पहचानना मुश्किल था। उसके मन का एक हिस्सा डर से कह रहा था, 'अगर नवीन सच कह रहा हो तो?'

शाम के धुंधलके में, जवाहर के सरकारी आवास पर जयेश और प्रबल शराब के जाम छलका रहे थे। माहौल में सत्ता की गर्मी और क्रूरता का मिश्रण था। "प्रबल ने गाँववालों को अच्छा सबक सिखाया है," जवाहर ने अपनी व्हिस्की का ग्लास घुमाते हुए कहा, "इनकी ऐसी धुनाई

होगी कि अगली बार जब फैक्ट्री चालू होगी, तो ये चूँ भी नहीं करेंगे।" जयेश ने प्रबल की ओर देखा और पूछा, "यह सूरज कौन है?" "गाँव का लड़का है, जवानी के जोश में ज़्यादा उछल रहा है। आप कहाँ इन चींटियों के बारे में सोचकर अपना समय बर्बाद कर रहे हैं," प्रबल ने बादाम मुँह में डालते हुए बेफ़िक्री से कहा। "मैं ऐसा उपाय करना चाहता हूँ कि इनकी आने वाली सात पुश्तें भी मेरी फैक्ट्री की तरफ आँख उठाकर नहीं देखेंगी," जयेश ने एक घूँट भरते हुए कहा। "पूरे गाँव को मारने का विचार है क्या?" प्रबल ने ठहाका लगाया, और जवाहर भी हँस पड़ा। "मैं आपकी फैक्ट्री चालू करवा दूँगा, आप अब खून-खराबे के बारे में मत सोचो," जवाहर ने हँसते हुए कहा। "मेरा बस चले तो मैं एक-एक को अपने इन हाथों से खत्म कर दूँ," जयेश ने गुस्से से कहा। "पर आप अब इतना भी मत चलाइए कि मेरी कुर्सी ही चली जाए," जवाहर ने फिर मज़ाक किया। "मेरे पास एक आइडिया है," जयेश अचानक उठकर टहलने लगा। जवाहर ने अपनी गंभीरता दिखाते हुए कहा, "आपके आइडिया की वजह से ही यह मामला इतना आगे बढ़ गया। पहले आपने गाँववालों को पिटवाया, जिससे आंदोलन शुरू हुआ, और फिर गोली चलवा दी, जिससे बात इतनी बढ़ गई। आप रहने ही दीजिए, मैं और प्रबल संभाल लेंगे। हमें पता है कि इन्हें कैसे ठंडा रखना है।" जवाहर भी जयेश के इस आक्रामक रुख से परेशान था, क्योंकि अंत में उसे ही सब संभालना पड़ता था। "भाई, सुन तो लो। मैं किसी खून-खराबे की बात नहीं कर रहा। मुझे कुछ दिन पहले एक ऐसी बात पता चली जिस पर मुझे भी यकीन नहीं हुआ, पर मुझे एक अभूतपूर्व उपाय सूझा है," जयेश ने सोचते हुए कहा। प्रबल का धैर्य अब जवाब दे रहा था, "अब जल्दी बताइए भी, आप तो पहेलियाँ बुझाने लगे।" "वक्फ़ एक्ट का नाम सुना है?" जयेश ने पूछा। "हाँ, पता है न! मुस्लिम समाज इसमें अपनी संपत्ति दान करते हैं जिसका उपयोग उनके कल्याण के लिए होता है," जवाहर इस सवाल पर थोड़ा हैरान था। "इसके सेक्शन 40 के बारे में पता है?" जयेश ने जवाहर की व्यग्रता को और बढ़ा दिया। "इतना पढ़ा-लिखा होता तो नेता बनता? अभी कहीं वकालत करता," जवाहर अब चिढ़ गया था। "तुम, प्रबल? तुम्हें कुछ पता है?" जयेश ने मुस्कुराते हुए प्रबल से पूछा। "थोड़ा बहुत तो पता है ही, पर सेक्शन 40 क्या है, उतना नहीं पता," प्रबल ने आत्मविश्वास से कहा। जयेश अब कुर्सी के किनारे पर आगे झुककर बैठ गया ताकि वह समझा सके। "वक्फ़ अधिनियम, 1995 की धारा 40 के तहत वक्फ़ बोर्ड को यह तय करने का अधिकार दिया गया है कि कोई संपत्ति वक्फ़ संपत्ति है या नहीं और उसका फैसला अंतिम होता है। हाँ, उसे वक्फ़ ट्रिब्यूनल द्वारा चुनौती दी जा सकती है, और वो भी उस राज्य की राजधानी में, जो यहाँ से 200 किलोमीटर दूर है। इन जाहिलों की चप्पलें घिस जाएँगी। उस ट्रिब्यूनल में मुस्लिम समाज के ही लोग होते हैं, इसलिए फैसला हमेशा वक्फ़ बोर्ड के पक्ष में जाता है," जयेश ने दोनों हाथों के इशारे से समझाते हुए कहा। "और अगर कोई कोर्ट चला गया तो?" जवाहर ने आश्चर्य से पूछा। "पहले तो कोर्ट सुनेगा नहीं और हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट जाने की औकात इन गाँववालों की है नहीं," जयेश ने फिर समझाते हुए कहा। "तो आप कहना यह चाहते हैं कि इस गाँव को वक्फ़ बना दिया जाए? पर पूरा गाँव? वह कैसे होगा?" प्रबल ने धीरे से कहा, जैसे उसे जयेश की योजना समझ आने लगी हो। "वो सब तुम वक्फ़ बोर्ड पर छोड़ दो। वे कोई न कोई बहाना निकाल लेंगे," जयेश हँस पड़ा। "पर उस गाँव में तो एक भी मुस्लिम परिवार नहीं है?" जवाहर ने बड़े

ही आश्चर्य से पूछा। "भैया! कानून ऐसा है कि इस सब से कुछ फर्क नहीं पड़ता। एक बार वक्त्र बोर्ड ने बोल दिया तो बोल दिया। जहाँ उन्होंने उँगली रख दी, वो ज़मीन उनकी। हमारी सरकार ने कमाल का कानून बनाया है," जयेश ने ताली बजाते हुए कहा, मानो कोई लॉटरी लग गई हो। "आपने तो मेरा सारा नशा ही उतार दिया! ऐसा कानून कोई कैसे बना सकता है? सेक्शन 40 के बारे में मुझे तो पता भी नहीं है। संविधान में कोर्ट जाने का अधिकार तो सबके पास है," जवाहर हतप्रभ हो जाता है। "एक और मज़ेदार बात, संविधान में वक्त्र ट्रिब्यूनल बनाने का अधिकार सरकार के पास है ही नहीं, पर सरकार ने बना दिया," जयेश ने हँसते हुए कहा। "इतने साल से सुप्रीम कोर्ट आलू छील रहा है क्या? सब संविधान-संविधान करते हैं, यहाँ संविधान किधर घुस गया?" जवाहर इस कानून के बारे में जानकर थोड़ा असहज महसूस कर रहा था। "आज तो तुम बड़ा सत्य और अहिंसा के पुजारी बन रहे हो। ऐसे ब्रह्मचर्य के प्रयोग में लगे रहते हो," जयेश की इस बात पर सभी हँस पड़ते हैं। "उनकी बात निकलेगी तो सुबह हो जाएगी," प्रबल ने हँसते हुए कहा। "वो सब छोड़ो। अपने राज्य के वक्त्र बोर्ड के चेयरमैन मोइउद्दीन साहब हैं। मुझे उनसे जल्द मिलवाओ, मैं अपनी पूरी योजना समझाता हूँ।"

दिन भर की तपिश के बाद, शाम की ढलती रोशनी में गाँव के बाहरी खेतों में एक गहरा सन्नाटा पसरा था। सूरज अपने कुछ दोस्तों के साथ बैठा था; हाथ में देसी शराब के प्याले थे, पर सूरज अपने सामने रखे भुने हुए चने खा रहा था। "भाई सूरज, तू पीता तो है नहीं, पर हमारा सारा चखना चट कर जाता है!" रोहित ने चिढ़ते हुए कहा। "अगर खाऊँगा नहीं, तो सोचूँगा कैसे?" सूरज ने कुछ सोचते हुए जवाब दिया। गोलू ने नशे में धुत्त होकर कहा, "सोचकर क्या होगा? हमारी तो पूरी ज़िंदगी इसी बेबसी को सोचते हुए निकल जायेगी! गाँववालों को बेरहमी से पीटा गया, रिपोर्ट हमारे खिलाफ़ बना दी गई... और अब ये एक-एक करके हमारे लोगों को उठाकर ले जा रहे हैं।" उसकी आवाज़ में दर्द और लाचारी का मिश्रण था। सूरज ने अपने दोस्तों की तरफ़ देखा, उसकी आँखों में एक जलता हुआ लावा उबल रहा था। "अब यह लड़ाई सिर्फ़ फैक्ट्री के मालिक के खिलाफ़ नहीं, यह उस अंधी, बहरी और ज़ालिम व्यवस्था के खिलाफ़ है, जिसने हमारे ज़ख्मों पर नमक छिड़का है! जिसने निर्दोषों को जेल में ठूस दिया और जहाँ न्याय का कोई नामोनिशान नहीं है! आज मेरे सीने में जो आग लगी है, उससे मैं इस पूरी दुनिया को जलाकर राख कर दूँगा! अब चारों तरफ़ आग ही आग होगा।" मुन्ना ने एक सूखी हँसी के साथ कहा, "फैक्ट्री जलाने गए बस उसी में हड्डियाँ तुड़वाई, अब दुनिया जलाने निकलोगे तो राख होने में देर नहीं लगेगी।" मुन्ना के चेहरे पर डर की एक पतली परत चढ़ गई थी। इस बात पर सूरज की आँखें अंगारों-सी दहक उठीं। "मुन्ना, अभी इसी वक्त यहाँ से दफ़ा हो जा! बीमारी से घुटकर मरने से बेहतर है लड़कर मरें। मुझे अपने साथ सिर्फ़ वो लोग चाहिए, जिनकी रगों में खून नहीं, हिम्मत दौड़ती हो!" सूरज की आवाज़ में ज्वालामुखी-सा विस्फोट था। सभी दोस्त खड़े हो गए। राहुल और गोलू ने उसे शांत करने के लिए हाथ बढ़ाया। "शांत हो जा भाई! वो तो मज़ाक कर रहा था।" "मेरा यह मतलब नहीं था, सूरज," मुन्ना ने भी विनीत स्वर में कहा। सूरज शांत हो गया, फिर कुछ देर के लिए खामोश हो गया। सभी की निगाहें उसी पर टिकी थीं। एक पल की खामोशी के बाद

सूरज ने कहा, "धृतराष्ट्र की आँखें अंधी थीं, पर उनका अंतर्मन जागा हुआ था। मगर आज की यह अधर्मी कानून-व्यवस्था तो चेतना और विवेक दोनों से अंधी हो चुकी है। कुरुक्षेत्र में धर्म वहाँ था, जहाँ श्रीकृष्ण थे, और आज भी धर्म हमारे साथ है, क्योंकि हमारा कन्हैया हमारे साथ है। न्याय का तराजू अगर झुक जाए, तो धर्म का शस्त्र उठाना ही पड़ता है। शत्रु हो या समस्या, लड़ने से पहले यह पता होना चाहिए कि हम उसमें घुस तो जाएँगे, पर निकलेंगे भी या नहीं। हमें अपने दुश्मन की रग-रग का पता होना चाहिए। अगर आप सही हैं, तब भी आपको युद्ध करना पड़ता है। इसलिए मैं अपने शत्रुओं की एक-एक चाल का पता लगाऊँगा। क्या तुम सब मेरे साथ हो?" सूरज के सवाल के बाद, हवा में एक गहरा सन्नाटा छा गया। जवाब में सिर्फ दोस्तों की साँसों की आवाज़ थी। उसने अपनी आँखें घुमाकर सबको देखा। उसकी आवाज़ में एक अबूझ दृढ़ता थी। "अगर तुम्हारी हिम्मत जवाब दे गई है, तो कोई बात नहीं। मैं यह आग अकेला ही सुलगाऊँगा।" सूरज की आँखों में अकेले लड़ने का संकल्प आग की तरह जल रहा था। राहुल की आवाज़ में बेबसी की कड़वाहट थी। उसने धीरे से कहा, "और अगर हम पकड़े गए... तो बाकी की ज़िंदगी जेल की चारदीवारी में सड़ती रहेगी।" सूरज ने उसकी आँखों में देखा। "यह सिर्फ हमारी लड़ाई नहीं रहेगी! यह इतनी बड़ी आग बनेगी कि इसकी लपटें पूरे देश की निगाहों को अपनी ओर खींचेंगी। जब देश की नज़र हम पर होगी, तो सत्ता की हिम्मत नहीं होगी कि वे हमारी ज़मीन पर हाथ डालें।" उसकी आवाज़ में गर्जना थी। "अन्याय के सामने सिर झुकाना, अन्याय से भी बड़ा अपराध है। कृष्ण का संदेश है कि जब धर्म संकट में हो, तो शस्त्र उठाना ही हमारा परम कर्तव्य है। कानून की तराजू में हम गलत हो सकते हैं, पर धर्म की दृष्टि में हमारा यह संघर्ष ही हमारी अंतिम सच्चाई है।" उसने अपनी बात को और तीखा किया। "हज़ारों सालों से हमारी रक्षा किसी कानून ने नहीं, हमारे धर्म ने की है! यह कानून और राज्य सिर्फ घाव पर बँधे हुए मुआवज़े की पट्टी हैं। ये तुम्हारी बर्बादी के बाद तुम्हारे दरवाज़े पर पहुँचेंगे, पर ये कभी उस सवाल का जवाब नहीं देंगे: 'आखिर यह बर्बादी हुई ही क्यों?' सूरज के शब्द मुन्ना की आत्मा में तीर की तरह उतर गए। "हमारी यह गलती नहीं कि हमें स्कूल में शस्त्र या शास्त्र का सही ज्ञान नहीं दिया गया। दरअसल, हमारी शिक्षा व्यवस्था का खाका ही उद्योगपतियों ने तैयार किया है। उन्हें ऐसे लोग चाहिए थे जो समय पर आएँ, आदेशों का पालन करें, ऊँच-नीच को स्वीकारें और सवाल न पूछें। उनका उद्देश्य स्पष्ट था: एक छोटा समूह उच्च शिक्षा प्राप्त करे, जबकि अधिकांश लोग केवल मेहनत-मजदूरी का काम करें। यह स्कूल ढाँचा और इसके नियम हमारी सोचने की आज़ादी को सीमित कर देते हैं। इस व्यवस्था को बच्चों के विकास की ज़रूरतों या उनकी सीखने की क्षमता को ध्यान में रखकर बनाया ही नहीं गया। हमें बिना किसी ठोस वजह के नियमों का पालन करना सिखाया जाता है। हमारा महत्व दूसरों की राय पर निर्भर करने लगता है। आँखें तो सभी के पास होती हैं, पर सच को छूने की हिम्मत कुछ ही लोग कर पाते हैं। हमें इनाम और सज़ा की व्यवस्था से नियंत्रित किया जाता है, जिसके चलते हम केवल अपने तात्कालिक लाभ के लिए काम करने लगते हैं और जीवन का असली मकसद तथा अपनी जिम्मेदारियाँ भूल जाते हैं। विषयों को ऐसे छोटे-छोटे टुकड़ों में बाँट दिया गया है कि बच्चे किसी भी पैटर्न को समझ ही नहीं पाते। ऐसा बिखरा हुआ ज्ञान लोगों को मानसिक रूप से कमज़ोर बना देता है। प्रतिस्पर्धा भी बच्चों में गहरा डर पैदा करती

है – असफल होने का डर। गलतियाँ करने पर हमें शर्म महसूस होती है, जबकि स्कूल का काम हमें हिम्मत देना और जोखिम लेने की क्षमता विकसित करना होना चाहिए था। यह एक कटु सत्य है कि शेर खुद को जाल से नहीं बचा सकता और लोमड़ी खुद को भेड़ियों से नहीं बचा सकती। हमें इंसान के रूप में लोमड़ी की तरह जाल को पहचानना आना चाहिए और शेर की तरह भेड़ियों को डराना भी आना चाहिए। जो लोग दिखावे से आगे बढ़कर चीज़ों को परख सकते हैं, वही वास्तविक बदलाव ला सकते हैं। हमारी सारी शक्ति हमारी सोच पर निर्भर करती है। इस लिए सोच बदल कर ही हम आगे बढ़ सकते हैं।" मुन्ना के चेहरे पर पसरा डर चूर-चूर हो गया। "तुम्हारी हर बात सही है, सूरज... मैं तुम्हारे साथ हूँ," उसने एक टूटी हुई आवाज़ में कहा। मुन्ना ने बिना एक भी पल सोचे, आगे बढ़कर सूरज का हाथ थाम लिया। उसके बाद, एक-एक करके सभी दोस्त उठ खड़े हुए और अपने हाथ आगे बढ़ाए। उनके हाथों का मिलना सिर्फ एक साथ जुड़ना नहीं था, यह खून से लिखी गई बगावत की एक शपथ थी।

शाम ढल चुकी थी। जवाहर के सरकारी आवास की हवा में एक अघोषित साज़िश की बू थी। मोइउद्दीन अपनी रौबदार आँखों में सुरमा नहीं, बल्कि एक असीम गुरुर लिए बैठे थे। उनकी हर हरकत में एक अजीब-सी ठंडक थी। उनके साथ दो खामोश, मजबूत कद-काठी के अफगानी आदमी साये की तरह खड़े थे। जवाहर ने अपना ग्लास ज़ोर से मेज़ पर रखा। "मेरी समझ नहीं आता, मोइउद्दीन साहब... इतना खतरनाक कानून बना कैसे? क्या किसी ने इसे पढ़ा नहीं था?" उसकी आवाज़ में हैबत थी। मोइउद्दीन के चेहरे पर एक पल की भी झिझक नहीं आई। उसने सीधे जयेश की तरफ देखा। "कानून का सवाल बाद में, पहले काम बताइए।" जयेश ने बिना पलक झपकाए आदेश दिया। "एक पूरा गाँव। उसे वक्फ़ संपत्ति घोषित कर, उन लोगों को उनकी ही ज़मीन से जड़ से उखाड़ फेंकना है।" मोइउद्दीन ने आँखें झुकाई और एक ही शब्द में फैसला सुनाया: "हो जाएगा।" उनकी आवाज़ में न कोई सवाल था, न कोई संदेह। "बहुत बढ़िया!" जयेश खुशी से चिल्लाया। जवाहर की उलझन बढ़ गई। "पर... होगा कैसे?" मोइउद्दीन ने बहुत ही शांत स्वर में समझाया, "सेक्शन 40 में हमें अधिकार है कि हम किसी भी ज़मीन का सर्वे कर उसे अपनी संपत्ति घोषित कर सकते हैं, और इस सर्वे का खर्च भी राज्य सरकार उठाएगी। हमें किसी को नोटिस देने या सबूत पेश करने की ज़रूरत नहीं है। हमारा सर्वे का फैसला ही खुदा की कलम से लिखी गई तक्रदीर है। एक बार यह रजिस्टर में चढ़ गया, तो वह ज़मीन हमेशा के लिए हमारी हो गई।" "और कोर्ट? कोर्ट क्या करेगा?" जवाहर का मुँह खुला रह गया। मोइउद्दीन मुस्कुराया। "यहाँ कोर्ट का राज नहीं चलता! सिविल कोर्ट को इसमें दखल देने का अधिकार ही नहीं है! ज़मीन के मालिक को हमारे दरवाज़े पर ही घुटने टेकने आना होगा... और जब वे हमारे खिलाफ़ केस लेकर हमारे ही पास आएँगे, तो फैसला किसके हक़ में जाएगा?" जवाहर ने अपना सिर पकड़ा। "ग़ज़ब का खेल है... 303 दिमागों ने 3 साल घिसे तब जाकर संविधान बना, पर इस एक कानून की ताकत तो उससे कहीं ऊपर है।" मोइउद्दीन ने मुस्कुराते हुए ग्लास उठाया, जैसे कोई विजेता बोल रहा हो। "वक्फ़ बोर्ड के हरेक सदस्य को पब्लिक सर्वेंट का दर्ज़ा हासिल है। इसका मतलब है कि हमें कोई हाथ नहीं लगा सकता। इतना ही नहीं, हम सीधे डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट

को यह आदेश दे सकते हैं कि हमारी चिन्हित ज़मीन को खाली करवाकर हमें सौंप दें।" उसने आगे कहा, "जहाँ भी कभी 'दारुल खिलाफा' यानी इस्लामिक शासन रहा है, वह सारी ज़मीन वापस लेने का हमें अधिकार है... वो सब वक्फ़ संपत्ति है।" जवाहर हतप्रभ था। "पर यह हिंदू पर कैसे लागू हो सकता है? आपके कानून में तो आप खुद की संपत्ति ही वक्फ़ कर सकते हैं?" मोइउद्दीन ने एक ठंडी मुस्कान के साथ जवाब दिया। "सारी जमीन तो अल्लाह और उनके बन्दों की है, असल खेल 2010 में हुआ, जब सुप्रीम कोर्ट ने 'पर्सन इंटरेस्टेड' (Person Interested) की व्याख्या की, जिससे हिंदू इस कानून के दायरे से बाहर हो गए। लेकिन हमारी सरकार ने समझदारी दिखाई। 2013 में एक संशोधन बिल आया, जिसने 'पर्सन इंटरेस्टेड' को बदलकर 'पर्सन एग्रीव्ड' (Person Aggrieved) कर दिया। इससे क्या हुआ? वापस हिंदू इस कानून की जद में आ गए।" "पर क्या ऐसा कानून देश के लिए अच्छा है?" जवाहर ने पूछ ही लिया। मोइउद्दीन की आवाज़ में धमकी की एक धार थी। "क्या आप सेक्युलरिज़्म के सिद्धांत भूल गए? या आप अल्पसंख्यक विरोधी हैं? क्या आपको हमारा वोट नहीं चाहिए?" जवाहर का चेहरा फीका पड़ गया। "नहीं-नहीं, आप गलत समझ रहे हैं, मैं तो आपके साथ हूँ। मेरा चुनाव क्षेत्र है, इसलिए बस सोचना पड़ता है।" जयेश ने घृणा से कहा, "आज बड़ा सत्य और अहिंसा का पुजारी बन रहा है ऐसे ब्रह्मचर्य के प्रयोग में लगा रहता है।" जवाहर ने अपनी साँस रोककर ग्लास एक ही घूँट में खाली किया। उसके चेहरे पर हार की स्याही पुत गई थी। "अब... कोई सवाल नहीं," उसने टूटी हुई आवाज़ में कहा। मोइउद्दीन अपने अफगानी सायों के साथ उठा। "बहुत जल्द खुशखबरी दूँगा," उसकी मुस्कान में जीत की चमक नहीं, बल्कि एक शैतानी आत्मविश्वास था।